ॐ नमः शिवाय ॐ

शनि महिमा ग्रंथ

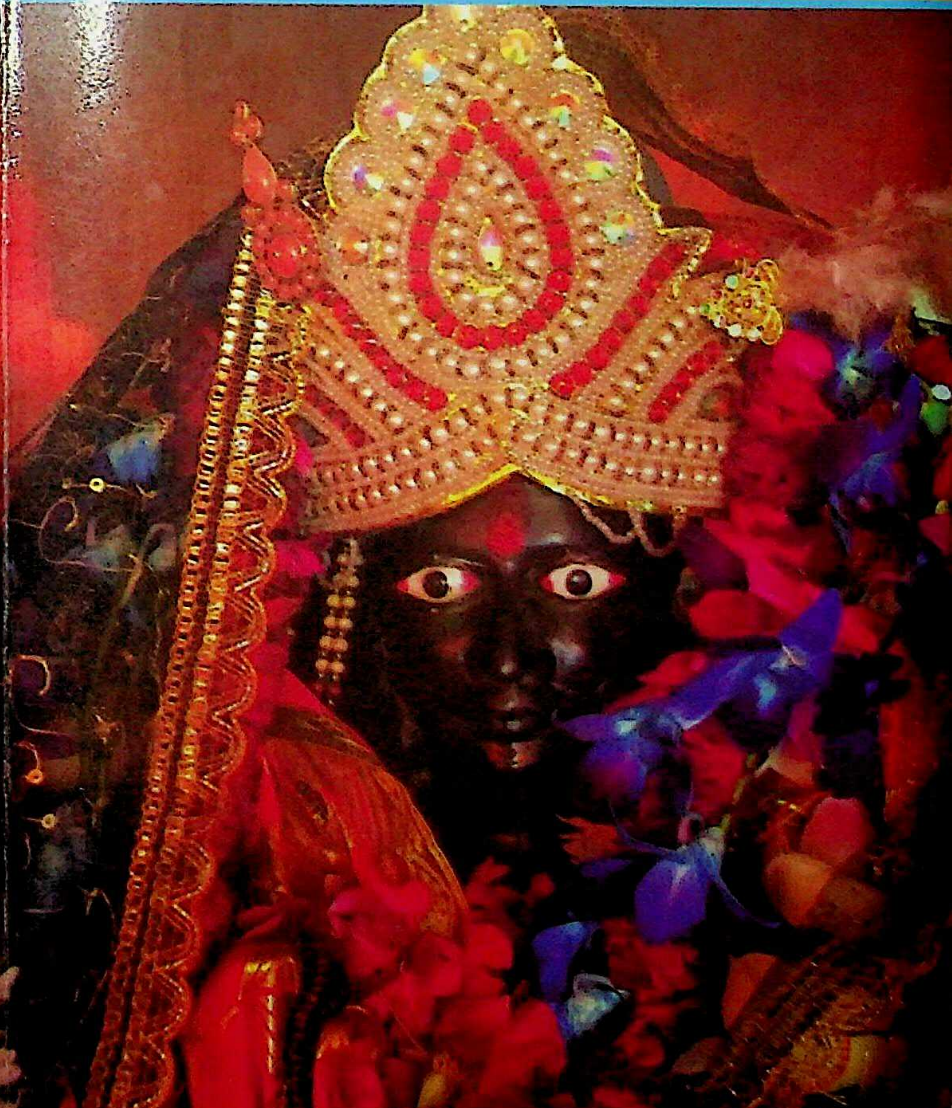

सिद्धिप्रदं शनि स्तुति एवं स्तोत्र संग्रह

संकलित एवं विरचितः शनिभक्त 'मनु'

₹ 200

शनि दीपदान विधि

- दीपदान किसी भी समय किया जा सकता है।
- भगवान शनि के नाम से आपको 1, 5, 11 एवं श्रद्धानुसार दीपक जलाने है। (देसी घी/सरसों का तेल/तिल का तेल)
- आपको दिया जलाने के साथ हाथ में जल लेकर ये संकल्प लेना है कि 'हे शनिदेव महाराज! मैं ये दीपदान मनु भैया को साक्षी मानकर आपको अर्पित करता/करती हूँ। नाथ आप इसे स्वीकार करें और मेरे पितृ व मलिन प्रेत को मुक्ति व शांति दें एवं रोगों का निवारण करें।' या आपकी जो प्रार्थना है, उसके अनुकूल ये संकल्प करें, जैसे: सुपुत्र व सुपुत्री के शीघ्र विवाह हेतु अथवा व्यापार बंधन एवं व्यापार वृद्धि हेतु दीपदान करता हूँ, आप इसे ग्रहण करें।
- ज्योत जलाने के 30 मिनट उपरांत आपको ज्योत के तेल को चम्मच से निकालकर थोड़ा हाथ में लेकर चखना है एवं दर्द की जगह पर लगाना है। इस तरह आप 1008 दीपदान करें।
- जिनको त्वचा संबंधी एलर्जी रहती हो, वे दीपदान जरूर करें।

– मनु भैयाजी

मंत्र-चिकित्सा, विज्ञान एवं अध्ययन संस्थान
शनि धाम मनु भैया जी ट्रस्ट

एको देव: कलौ शनि:

© इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनर्प्रकाशन या प्रतिलिपिकरण या इलेक्ट्रॉनिक भण्डारण रचनाकार एवं प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना करना प्रतिबंधित है।

प्रथम से नौवें संस्करण तक: (प्रतियाँ 1,18,500)

दसवाँ संस्करण 2023 : 31,000 प्रतियाँ

मूल्य: 200/- रुपये

संकलित एवं विरचित– शनिभक्त 'मनु'

प्रकाशक:

रामा पब्लिकेशन्स

एच-3/26, बंगाली कॉलोनी,

महावीर एन्क्लेव, नई दिल्ली-45

E-mail: ramapublications@gmail.com

Mob.: 9313 55 3434

श्रीसद्गुरु देव देवगुरु भगवान बृहस्पति व
महावतारी बाबा जी से
सविशेष प्रार्थना करता हूँ कि
वो अपने श्रीचरणों में मेरा अनन्त भावमय
सश्रद्ध प्रणाम बृहद् शनि-महिमा ग्रंथ के
रूप में स्वीकार करें।

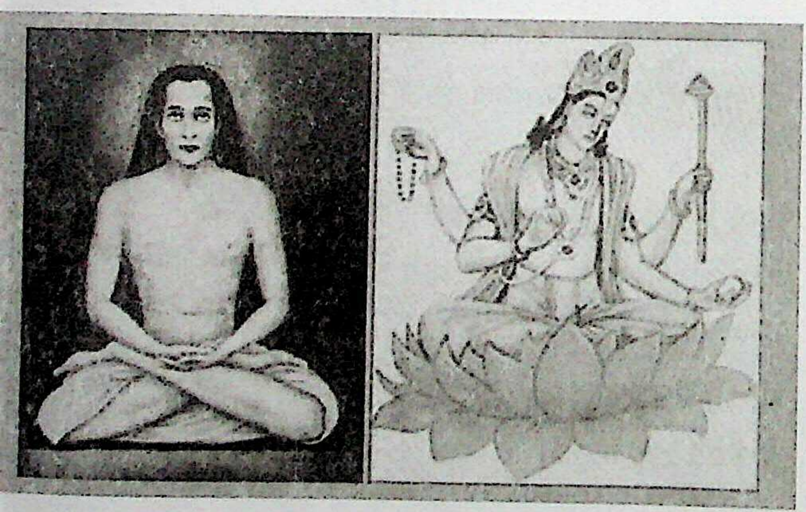

ॐ सत्यस्वरूपाय विद्महे सद्गुरुदेवाय धीमहि
तन्नौ जीव प्रचोदयात्

ॐ शिवस्वरूपाय सद्गुरुदेवाय
श्री महावतारीबाबा नमो नमः

समर्पण

स्व. पितामह — श्री बाल किशन त्यागी

स्व. पितामही — श्रीमती रामकली देवी

जिनकी देवतुल्य आत्माएँ आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रही हैं।

व

पूज्य पिताश्री — श्री डॉ. राजबीर त्यागी

पूजनीया माताजी — श्रीमती जयश्री देवी

जिनसे आशीर्वाद रूप में शनि भक्ति मिली तथा जो आज भी मेरा संबल हैं। उनके चरण कमलों में इस ग्रंथ को सादर समर्पित करता हूँ।

आभार

गुरुवर एन.पी.सती (एम.ए., बी.एड.) गाँव काँगन हेड़ी, जिनका आशीर्वाद इस ग्रंथ के लेखन में मेरी ज्ञान दृष्टि का अंजन बना।

श्रीमान विजेन्द्र कुमार गोयल (रामा पब्लिकेशन्स), जिनके सतत सहयोग से इस ग्रंथ का पुनर्मुद्रण व प्रकाशन सम्भव हुआ, जिनके मार्गदर्शन व अनन्त प्रकार से की गई सहायता से मुझे शनि सान्निध्य व शनि कृपा सतत प्राप्त हो रही है। इसी से मेरा अन्तःकरण उनके उपकार व धन्यता से सदैव भरा रहेगा।

मेरी सहभागिनी श्रीमती नीतू त्यागी के तात्विक विचार एवं अमूल्य सहयोग ने मुझे इस पुस्तक के सतत् प्रकाशन के लिए प्रेरित किया।

सुरूचिकर प्रकाशनार्थ, शब्द संयोजन, चित्रांकन के लिए रामा पब्लिकेशन्स के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

विषय सूची

मनु भैयाजी – मेरी नजर में... 8
जय श्री शनिदेव 10
ॐ शं शनैश्चराय नमः 11
शनिदेव 14
शनि नमन 16
शनि प्रार्थना 18
शनि अमृतवाणी 19
शनि चालीसा 30
श्री शनि चालीसा 32
शनि शर 34
श्री शनि शिंगणा साठिका 36
शनि रक्षा कवच 39
श्री शनिदेव प्रसन्नाष्टक 50
शनि कष्ट निवारण मंत्र 52
शनिवार व्रत कथा 57
शनिवार व्रत कथा 68
शनि स्तुति 74
शनि गायत्री 79
श्री शनि अष्टोत्तरशत नामावली 83

शनि अष्टोत्तर नामावली स्तोत्र	85
पिप्पलादऋषिकृत शनिस्तोत्रम्	87
श्री शनि वज्र पञ्जर कवचम्	88
शनि तंत्रोक्त साधना	90
वैदिक शनि साधना	91
तंत्रोक्त शनि साधना	94
प्रमुख शनि साधना मंत्र	96
श्री शनैश्चर स्तोत्र	98
श्री शनिस्तवराजः	99
श्रीदशरथकृतशनिस्तोत्रम्	102
दशरथकृत शनि स्तोत्र	108
श्रीशनैश्वरसहस्त्रनामस्तोत्र	110
शनि पूजनम्	126
मानस पूजा	135
क्रमानुसार वैदिक शनि साधना	137
विशिष्ट शक्ति शनि साधना	139
शनि-तीर्थ कोकिला वन की महिमा	140
शनि शिंगणापुर	143
पूजा से पहले / जपादि में सहायक नियम	146
शनि आरती	148
श्री शनिदेव जी की आरती	149
शनि छन्द	150
भजनावली	151

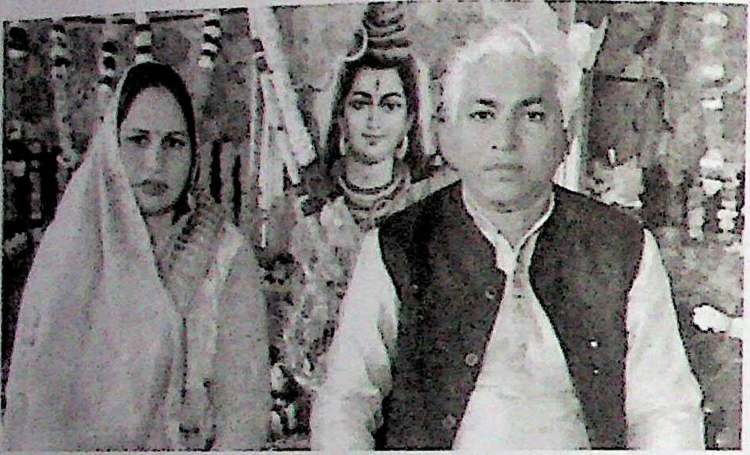

मनु भैयाजी - मेरी नजर में...

अगस्त 2007 में मनु भैया जी (मनु त्यागी) पहली बार मेरे पास कोई धार्मिक पुस्तक का प्रकाशन कराने आए थे। उस पहली भेंट में ही मुझे यह प्रतीत हो गया कि ये मनु भैया एक भक्त हृदय वाला व्यक्ति है। उस समय मनु भैया जी मुझे 500/- रुपये एडवांस देकर चले गए। चन्द महीनों में ही मनु भैया जी से मेरी आत्मीयता इतनी बढ़ गई कि मेरे बड़े लड़के संजीव गोयल की शादी की सारी बागडोर मनु भैया जी ने ही सम्भाली थी।

मनु भैया जी ने 2008 में मुझसे अपना एक स्वप्न कहा कि मुझे आदेश हुआ है कि भगवान शनिदेव की प्रसन्नता हेतु कोई धार्मिक पत्रिका निकाली जाए। मैंने मनु भैया जी को आश्वासन दे दिया और भगवान शनिदेव जी के आशीर्वाद से 'दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र' नामक पत्रिका का मासिक प्रकाशन चालू हो गया। क्योंकि मनु भैया जी को भगवान का आदेश हुआ था, इसलिए मैंने यह पत्रिका बढ़िया पेपर पर रंगीन निकाली।

सन् 2010 में मनु भैयाजी हमारे निवास स्थान पर शनि साधना हेतु एक माह का कोई अनुष्ठान कर रहे थे। उसी अनुष्ठान के अंतर्गत एक

रात्रि को मनु भैयाजी को भगवान शनिदेव के साक्षात् दर्शन हुए थे। उन्होंने भगवान शनिदेव के साक्षात् दर्शन भी किए और उनके चरणों को अपने हाथों से पकड़ा भी था। मुझे तभी अनुभूति हुई कि ये व्यक्ति अवश्य ही देवपुरुष है और इनके हाथों लाखों लोगों का कल्याण होना है। इस बात को आप सब स्पष्टतः देख भी रहे हैं। मनु भैयाजी रहस्यमयी और अज्ञात बीमारियों को शनिदेव की कृपा से सहज ही में दूर कर देते हैं।

परम शनिभक्त मनु भैया जी आज हमारे परिवार के गणमान्य सदस्य हैं। मनु भैया जी का मेरे जीवन में आगमन कायाकल्प करने वाला सिद्ध हुआ। 'दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र' के प्रकाशन से मुझे समाज में एक नई पहचान मिली। साथ ही मनु भैया जी के शुभ चरण हमारे परिवार में ऐसे पड़े कि हमारी आर्थिक दशा बहुत उन्नत हो गई। मनु भैया हमारे परिवार के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं।

मनु भैया जी परम भाग्यशाली हैं जो उनको सहभागिनी के रूप में नीतू सरीखी सती नारी मिली है। मेरी नजर में नीतू त्यागी दुर्गा है। नीतू एक विशाल हृदय की धनी, एक परोपकारी महिला हैं। प्रायः ऐसा कहा जाता है कि एक सफल मनुष्य के पीछे किसी महिला का सहयोग होता है। यह बात मनु भैया जी के जीवन को देखकर अक्षरशः सत्य सिद्ध होती है। भक्तिमती नीतू त्यागी मेरी प्रिय पुत्री के समान हैं, मेरा शुभ आशीर्वाद सदैव उनके साथ है।

आज मनु भैया जी जिस प्रकार सामाजिक उत्थान के कार्य कर रहे हैं, मेरा आशीर्वाद सदैव उनके साथ है। वे दिन-दूनी उन्नति करें और आम नागरिकों के कष्टों का निवारण सफलतापूर्वक करते रहें, यही मेरी भगवान शनिदेव से प्रार्थना है।

विजेन्द्र गोयल प्रधान सम्पादक,
'दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र'
एवं 'दिव्य वैदिक संदेश'

जय श्री शनिदेव

इस घोर कलियुग में इस स्थूल मानव शरीर की उत्पत्ति उपरान्त अनेकों भयंकर व भारी कष्ट प्रारब्ध संचित व वर्तमान कर्मफल प्रतिकूल परिस्थितियाँ लेकर सामने उपस्थित होता है। जिसे स्वेच्छा, देवेच्छा और परेच्छापूर्वक हम सभी कर्मफल भोग की प्रवृत्ति से भोगते हैं। नियमानुसार प्रारब्ध घटित होकर ही रहता है परन्तु मनुष्य द्वारा किए या श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा कराए गए विधिपूर्वक देव अनुष्ठान से आशातीत लाभ अवश्य ही प्राप्त होता है। कलियुग में जाग्रत शनिदेव घोर व दीर्घ तप के कारण जिन्हें भगवान शंकर ने ग्रह उपाधि प्रदान की। अनुकुल व प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वारा कर्मफल भुगताकर सभी बन्धनों से विमुक्त कर विशुद्धि प्रदान करते हैं। मैंने पाया श्री शनि भगवान से जल्द प्रसन्न होने वाला और कोई देवता नहीं है। श्रद्धानुसार तन्मय होकर उनकी कोई भी स्तुति पाठ की जाए, उसी से वे शीघ्र प्रसन्न होकर पुरुषार्थ के चारों साधन (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्रदान करते हैं। इन सभी स्तुतियों के निरन्तर पाठ से आप सबको शनि कृपा व शनि सायुज्य प्राप्त हो।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

जगत कल्याणकारी श्री शनिदेव भगवान की चरण रज का पिपासु, मैं अकिंचन 'मनु' शनि अनुकम्पा एवं आप सभी भक्तों के सहयोग से 'बृहद् शनि-महिमा ग्रंथ' का तृतीय संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो शनि भगवान की लोक कल्याणकारी स्तुतियों, भजनों, गायत्री, मंत्रों व साधनाओं का शनि अनुकूलता एवं शनि कृपा प्राप्ति हेतु संग्रहणीय अंक होगा।

श्री शनिदेव महाराज कलियुग में जाग्रत हैं, सभी राशियों के स्वामी हैं, राशि फल दाता हैं व ग्रह राज हैं। एकमात्र वो ही ऐसे ग्रह देव हैं जो अपनी ही नहीं, अन्य ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ा को भी शांत करने वाले हैं। शनिदेव के आशीर्वाद से मैंने शनि भक्ति धारा में अविरल बहकर जो पाया है, वही मंगलमय भगवान शनि का रूप आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो लोग शनि साढ़ेसाती, ढैय्या या शनि की महादशा में अनेकानेक कर्म दुख भोग रहे हैं और कारण केवल शनि को मान रहे हैं, मेरा कार्य उनका वास्तविकता से परिचय कराना है। कुछ लोभी ज्योतिष करने वालों लोगों ने जन साधारण को शनि से डराकर रखा हुआ है और विभिन्न उपायों के माध्यम से उनसे धन ऐंठकर अपना घर भरते रहते हैं।

श्री शनि कल्याणकारी भगवान हैं। ये किसी से वैर रखने वाले नहीं हैं। अगर ऐसा ही होता तो वे भगवान शिव के शिष्य नहीं होते, भगवान श्रीकृष्ण के भक्त नहीं होते तथा हनुमान जी के परम मित्र नहीं होते। राहु, बुध से उनकी मित्रता जग प्रसिद्ध है।

श्री शनिदव महाराज की महिमा अनन्त है। अपनी कामना करने वाले भक्तों के लिए वे प्राण वल्लभ हैं, जैसे- दशरथ को मन इप्सित वर देकर अभीष्ट कर दिया, विक्रम को भक्ति व ससम्मान

राज्य वापिस दिया। राजा नल पर कृपा की, इत्यादि।

- अगर वो भयदातार हैं – तो अभीष्टकारी भी हैं
- भयानक हैं – तो शांत स्वरूप भी हैं
- खड्गधारी हैं – तो वरदमय हस्त भी हम उनका देखते हैं
- कालरूप हैं – तो आयुवृद्धाय (आयु वृद्धि) करने वाले भी हैं
- रोद्रान्तकारी हैं – तो ग्रह पीड़ा हारी भी हैं
- वाम दृष्ट व बलीमुख हैं – तो जन्म लग्न दोष का निवारण करने वाले भी हैं
- दण्डाधिकारी हैं – तो धनदातारी भी हैं
- शत्रु मर्दन करने वाले हैं एवं भक्त सुखकारी हैं

दुष्कर्मों का फल शनिदेव हमसे साढ़ेसती, ढैय्या व अपनी महादशा-अन्तर्दशा का बहाना करके भुगताते हैं। उल्टा हमें खुश होना चाहिए, श्री शनि तो हमें तपाकर सोने से कुंदन बनाते हैं, साथ ही निष्पाप करते हैं। कभी भी एक राशि के सभी लोगों पर उनकी दशा लागू नहीं होती। जिन लोगों के संचय व वर्तमान कर्म पुण्य बढ़ाने वाले हैं, उनको शनि से हानि की बजाय फल के रूप में लाभ ही मिलता है।

वैसे भी अनेक भारतीय योगियों ने यह माना कि ग्रहों द्वारा हमेशा ऋणात्मक और धनात्मक किरणें विकीर्ण होती रहती हैं जो हमारे जीवन पर अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। ज्योतिष के अनुसार हमारे जन्म समय, जन्म स्थान, जन्मदिन और पिछले संचय कर्मों के सार हमें शुभ और अशुभ फल के रूप में इस जीवन में प्रभावित करते हैं। इसके अलावा हम अपनी इस असमर्थता का मन के अटल विश्वास और अपने कर्मों में बदलाव कर अतिक्रमण कर सकते हैं क्योंकि यह सभी हमें जो मिलता है उसका उद्‌भव हमारे अपने कर्मों से ही हुआ है, इसके अतिरिक्त हमारे पास आध्यात्मिक शक्ति है

जिसकी प्राप्ति कर हम सभी ग्रह नक्षत्र दोष को (देव कृपा या ईश कृपा) द्वारा सम्पूर्ण विनष्ट कर सकते हैं और मन इप्सित फल प्राप्त कर सकते हैं।

शनि भगवान बेशक दण्डाधिकारी हैं, तो भी वे किसी से वैर रखने वाले नहीं है। उनके हृदय में सबके लिए मातृतुल्य प्रेम भरा हुआ है (पितृतुल्य प्रेम इसलिए नहीं कहा गया क्योंकि पिता का प्रेम हमारे कर्म रूप देखकर बिल्कुल खत्म भी हो सकता है, परन्तु माँ का प्रेम गहन भाव-प्रवण होता है जो बेटा चोर, जुआरी, शराबी, कबाबी भी हो तो भी एकसमान रहता है, ईश्वर प्रेम जैसा)। उसी ने मायारूपी संसार में हमें डाल दिया है और वह यह भी जानता है कि हम कष्ट में हैं। उसे हमारे द्वारा रोज किए जाने वाले संघर्षों का भी आभास है, जब हम उनके शरणागत हो जाते हैं तब हमें तुरंत उनका आशीष और वरद हस्त अपने शीष पर प्रतीत होता है और अंततः उनकी कृपा प्रसाद के रूप में जीवन सफलता बनकर संसार के समक्ष उजागर होती है।

– शनि भक्त 'मनु'

शनिदेव बलकारी, गिद्ध तेरी है सवारी।
रूप चतुर्भुज धारी, अति ही विशाल है।
सूर्यदेव पिता तेरे छाया तेरी महतारी।
महिमादेवों में न्यारी करते निहाल हैं।
तेल अभिषेक करें, लौह प्रतिमा पे थारी।
मोदक चढ़ावें, चढ़ें उड़द की दाल है।
भगतन हितकारी, सुमिरत नर-नारी।
नीलाम्बर धारी 'मनु', कालों के भी काल हैं।

शनिदेव

शनैश्चर की शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्ण मुकुट, गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गिद्ध पर सवार रहते हैं। हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान सूर्य तथा छाया (संवर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्मपुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है- बचपन से ही शनि देवता भगवान श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुँची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गई। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान टूटने पर शनिदेव ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसी का अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी नक्षत्र भेद कर दें तो पृथ्वी पर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाये और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाये। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाते हैं, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषाचार्यों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़पकर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपने रथ पर सवार होकर नक्षत्रमण्डल में पहुँचे। पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भाँति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारास्त्र संधान किया। शनि देवता महाराज दशरथ की कर्त्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर माँगने के लिये कहा। महाराज दशरथ ने वर माँगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट-भेदन न करें। शनिदेव ने उन्हें वर देकर संतुष्ट कर दिया।

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुम्भ राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 19 वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए मृत्युंजय मंत्र, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली गौ, जूता, कस्तूरी और सुवर्ण का दान देना चाहिये। इनके जप का वैदिक मंत्र- 'ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।' पौराणिक मंत्र- 'नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।' बीज मंत्र- 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः' तथा सामान्य मंत्र- 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संख्या 23000 होनी चाहिये।

शनि नमन्

ॐ मंगलं शनिदेव प्रभु मंगलं सूर्यसुतम्।
मंगलं कालाग्नि रूपं मगलं भय दारूणम्।।
नमस्ते शनिदेव छायात्मजाय।। नमस्ते कालाग्ने सूर्य सुताय।।
नमस्ते रौद्राय भीम रूपाय।। नमस्ते सौरयाय पिप्पलाय।।
नमस्ते बभ्रु नमो यमाय।। नमस्ते कोणस्थाय मन्दाय।।
नमस्ते कृष्णाय पिंगलाय।। नमस्ते स्वीकुरु शनैश्चराय।।
नमस्ते नमस्ते नमस्कराय।

नमस्तं दयालं, नमस्तं कृपालं
नमस्तं शनैश्चर, नमस्तं हे ईश्वर
नमस्तं योगेश्वर, नमस्तं करूणेश्वर
नमस्तं मनोहर, नमस्तं सहोदर
नमस्तं भयहारी, नमस्तं पुरारी
नमस्तं त्वं विष्णु, नमस्तं सहिष्णु
नमस्तं सुखराशी, नमस्तं अविनाशी
नमस्तं निरंजन, नमस्तं भव भञ्जन
शरण मोहे लीजौ, कृपा कर दीजौ
मैं चरण बलिहारी, हे भगत हितकारी

कालस्वरूप प्रबोधाय, भक्त संताप हारिणे।
छाया भानू सुपुत्राय, शनैश्चराय ते नमः।
क्षतजाय कलिनाथाय, ग्रह राजाय देवपतेः।
मंदगताय शुष्काय, सर्व भक्षाय नमो नमः।

श्यामांगाय खज्जाय, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
शिव गणाय हरि भक्ताय, यमुनानुजाय ते नमः।
धन दातारं पिप्पलै, सौरये स्थूल रौम्णे।
कोधनाय च काव्याय, राशि नाथे नमो नमः।
धनु खञ्ज गदा हस्ते, भक्ति मुक्ति प्रदायिने।
'मनु' दाताय पिंगलाय, शिंगण वासी ते नमः।

कृष्ण वर्ण और नील वर्ण शनिदेव,
कालाग्निस्वरूप दाता तुम्हें नमस्कार है।
दुर्भिक्ष कारक प्रभु, अति रुद्र रूप तेरा।
मन्दगते सुर्यसुत तुम्हें नमस्कार है।
अग्नि समान शनि, योग में मगन भए।
पल माँही प्रलय करें, तुम्हें नमस्कार है।
स्थूल बाल वाले शनि, भैंसे पै सवार भए।
दण्डवत 'मनु' करे तुम्हें नमस्कार है।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयग्ग्स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदांऽगिरोभिः पितृभिस्संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्, हविषा मादयस्व।। ॐ अधिदेवता प्रत्याधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः।।

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

शनि प्रार्थना

शनिदेव जी वर दीजिये, हर लीजिये सब पाप मेरे।
गुण गाऊँ तेरे सदा, अब दूर कर संताप मेरे॥

हे मन्दगते सूर्यसुते, यम-यमुना भाई लख जरा।
कर अभय महाराज मुझको, बीच भंवर में मैं पड़ा॥

नक्षत्र दोष मैं भोगूँ ना, दाता कृपा कर दीजिये।
प्रेम से ये तेल डालूँ, नाथ अब तो भीजिये॥

तिल्ल से लड्डू बना, ये फूल फल मैं लाया हूँ।
माया के सब फन्द काटो, जिसमें मैं अलसाया हूँ॥

सद्गुण सदा दृष्टव्य हों, दीनों की सेवा में रहूँ।
प्रेम तेरे की नदी में, देव मैं हर पल बहूँ॥

माता-पिता की आज्ञा का, पालन करूँ मैं सर्वदा।
सार्थक हो मनुष्य जीवन, पुत्र हक होवे अदा॥

वैदिक क्रिया करता रहूँ, अनुष्ठान कर और हवन कर।
पूजूँ तुमको मैं सदा, तेरा जाप कर और ध्यान धर॥

शनि भक्ति से फीके 'मनु', सुख सारी दुनिया दारी के।
भक्ति में डूबे जहाँ, शनिदेव जी भयहारी के॥

सूर्यसुतम् महेश अंशं मातुछायानन्दम्
कालरूपं कृष्णवर्णं मन्दगते तव वन्दनम्॥

शीश मुकुट कर भाल है, उर पर मुक्तन माल।
रवि छाया के लाल का, क्रोध अजब मंद चाल॥

शनि अमृतवाणी

कांगितेन रोदेन तुम, तुम गणपति गणराज।
आदि पूजूँ विनायका, पूरण कीजौ काज॥
महादेव को ध्यान धर, पूजूँ माँ जगदम्ब।
तुम्हरा आशिष पाय कर, मिट जावे सब दम्भ॥
हरि सिमरूँ ब्रह्मा सिमरूँ, सिमरूँ सीता राम।
कृपा मुझ पर कीजिये, हे राधावर श्याम॥
नभ यह हो साक्षी सदा, तन भी होय प्रमाण।
कुलदेवा विनती करूँ, दीजौ इतना ज्ञान॥
भारद्वाज उत्पन्न भए, सदा श्रेष्ठ सन्तान।
मुवानिया शाषण भए, निपट हो प्रवर थान॥
आशिष दे माँ झुनझुनी, पितु सुन सुनिया मीत।
मात-पिता के संग मुझे, मिले शनि की प्रीत॥
गगन बसे नवदेव जी, करिये कृपा खास।
बसो संग शनि हिरदय में, इतना हो आभास॥
पूर्वज जन को नमन करूँ, दीजौ ये वरदान।
शनि नाम स्मरण रहे, जब तक घट में प्राण॥
गुरू चरणों में बैठकर, धरूँ शनि का ध्यान।
देव बड़े जग में शनि, बरनूँ सहित प्रमाण॥
अमृत वाणी देव की, करता हूँ आरम्भ।
मार्ग दर्शन कीजिए, गौरी सुत हेरम्ब॥

जयति जयति सचिदानन्दाय, जयति हंसाय शांतिदाय।
जय जय सर्वदाय सुघोषाय, जयती सहस्र जप सुप्रियाय।
जयति सुलभाय सर्वज्ञाय, जयति जय सौम्य सदा तुष्टाय।
जय सर्वरूपा शक्तिधराय, जयति जय शान्ते विरोचनाय।

जयति जयति जय अघोररूपा, अघहर अति बलवान अनूपा।
जयति जयति पुण्य फलदायक, नाशे अविद्या भक्त सहायक।
जयति जय आदित्य संभवाय, जयति जयति जय आदिदेवाय।
जय जय शततूणीर धारिणे, जयति उर्ध्व लोक सच्चारिने।
जय जय ग्रहपतये घोराय, जयति छाया देवी सुताय।
जयाय जय प्रदाय जय जय, जय जयदाय डंभाय जय जय।
जयति ज्ञानमूर्तये स्वामी, तत्वज्ञाय जय अन्तरयामी।
जयति जय धर्मरूपा धारी, पिप्पल महिमा अमित तुम्हारी।
जयति पिंगल प्राण कारिणे, प्राणरूपिणे कष्ट हारिणे।
जयति अनन्तो जय अन्नदाता, जयति महाभुज मंजुल भ्राता।
जयति भूतात्म भयहारी, जय भुवनेश्वर प्रियकारी।
जयति घनाय वैराग्य दाय, जय वाम नाम जय पावनाय।

दोहा- तज विषय शनिदेव का, पूजन करे त्रिकाल।
शनिदेव दाता करें, जीवन जीव निहाल।।
शनि अनन्त महिमा अनन्त, अनन्त कलि का काल।
सर्व जन उद्धार हित, जाग्रत शनि तत्काल।।

नमो नमो शनि महाशान्ताय, नमो सौम्य भानुज योगाय।
नमो नमो शनि वज्रदेहाय, नमो नमो शनि विश्ववन्द्याय।
नमो नमो शनि श्रुतिरूपाय, नमो नमो त्वम् शनैश्चराय।
नमो शनैश्चर पुष्टिदाय, नमो रवि वंशज प्रदीपनाय।
नमो नमो शनि क्षिति भूषाय, नमो हविषे हिरण्य वर्णाय।
नमो नमो शनि महाकायाय, नमो मन्दार कुसुमप्रियाय।
नमो विष्णवे विश्व भावाय, नमो नमो शनि भक्त वत्सलाय।
नमो नमो शनी मुक्ति दाताय, ज्ञानी ज्ञान ज्योतिष ज्ञाताय।

दोहा- नीलद्युति आभा तेरी, शंकर सदृश रूप।
नमन तुम्हें शनिदेव है, हे कालाग्नि स्वरूप।।

रक्षक हों शनिदेव जी, संकट कटे समूल।
शनि संकीर्तन कीजिये, जीवन हो अनुकूल।।

कानन कनक जड़ित भिन्न मोती, राजे कटिबंध मोतिन ज्योति।
भाल मुकुट दीपे सम पारस, नीलकान्ति तन फैली तैजस।
कोटर सदृश नयन विशाला, गदा त्रिशूल ढाल कर भाला।
भाल तिलक सूर्याकृति सोहे, सब देवन के मन को मोहे।
चतुर भुजा बाजूबंद सुंदर, हस्त कंकण गल माल मनोहर।
अलकें घूंघर वाली प्यारी, तेजोमय मुख अति उजियारी।
अभय हस्त दीर्घ तनधारी, योगी अमर धीर भयहारी।
चरण कमल रज गंध सुवासित, योगासन शनि सदा विराजित।

दोहा- रवि छाया ने लाल का, नाम रखा शनिदेव।
करमन फल को देत हैं, कष्टों के हर लेव।।
रूप चतुर्भुज धारे हैं, निराकार साकार।
उनका बेड़ा पार है, जिन्हें शनि से प्यार।।

करें भानु मण्डल सञ्चारण, जीवन व्याकुलता के कारण।
सद उपाय प्रिय तोहि दाता, जो जन करता सुख सो पाता।
विधिवत मन से कीजे पूजन, सफल सत्य से होये जीवन।
शनि संकीर्तन शनि मन रञ्जन, भक्ति शनी नर हित भव भञ्जन।
विधि प्रेम से मंगल गावें, शनि चरणन में शीश नवावें।
तापर शनि प्रसन्न हो जावें, मोक्ष राह पर पैर रखावें।
ग्रहराजा महाबल पिंगला, सेवित सदा हरि संग कमला।
मंदचारी भूतात्म कृष्णा, शांति दें भक्तन मृग तृष्णा।
नन्हे जीवों के रखवारे, सबकी जीवन रेख सम्भारे।
जलचर नभचर नाना भूचर, सबका भार प्राणमय तुम पर।
जिन तज माया मोह पसारा, तिन तन कष्ट किया निस्तारा।
दुःखहन्ते दुःस्वपन नाशक, प्रिय शनी सब मंत्र उपासक।

कृष्णा गऊँ प्रिय शनि देवा, कोकिल वन में करते सेवा।
तिल तेल अरू शनि अमावस, नाम प्रिय अति हैं शनि को दस।
शनी ग्रह के तुम हो स्वामी, जय शनिदेवा अन्तरयामी।
पावें कृपा सुमार्ग गामी, पार उतारे कलि के कामी।
दोहा- भव भय हरणी बीच जग, शनि भक्ति को जान।
मिटे भ्रम अज्ञान का, मिलता मुक्ति ज्ञान।।
दृष्टि जो देखें शनी, गावें श्रुति का गान।
दीन बन्धु शनिदेव जी, कर देते कल्याण।।
सर्वारिष्ट प्रभु शनि भगाओ, भक्त सखे सब पीर नसाओ।
शुभकर्मी शनि नाम सहाई, दुष्कर्मी दें खाक मिलाई।
मिटे सकल संकट भव पीरा, निर्मल नित्य रहे शरीरा।
कोटिक जन्म पाप के नाशक, 'मनु' जीवन के गुण प्रकाशक।
अभीष्ट फल दे अति सुखकारी, अभय करे सर्वानन्द धारी।
अन्नदाता अविगत अविकारी, अतुल अमोघ अनन्त उदारी।
बहु पतित कलि माँही उबारे, करूणा कीन्हीं विरद विचारें।
छल पाखण्ड द्वेष सब त्यागो, शनि नाम सुमिरण में लागो।
दिन दिन नर यह छीजत काया, विषय वासना मन भरमाया।
दानव काल बड़ा बलकारी, शनि गुण गा छूटे नर नारी।
शनि कृपा पावे जो कोई, रोग शोक ना ताको होई।
नर सुर असुर किन्नर विद्याधर, करें प्रभावित सब राशि घर।
ऋग्वेद ब्रह्माण्ड पुराणा, नाम महिमा करें बखाना।
कश्यप वंश की शोभा बढ़ाई, सूर्य कीरति नेक निभाई।
मंद शांत विधि रूप तुम्हारा, भक्तन देवें बेगि उबारा।
किरपा वृष्टि सदा बरसाओ, भूल पाप सारे बिसराओ।
दोहा- लगन लगी शनिदेव से, मिटे द्वैत अज्ञान।
अभय रहे जीवन सदा, मूरख बीच सुजान।।

करिये शनि संकीर्तन, पाइये कृपा खास।
स्वाति बूँद चातक लिये, मिट जाती है प्यास।।

अति क्रूर हों करे उत्पाता, दे बहु कष्ट और संतापा।
सर्व पीड़ा मृत्यु के कारक, निंदक कपटी छली सुधारक।
वैरी विरोधि अमंगलकारी, भूत प्रेत सर्पादिक भारी।
दुष्ट अरू हिंसक जीवादी, बच न पाए कोई अपराधी।
संकट दुख भंजन भगवाना, हूँ शरणागत कर कल्याणा।
सुख दुख द्वन्द क्लेश नसाओ, सब कष्टों से मुक्ति दिलाओ।
क्रोध दृष्टि न झेलूँ तुम्हारी, दारूण दुख शनि सहूँ न भारी।
मैं मूरख शनि निपट अनारी, करूँ प्रार्थना मति अनुसारी।
क्या गुण शनि तुम्हारे गाऊँ, अल्पमति मैं अज्ञ कहाऊँ।
काम क्रोध मद लोभ अनेका, मिटा समूल दीजौ विवेका।
छाया सुत यम यमुना भ्राता, 'मनु' जतन से तुमको पाता।
रघुवंशी सम शनि आराध्य, भए गम्भीर धीर अति साध्य।
कुरूवंश पूजे तुमकों विधिवत, माने कलि जन करे नमन शत।
सकल जन्म के पाप निवारे, पावन नाम शनि का प्यारे।
राम से वर द्वापर में पाए, पूजित राम सम शनि कहलाए।
हों प्रसन्न परशुराम दीन्हें वर, पूजें कलि जन मुझसे बढ़कर।

दोहा- न्यायधीश बड़े सख्त शनि, भगतन को सुखकार।
ज्यों गन्ने की डाँड है, पौर पौर रसदार।।
सकल जगत जाति सभी, जाने शनि प्रभाव।
बिन शनि पूजन के रहे, सुख सम्पत्ति अभाव।।

सुलक्षण सती पतिव्रत नारी, पावें शनि से पदार्थ चारी।
जिन पशुओं सम उम्र गुजारी, दे शनि कष्ट उसे अति भारी।
भूमि रत्न शनि को प्यारे, खान खदान खाद्यन्न सारे।
लौह सिंहासन अति ही भाए, प्रथम पूजें जन मान बढ़ाए।

तिल अन्न दान तिल जो करते, शनि संतुष्ट हो संकट हरते।
पीर तेल तिल दीपक हरता, तुष्टि शनी सम्मुख जब जरता।
ओमकार भज शिव को ध्यावे, शनि प्रसन्नता नर वह पावे।
मूर्ति मंदिर शनि प्रकाशा, पीपल ऊपर करें निवासा।
'मनु' मन चक्षु भए विवेकी, अलौकिक छवि शनि सूक्ष्म देखी।
कृपावंत कीरति निरंतर, कलि माँही फैलेगी घर-घर।
जो जन करे नित शनि आरती, सकल विपद को तुरत टारती।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई, शनि संकट ते तारे सोई।
तुम्हरी महिमा सब दिशि छाइ, नाम कीरतन सबै सुखदाइ।
ग्रंथ पंथ शनि कीर्ति बखानी, तुम सम कोइ दयालु न दानी।
पूजन विधि जन नाहीं आवे, विनय कर सन्मुख शीश नवावें।
हरो विघ्न मंगल शनि कर दो, भक्तों के भण्डारे भर दो।

दोहा- करते मंगल कामना, साधक तेरे द्वार।
भर झोली ले जाते हैं, मिलकर के नर नार।।
दास भावना मन रखे, सेव करे दिन रात।
सब साधन जग में मिले, मिले शनी का साथ।।

तिल उड़द लौह तेल चढ़ाऊँ, मन रंजन गाथा तब गाऊँ।
बुद्धि मन प्राणों से सेवा, करूँ सदैव नियम से देवा।
जोरी जुगल कर शनि मनाऊँ, विकरम सम किरपा पा जाऊँ।
हो अति प्रसन्न कष्ट मिटाओ, किरपा भक्तों पर बरसाओ।
तुम भक्तन के भक्त तुम्हारे, पूरण करते कारज सारे।
कलि मल हरण नाम शनि पावन, दीनदयाल भक्त मन भावन।
पतित शरण हों पावे मुक्ती, कलि में श्रेष्ठ शनि की भगती।
जो जन शरण तुम्हारी आवे, धन वैभव यश तुमसे पावे।
जो शनि गान मनोहर गावे, उत्थित ब्रह्मनाद हो जावे।
जो नर मान ईष्ट शनि ध्यावे, तिस के काज सफल हो जावे।

जन कल्याण जो रहते तत्पर, शनिदेव प्रसन्न हो उस पर।
जो जन शनि का नाम बिसारे, सो जीवन ना कोइ उबारे।
दान करे जो वस्तु अनेका, दो धन वैभव न्याय विवेका।
शनि यमराज दोउ दंडधारी, सब दुष्टों की तुरत मति मारी।
सखा भैरव हनुमत बुध राहु, हठी त्यागी गम्भीर सुभाउ।
आनन तेज अमित बरसावे, कोटि काम तुमसे डरपावे।

दोहा- शनि देव दरबार से, खाली जाय न कोय।
झोली भर दें सुख सभी, जो भगतन के होय।
शनि की कृपा का कभी, नहीं होता है अंत।
भजन करो शनिदेव का, मिल नर नारी संत।।

गज वाहन शनि बैठि के आवे, अन धन साधन घर भरि जावे।
आवें शनि बैठि के जम्बुक, बुद्धि नष्ट हो मिट जावे सुख।
मृग ऊपर शनि देवा आवे, कष्ट प्राण संहार बढ़ावै।
आवे जब शनि बैठि स्वान पर, संभव चोरी होने का डर।
बैठि ऊपर गर्दभ के आवै, चहुँ और से हानि करावै।
सिंह बैठि आवे शनि देवा, बन अधिकारी भोगे सेवा।
काक वाहन शनि बैठि आवे, भक्तन सुख दे काज बनावे।
गिद्ध भैंसा पे आवे जबहि, सफल मनोरथ होवे तबहि।
तैसे चारि चरण शनि आये, ताम्र रजत लौह स्वर्ण बताये।
लौह चरण पर जब पग राखे, साधन मिटे पड़े फिर फाँके।
ताम्र रजत पर अति शुभकारी, स्वर्ण आवें हों मंगल भारी।
मन्दिर जो शनिदेव बनायें, सब सुख जीवन तुमते पायें।
करे शनि के वार उपवासा, पूरण करते मन की आशा।
शनिवार जप करे गिन स्वाँसा, स्वर्ग लोक में पावें वासा।
तेल उड़द गुड़ कपड़ा काला, आक शमी पुष्प चढ़त निराला।
शनिवार जो अमावश होये, सब जन तेल चढ़ावे तोये।

दोहा- रखे टेक शनिदेव जी, तारे भव से पार।
चौरासी के फेर से, कर देवे उद्धार।।
कर्म किए जाए मना, सकल ग्रह फल देत।
शुभ कर्मी सुख पावे हैं, शनि पूजन से चेत।।

नजर पड़े पशु पंछी मानव, महाभयंकर देव व दानव।
दृष्टि से हो जाये दीना, नष्ट नगर राष्ट्र भी कीन्हा।
दृष्टि शनि की अति विकराला, रवि पर टिकी कुष्ठ कर डाला।
सूर्य सारथि पंगु कर डाला, अंध अश्व दृग गया उजाला।
मस्तक शिवा सुवन का छेदा, शनि दृष्टि से होये विच्छेदा।
बृत्संहिता में सविस्तारा, शकट रोहिणी भेदन भारा।
गुरू वशिष्ठ गर्भ में देखा, चिन्ता दशरथ मस्तक रेखा।
आये बारह वर्ष अकाला, छाया संकट महा विशाला।
दिव्य रथ का किया आवाहन, ऊपर गये तीन लख योजन।
भास्कर मण्डल ऊपर जाकर, लगा तीर धनु डोर चढ़ाकर।
प्रतीक्षा शनिदेव की कीन्ही, शपथ अनोखी धार मन लीन्ही।
शनी सामने पा सकुचाये, वर देने को हस्त उठाये।
हो दशरथ साहस से प्रसन्न, किया अभय अकाल से जीवन।
नृप दशरथ शनि स्तुति कीन्ही, विपदा सकल शनि हर लीन्ही।
प्रजा रहने लगी सुखारी, टला रोहिणी भेदन भारी।
पुरवो आस सभी की देवा, जन दर तेरे करते सेवा।

दोहा- महिमा बड़ी शनिदेव की, सब सुख क्षण में देत।
रक्षक बन शनिदेव जी, संकट सब हर लेत।।
विनती जो शनि से करे, कातर सम सुग्रीव।
आँधी तूफाँ में कभी, उखड़ ना पावे नींव।।

हरिश्चन्द्र नृप सत्य धारी, शनि दृष्टि ने किया दुखारी।
छीन लई सम्पत्ति सारी, बिछड़े हिय से बालक नारी।

रामचन्द्र राशी शनी आए, वर्ष चौदह बनवास दिलाए।
चले भार्या संग बन वासा, राजतिलक की छूटी आशा।
करते सुर नर मुनिजन वंदन, असुर निकंदन हे रवि नंदन।
भुगताया नल को राशि फल, शुद्धात्मा किया राजा नल।
स्नान शनि तीरथ नल कीन्हा, साम्राज्य पदवी शनि दीन्हा।
स्वपन में मंत्र दे नृप नल को, वर दे पुष्ट किया भुज बल को।
राशी पर सुग्रीव की आये, महाघोर अपमान कराये।
प्रिया विहीन हुए अपराधी, छीने सहोदर सुख भोगादि।
रावण राशी पर शनी आए, सभी देव संग युद्ध कराए।
ब्रह्म अस्त्र देवों पे चलाए, नवग्रह रावण बंदी बनाए।
सिंहासन संग बांध रखाए, श्री रघुबीर बजरंगी धाए।
हनुमत नवग्रह मुक्त कराये, शनी दृष्टि विकराल दिखाये।
स्वर्ण लंक को लाख बनाये, हनुमत रावण नगर जलाये।
बाद दशा अति आई भारी, मिटा वंश बनी हेतू नारी।

दोहा- शत तूणीर धार चले, शनिदेव महाकाल।
भक्तन कृपा मिल गई, दुष्ट मरे तत्काल।।
काम क्रोध मद लोभ का, घट में फैला जाल।
शनि दृष्टि से जन दुखी, हो जाते कंगाल।।

पीर सही पाण्डव ने भारी, बचि अपमानित होती नारी।
धर्मराज नारद मुनि ध्याये, नारद शनि स्तवन बतलाये।
कीन्हा धर्मराज शनि ध्याना, रक्षा कीजै तनु अंग नाना।
सुर शशि मरूत घोर अकारा, मन्द जटाधर खञ्ज कुमारा।
तीन ताप के हरने वाले, देव सिद्ध योगेश्वर काले।
ला चित्त चरणा सिमरूँ तोहे, पार उतारो भव से मोहे।
सुन स्तवन शनि प्रकटे सन्मुख, दीन्हा धर्मराज को वर सुख।
हुआ युद्ध कालान्तर भारी, हारे कौरव अत्याचारी।

धर्म स्थापना हुइ जग माहीं, प्रभु श्री भगवद्गीता गाई।
राजा विकरम अति बलवन्ता, छलि कपटी के नाश करन्ता।
हुए राज्य जन अति ही सुखारी, छाया यश महि ऊपर भारी।
शनी दृष्टि ने किया दुखारी, अन्त माना शनि न्याय कारी।
अहम् मिटाया नृप का सारा, सपन में दुख का किया निस्तारा।
पूड़ी सब्जी किया भण्डारा, हलवा चना बनाया प्यारा।
प्रथम भोग शनि को खिलाये, पाछे ब्राह्मण सात जिमाये।
भूखों का फिर पेट भराये, सब सुख सम्पत्ति शनि से पाये।

दोहा- शनि से मन भय उपजे, सुन प्राणी नादान।
शनी देव दाता करें, करमन फल प्रदान।।
सब देवों में हैं बड़े, कृष्ण वर्ण शनिराज।
जो नर ध्यावे नित्य ही, पूरण करते काज।।

उद्भव लीला प्रसंग न्यारा, भया शनि महिमा का विस्तारा।
भ्रमवश शनि हनुमत ललकारा, एक अंश एक रूप अपारा।
श्री राम की करे सेवकाई, स्वयं रूद्र शिव ध्यान लगाई।
क्रोध वश शनि मति भरमाई, बढ़ा अहं तन रहा अघाई।
समझ उन्हें साधारण वानर, गर्जे टूट पड़े शनि उन पर।
हुआ युद्ध बड़ा ही भारी, लड़कर हारे शनि बलकारी।
महावीर भए पर्वत कारी, क्षण में पूँछ बढ़ाई भारी।
पाश बनाय शनी लिपटायें, परवत परिक्रमा को धाये।
पत्थर पत्थर शनि टकराये, घाव बदन पर शनि के आये।
तब शनि ने कपि को पहिचाना, अवतारी महिमा को जाना।
मन ही मन फिर किया प्रणामा, टूटा अहं धार हिय नामा।
फिर शनि देव गुहार लगाई, हनुमत मति मेरी बौराई।
तुम प्रिय सखा आज से मोरे, भगतन नहीं सताऊँ तोरे।
हनुमत शनि को तेल लगाये, भगत तभी से तेल चढ़ाये।

तब शनि महिमा छाई भारी, शनिवार पूजे संसारी।
मंगल दिवस जो शनि पूजते, शनि विकट संकट सब हरते।

दोहा- लीला श्री शनिदेव की, अद्भुत और विचित्र।
कलियुग में कल्याण करे, बनकर 'मनु' के मित्र।।
मंगल जो शनि पूजते, धार हिय विश्वास।
शनी सकल भय हर करें, पूरण मन की आश।।

शुभ कारज में शनी मनाओ, मंगल फल श्री शनि से पाओ।
ग्रह आरम्भ या ग्रह प्रवेशा, शनिवार कीजिये हमेशा।
मिले दान फल अतिशय भाई, मध्य पहर महिमा अधिकाई।
मन्दिर दर्शन पूजन अर्चन, बढ़े प्रताप होए शनि प्रसन्न।
साधु योगी या संसारी, पार लगाए विरद संभारी।
सहस्र नाम जप सम सुखदाई, शनी किरपा दुर्लभ फलदाई।
पुत्र पौत्र परिवर्धन कारी, शत जप से मिलते फल चारी।
अमृत वाणी गावै जो कोइ, नित्य नेह शनी चरणन होइ।

छंद- शनिदेव नर, हर पल सुमिर, कलिकाल बड़ दुखदाइ है।
मिटता अविद्या जाल जिन, शनि चरनन्हि लौ लाइ है।।
मंदिर शनि के जाय जो, शनि अमृत वाणी गावते।
हो पूर्ण 'मनु' मन कामना, अरू मुक्ति पद को पावतै।।

दोहा- शनी चरण में राग हो, ताप मिटे फिर तीन।
अल्पमती मति पाइ के, बरनै कीर्ति नवीन।।

पंजर वज्र कवच का जो, नित्य उठ करे जाप।
जन्म लग्न के दोष सब, मिट जावेंगे आप।।

श्याम अश्व की नाल पर, बना शनि का यंत्र।
बाजू पर धारण करे, शनि प्रसन्नता मंत्र।।

शनि चालीसा

ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव जी, मैं सेवक मतिहीन।
राखो सर पे हाथ प्रभु, कर अपने आधीन।।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुमरूँ तेरा नाम।
कृपा कर निज दास के, करियो पूर्ण काम।।

जय जय तेरी छायानन्दन। दोऊ हाथ जोड़ करूँ वन्दन।।
नीले पद और कृष्ण वर्ण तन। लौह प्रतिमा पूजे जन जन।।
मन्दगते हे कपालधारी। अधोदृष्ट हे अभीष्टकारी।।
जाग्रत तुम कलियुग में देवा। सेव करे जो पावे मेवा।।
उग्र तेज अति अगाध तेरा। काटो चौरासी का फेरा।।
रूप चतुर्भुज जो कोइ ध्यावे। साधक वो वांछित फल पावे।।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावे। शनि कृपा उस पर हो जावे।।
ग्रह दशा तेरी भई जिस पर। भाग्य विवश जीवन हुआ दुष्कर।।
हरिश्चन्द्र नृप सत्यवादी। नारी बेचन हुई मुनादी।।
खुद भरे नीर डोम घर माँय। मृत सुत को लकड़ी भी नाँय।।
राम दियो वन कैकयी माता। लक्ष्मण रेखा खींची भ्राता।।
मृग सोने का कपट दिखाया। बदल रूप लंकेश्वर आया।।
रावण पर शनि जब पगु धारा। हुआ युद्ध कुल सहित संहारा।।
श्री कृष्ण राशि पर आए। तब से ही रणछोड़ कहाए।।
दशा भई पाण्डु पुत्रों पर। वन वन भटके भए अगोचर।।
हुआ द्रोपदी का अपमाना। सह गए चुप पाँचों बलवाना।।
दुखी भए शनि दृष्टि से जब। गोविन्द नेक उपाय दियो तब।।
धर्मराज करो व्रत शनिवारा। मेटे दुख शनिदेव तुम्हारा।।
ग्रह दशा कौरव पर आई। महाभारत की हुई लड़ाई।।
राजा विक्रम अति दुख पायो। तेली के घर कोल्हू चलायो।।
हाथ पैर नृप दिए कटवाये। अन्त सपन में दर्शन पाये।।

डाला जब शनि दृग प्रकाशा। उड़ गयो शीश गणेश अकाशा।।
रोहिणी शकट का भेदन भारी। अकाल बारह वर्ष दुखारी।।
दशरथ धारी मन दृढ़ निष्ठा। आज्ञा दी तब गुरू वशिष्ठा।।
सप्त द्वीपाधि पति नृप दशरथ। गुरू से वर ले निकले नभ पथ।।
रोहिणी शकट के पीछे जाकर। लगा तीर धनु डोर चढ़ाकर।।
धन्य हुए शनि दर्शन पाकर। पाया दशरथ ने इप्सित वर।।
शनिदेव भय सरिता तारण। सब कष्टों का करो निवारण।।
पीपल निकट ले नाम शनि दस। सूत लपेटे सात बार कस।।
दीप जलावे और जल देवे। रोग दोष सब शनि हर लेवे।।
मन जिसके शनि प्रेम है राचा। दूर रहे बेताल पिशाचा।।
हिय पतंग सत हो अनुरागा। सूक्ष्म दर्श हो भए बड़-भागा।।
जो जन कर्म करेगा जैसा। फल देंगे शनि उसको वैसा।।
मात-पिता का करे निरादर। देवे दुख शनिदेव निरन्तर।।
दीनन को जो भोज करावे। पुत्र रूप में धन वो पावे।।
कर्म किए फल भोगे कारा। नाम लेत होये छुटकारा।।
पाठ करे चालीसा पावन। मिल जाता है फल मन भावन।।
नित उठ पाठ करे जो कोई। पीड़ा शनि की कबहू न होई।।
पिंगल शौरी बभ्रु मंद रूपा। कोणस्थ रौद्र यमाय अनूपा।।
पिप्पलाय कृष्णा सुखकारी। आओ शनि 'मनु' डगर बुहारी।।

शनिधाम में जाय के, करे तेल अभिषेक।
'मनु' चालीसा जाप कर, मिलते फल अनेक।।
शनिवार को दान करे, उड़द तिल और लौह।
काला कम्बल दीन को, मन ले प्रभु का मोह।।

श्री शनि चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल।।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज।।

जयति जयति शनिदेव दयाला, करत सदा भक्तन प्रतिपाला।
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै, माथे रतन मुकुट छवि छाजै।
परम विशाल मनोहर भाला, टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके, हिये माल मुक्तन मणि दमके।
कर में गदा त्रिशूल कुठारा, पल विच करैं शत्रु संहारा।
पिंगल, कृष्णो, छाया नन्दन, यम कोणस्थ, रौद्र दुःख भंजन।
सौरी, मंद, शनी, दस नामा, भानु पुत्र पूरहिं सब कामा।
जापर प्रभु प्रसन्न हो जाहीं, रंकहि राव करैं क्षण माहीं।
पर्वतहु तृण होई निहारत, तृणहु को पर्वत करिडारत।
राज मिलत वन रामहि दीन्हयो, कैकेई की मति हरि लीन्हयो।
बन में मृग कपटी दिखराई, मातु जानकी गई चुराई।
रावण की मति गई बौराई, रामचन्द्र सों करी लड़ाई।
दियो क्षारि करि कंचन लंका, बाजो बजरंग बीर का डंका।
लक्ष्मन विकल शक्ति के मारे, रामा दल चिन्तित भय सारे।
नृप विक्रम पर दशा जो आई, चित्र मयूर हार गा खाई।
हार नौलख की लगि चोरी, हाथ पैर डरवायो तोरी।
अति निन्दामय बीता जीवन, तेली सेवा लायो नृप तन।
विनय राग दीपक महँ कीन्हयों, तव प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हयों।
हरिश्चन्द्र नृप-नारि विकानी, राजा भरयो डोम घर पानी।
वक्र दृष्टि जब नल पर आई, भुंजी मीन जल पैठी जाई।

श्री शंकरहिं गहयो जब जाई, जगजननी कह भस्म कराई।
तनिक विलोकत करि कुछ रीसा, नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी, अपमानित भई द्रोपदी नारी।
कौरव कुल की गति-मति हारी, युद्ध महाभारत भयो भारी।
रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला, कूदि परयो सहसा पाताला।
शेष देव तब विनती कीन्ही, मुख बाहर रवि को करदीन्ही।
वाहन प्रभु के सात सुजाना, दिग्गज, गर्दभ, मृग अरू स्वाना।
जम्बुक सिंह आदि नख धारी, सौ फल ज्योतिष कहत पुकारी।
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं, हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं।
गर्दभ हानि करै बहु काजा, सिंह सिद्धकर राजा समाजा।
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै, मृग दे कष्ट प्राण संहारै।
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी, चोरी आदि होय डर भारी।
तैसहि चारि चरण यह नामा, स्वर्ण लौह चांदी अरु तांमा।
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं, धन जन सम्पति नष्ट करावैं।
समता ताम्र रजत शुभकारी, स्वर्ण सदा शुभ मंगलकारी।
जो यह शनि चरित्र नित गावै, दशा निकृष्ट न कबहुं सतावै।
नाथ दिखायैं अदभुत लीला, निबल करैं जै हैं बलशीला।
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई, विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत, दीप दान दै बहु सुख पावत।
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा, शनि सुमिरत सुख होत प्रकासा।

शनि मंत्र

ॐ प्रिं शनैश्चराय सूर्यपुत्राय शं नमः

ॐ शं प्रिं ह्रीं श्रीं खीं खां प्रां प्रौं खों सः शनये नमः

खौं प्रौं प्रां खां खीं श्रीं ह्रीं प्रिं शं नमः ॐ

शनि शर

(शनि कृपा प्राप्ति का अमोघ कवच)

शनी प्रेम हिरदय बसा, नित्य करे गुणगान।
मंगल हो कारज सभी, चहुँ दिश हो प्रभान।।

जय शनिदेव भगत प्रतिपाला। दुख विनशो हे दीन दयाला।।
सब भगतों को आप हैं रोचन। सुखी करो हे संकट मोचन।।
दशरथ नृप को दे वरदाना। जग भय रहित कियो सन्माना।।
लाख किये सोने की लंका। बजवायो बजरंगी डंका।।
कौरव कर्म को फल भुगताया। धर्मराज फिरि राज दिलाया।।
चक्कवत विकरम न्यायकारी। दर्शन दे प्रभु कियो सुखारी।।
देरी काहे नाथ लगाओ। नक्षत्र दोष सब शनि भगाओ।।
सुर रक्षा का भार उठाया। राक्षस जन को मार गिराया।।
चरण कमल प्रभु सहस्र गजबल। दोउ हस्त हैं सिंहों का दल।।
काल रूप हे कपालधारी। कोटि प्रणाम भीम आकारी।।
पूजित प्रथम गणप तोहि कारण। मिली शक्ति शिव से हे शिवगण।।
तेरी किरपा होये विधावित। मारे शत्रु निज भक्तन हित।।
जय जय जय जय जय शनिदेवा। तीन ताप के तुम हर लेवा।।
जयति भक्त वत्सल जय निर्मल। जाग्रत हो कलियुग में हर पल।।
ॐ शं शं शं शनिदेव निराले। जय शिव रूप मस्त मतवाले।।
ॐ प्रां प्रिं प्रोम् परम परमेशा। शरणागत के हरहू क्लेषा।।
सूर्यसुत यम यमुना भाई। सन्त मुनि जन महिमा गाई।।
प्रेत पिशाच डाक चण्डाला। भूत निशाचर और बेताला।।
सामने तोरे टिक न पावें। मुखातेज से जरि जरि जावें।।
भक्तन हृदय राखो वासा। करो शनि दोर्भाग्य नाशा।।

कर्म किए का फल तुम देते। मांगो क्षमा दु:ख हर लेते॥
विकट क्लेष शोक संतापा। नष्ट करे हर पाप और शापा॥
कामादि मद दम्भ विस्तारा। देवे जला लगा अंगारा॥
ॐ शर शर शर शौरी सरदारा। दुख झेले क्यों दास तुम्हारा॥
ॐ शनि शनि शनि शनि शनैश्चराया। भक्तन पें संकट गहराया॥
ॐ रों रों रों रों रौद्र रूपा। मेटो समूल भव भय कूपा॥
मेटो ताप कसम तोहे माँ की। राखो लाज छाया की छाँ की॥
मैं कोदन प्रभु अतिहि निभागा। जोड़ा तुमसे प्रेम को धागा॥
पढ़े शनि शर धार दिल माँही। ताको शत्रु जगत में नाँही॥
रख जीभ्या जो छोड़े शनि शर। रोग रहे ना तिस तन ऊपर॥
तेइस दिन तक जपत निरंतर। भूत प्रेत भए 'मनु' छू मंतर॥
करे स्नेहन जपे हमेशा। रक्ष करें शनि अनन्त वेषा॥

रोग भयानक शूल दे, अन्तक तक पहुँचाय।
तेईस सहस्र के जाप से, पूर्ण नष्ट हो जाय॥
शनि शर का नर हृदय से, 'मनु' करे जो जाप।
अपा मृत्यु आवे नहीं, मिट जावे संताप॥

शनिवार उपवास करे, पूजे शिव भगवान।
शत्रु पर विजय पाये वो, हर विधि हो कल्याण॥

वस्त्र काले रंग का, या फिर काली गाय।
शनि दिवस को दान करें, ग्रह दशा का उपाय॥

पीपल में प्रभु वास है, जो जल दे शनिवार।
उस पर देव दया करें, नाव लगावे पार॥

नाव की लौह कील से, ले छल्ला बनवाय।
अंगुली में धारण करे, यह भी परम उपाय॥

श्री शनि शिंगणा साठिका

जय जय जय लम्बोदरा, गौरी ललन गणेश।
निर्मल बुद्धि दान कर, कृपा करो विशेष।।१।।
नमन करूँ गुरुदेव जी, दीजै आशीर्वाद।
कलम लिखे जो दीन की, यह जग राखे याद।।२।।
जयति जय जय शनैश्वरा, श्री शिंगण महाराज।
प्रभु ध्यान में आय कर, पूरण कीजौ काज।।३।।

जय जय जय शिंगणापुर वासी। अतिजागर अगणित सुखराशी।।
छायासुत हे जग विख्याता। उपकारी कलियुग के दाता।।
निरवद्य नाथ असुर संहारि। लख चौरासी के उद्धारी।।
अमिट अचल अनुपम अविकारी। अति दानी अविगत औदारी।।
कहुँ किस मुख से कथा तुम्हारी। सब देवों में महिमा न्यारी।।
महाराष्ट्र में तहसील नेवा। गांव शिंगणापुर शनिदेवा।।
स्वयंभू रूप श्याम शिला धारा। शिंगणापुर का भाग्य संवारा।।
डेढ़ शतक पहले की कहानी। पूर्वज शिंगणापुर ने बखानी।।
अधिक बाढ़ पानस में आई। भई सभी जन को दुखदाई।।
छाई घटा वर्षा भई भारी। बेरी अटकी शिला एक न्यारी।।
बीते कुछ दिन पानी सूखा। थल चर भूख प्यास से कूका।।
फिर उस ओर गये चरवाहे। लेकर अपने सब चौपाये।।
काली शिला देख चरवाहे। अचरज माने लकुटि लगाये।।
एक ने लकुटि जोर से लगाइ। तुरत लहू की धारा आयी।।
देख लहू मन में भय व्यापे। काया रोम अंग सब कांपे।।
घाव दीखने लागा भारी। चमत्कार हुआ विस्मयकारी।।
गऊँए छोड़ गांव में आये। सारा ही विस्तार बताये।।
सकल गांव पहुँचा उस थाना। देख लहू को अचरज माना।।
इसी अचरज में दिवस गुजारा। फैल गया घर-घर विस्तारा।।

एक भगत को शनि चुन्ह लीना। रात सपन में दर्शन दीना॥
श्याम शिला है शनि अवतारी। समदर्शी दुख नाशन हारी॥
भगत बतायो रख मर्यादा। लगे उठाने आई बाधा॥
श्याम शिला हो गई अति भारी। भाग देत सब ही नर नारी॥
उसी दास के सपन में आये। फिर सारा विस्तार बताये॥
रिश्ते से जो भांजा मामा। उठा शिला करें पूर्ण कामा॥
मामा भांजा दोनों आये। शनि रूप वह शिला उठाये॥
मामा भांजा बैल जुताये। तब गाड़ी आगे चल पाये॥
उसी भगत मन लालच आया। कल्पित स्थापन थान बताया॥
गाड़ी रूकी बैल हठ कीन्हा। स्थापन शनि शिला कर दीन्हा॥
धाम हुआ यूँ जग में न्यारा। कलि के देव शनि का द्वारा॥
कीन्ही रक्षा बन परकोटा। खड़े निरावृत बिन किसी चोटा॥
इच्छा लेकर लोढ़ा आयो। पुत्र रूप में धन वो पायो॥
चबूतरा ऊँचा बनवाया। फिर भी शिला को उतना पाया॥
पांच फुट नौ इंच ऊँचाई। एक फुट छः इंच चौड़ाई॥
बिन दरवाजे सब जन सोवे। चौरय नीच कर्म ना होवे॥
लग जावे जिस घर में ताला। दीखै साँप रात में काला॥
जिनको भी विषधर डस लेवे। जहर दूर प्रभु शनि कर देवे॥
जो वर्षा ना होये सुखारी। कौल लगावे मिल नर नारी॥
मिलता बड़ा सुखद परिणामा। बादल बरसे शनि के धामा॥
जो भी निंदा करे दर आके। अंग भये सब आँके बाँके॥
कैसा ये दरबार निराला। उज्जल करे देवता काला॥
करें दूर से नारी दर्शन। इतने से शनि होवे प्रसन्न॥
नहा नर तेल चढ़ावे मल मल। छँटे दूर जीवन की दल दल॥
माँग मनौती ले लो सब धन। पूरण करे हर मंशा थणु गण॥
जाकी शिंगणापुर लौ लागी। अन्न धन पुत्र मुक्ति का भागी॥
लागे जयंती मेला भारी। पतवारी कलि के बलकारी॥

दर्शन करन शिंगणा आवै। रोग दुःख दारिद्रय मिटावै॥
पर नारी जो तके आँख भर। दुख देवे शनिदेव भयंकर॥
व्यथित हुए कारण जिन प्रेता। शनि भगतन का करते हेता॥
गौ रक्ष्य जिस जन का प्रण हो। शनि कृपा से उस घर धन हो॥
जो जग बीच भये निर्नाथा। नाम लेत सर राखे हाथा॥
हिय नरक सम होय क्लापा। निरिंग शनि करें निरसन तापा॥
सब जग अंतक व्यापक रूपा। पार करावै भव-भय कूपा॥
इनके जन सुमिरण में लागो। नशा व्यसन दुर्गुण सब त्यागो॥
नाम शनि का है अति पावन। काम क्रोध मद लोभ मिटावन॥
भक्त उदासी कीर्ति गाई। दर तेरे पे सद्गति पाई॥
एक शत बार पढ़ै जो कोई। आधि व्याधि से छूटे सोई॥
पाठ करे मन से दिन राति। दुख में सुख में भए शनि साथी॥
बनी प्रेरणा भक्तन आशा। 'मनु' घट माँही हुआ प्रकाशा॥
कोई नहीं सम तुमसा भू-पर। कृपा दृष्टि राखो मम ऊपर॥

सब तापों का कर हरण, शिंगणापुर शनिराज।
अनन्त कोटि सुख दीजिए, रख भक्तन की लाज॥
शिंगणा साटिका पढ़ै, धरै सदा शनि ध्यान।
मुक्ति पद अधिकारी हो, जग में होवे मान॥

नमन् नमन् नमन् नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
हे कलि देवा करूँ नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
हे प्रणेता तुम्हें नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
मैं प्रणामी करूँ नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
प्रणतपाल प्रण प्रणत त्वं, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
स्वीकारो शनि मेरा नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
करूँ नमन प्रण्य नमन्, नमन् नमन् शनिदेव नमन्

शनि रक्षा कवच

विनियोग– अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य शनैश्चर देवता मनु भक्त कृत दोहा छन्दः सकल बीज समाहिता मम भक्तिशक्तिनियंत्रिता शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग। (दायें हाथ में जल लेकर 'अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य' से 'पाठे विनियोग' तक बोलकर जल नीचे छोड़ दें, फिर पाठ करें)

ध्यानम्

ॐ सूर्यसुतं महेश अंशं, मातु छाया नन्दनम्।
कालरूपं कृष्णवर्णं, मन्दगते तव वन्दनम्॥

भगवान सूर्य के सुपुत्र, भगवान शंकर के अंशरूप व माता छाया के लाल, जो कालस्वरूप व काले रंग के हैं तथा मंदगति चलने वाले है। मैं उनके चरणों की वन्दना करता हूँ।

सर्वसौख्यप्रदातारं दुष्टदर्पविमर्दकम्।
भक्तार्तिनाशनं देवं, शं शनिं प्रणमाम्यहम्॥

सभी सुख प्रदान करने वाले तथा दुष्टों के अहम् का नाश करने वाले, भक्तों के दुःखों का शमन करने वाले, शं बीज वाले भगवान शनि को मैं प्रणाम करता हूँ।

कोणस्थ, रौद्र, बभ्रु, यम, शनि शौरी पिंगलः।
अधिदैव अक्षय कृष्णा, मन्दअरू पिप्पलः॥१॥

वे कोणस्थ, रौद्रान्त, बभ्रवे, पिंगल, शौरी, मन्द, पिप्पल, शनैश्चर, कृष्ण, किसी भी काल में जिनका क्षय नहीं होता, अविनाशी तथा सभी देवों में प्रधान देवता हैं।

अज अगम्य अजेय अनघ, अल्पभोज विख्यात।
होत विषम पीडा विकट, बढ़े असगुन उत्पात॥२॥

जिनका वर्णन बुद्धि से नहीं हो सकता, जो असीमित, अजन्मा और शोकहीन है तथा अल्प भोजन ग्रहण करने वाले विश्वविख्यात हैं, जिनके

विषम होने पर अत्यधिक पीडा अपशकुन व उपद्रव भोगने पड़ते हैं।

जिनकी सकल संसार में, विस्तृत कीर्ति अनूप।
भूप से वो रंक करें, करें रंक से भूप॥३॥

जिनकी अद्वितीय कीर्ति सकल संसार में व्याप्त है, जो राजा को भिखारी व भिखारी को राजा बना देते हैं।

निर्भय करो रक्षा करो, जान मुझे अनजान।
वन्दन चरणों में करूँ, नाथ तुम्हें पहचान॥४॥

हे देव! मुझे अनजान जानकर मेरे भय का हरण करो, मेरी रक्षा करो, तुम्हीं मेरे नाथ हो, यह जानकर मैं आपके चरणों की वन्दना करता हूँ।

पूरब में शनिदेव जी, पश्चिम में कोणस्थ।
शत्रु शीश खंडित करे, भक्त शीश वर-हस्त॥५॥

शनिदेव जी पूरब में, कोणस्थ पश्चिम में जो शत्रु के शीश को काट देने वाले तथा भक्तों के शीश पर वरदायी हस्त रखने वाले हैं, मेरी रक्षा करें।

उत्तर में बभ्रु सदा, दक्षिण में पिंगल।
अभिघाती का देव जी, कीजै विफल सब बल॥६॥

उत्तर दिशा में बभ्रु तथा दक्षिण दिशा में पिंगल, जो शत्रु मेरे विनाश की इच्छा रखते हैं, उनको बलहीन करें।

अग्निकोण कालाग्नि करे, संकट सारे दूर।
प्रबाधक शनिदेव जी, करें असुर बल चूर॥७॥

पूर्व-दक्षिण में कालाग्नि मेरे सारे संकट दूर करें। वे भक्तों के कष्टों का निवारण करने वाले सभी शत्रुओं के बलों का मर्दन करें।

नैऋत में पिप्पल रहें, लेकर कर में भाल।
नीलवर्ण वायव्य में, बनें दुष्ट का काल॥८॥

पश्चिम-दक्षिण में पिप्पल हाथ में भाल लेकर मेरी रक्षा करें। उत्तर-पश्चिम में नीलवर्ण दुष्टों का काल बन मेरी रक्षा करें।

ईशान यम विराजे सदा, लेकर अंकुश हाथ।
सजग रहे रक्षित करें, प्रहर दिवस अरू रात॥९॥

उत्तर-पूर्व में यम सजग होकर अंकुश हाथ में लेकर दिन और रात के सभी प्रहरों में मेरी रक्षा करें।

ऊपर रहे शौरी सदा, नीचे देवा मंद।
भव बन्धन का नाश कर, करें हर्ष आनंद॥१०॥

शौरी ऊपर से व मंदगति नीचे की ओर से भव बंधन मायादि बंधन व दुष्टों का विनाश कर हर्ष और आनन्द प्रदान करें।

दाएँ विराजे वज्रदेह, बाएँ छाया लाल।
दशों दिशा रक्षित करें, शनिदेव महाकाल॥११॥

दाएँ से वज्रदेह, बाएँ से छाया माँ के सुत दशों दिशा सब और से महाकाल शनि मेरी रक्षा करें।

दिव्य देह रक्षें शिखा, सिर पर शोभे शांत।
घोर विराजे ललाट में, अतुलित बल विक्रांत॥१२॥

दिव्य देह शिखा (चोटी) की सिर के ऊपर शांत रक्षा के लिए विराजित हों, मस्तक की घोर जो अपार बलशाली व प्रतापी हैं, मेरी रक्षा करें।

जटाधर सदा केश की, रौद्र रहे भ्रू-मध्य।
भव्य विराजे भौंह में, रोमकूप सुरवन्द्य॥१३॥

बालों की जटाधर भौंह, बीच रौद्र भव्य भौंह की सुरवन्द्य रोमकूप में स्थित होकर रक्षा करें।

नाकद्वार में ही रहें, ग्रहराज और खञ्ज।
आँख बीच विश्वस्थ हों, शमन शीघ्र सब झंझ॥१४॥

नाक के द्वारों पर दाएँ ग्रहराज, बाएँ खञ्ज व आँखों के बीच विश्वस्थ सभी तूफानों व कष्टों का शीघ्रता से शमन करें।

शिखिकण्ठ रक्षा करें, दोनों कर्ण की आन।
केतु कपोल रक्षा करें, भीषण रक्षें घ्राण॥१५॥

दोनों कानों की शिखिकण्ठ, दोनों गालों की केतु और भीषण घ्राण शक्ति की रक्षा करें।

कर्णमूल क्रोधन बसें, दीर्घ नासिका माँहि।

करें प्रहार रिपु पुंज पर, जान भीषिका खाँहि॥१६॥

कान के मूल में क्रोधन, नासिका में दीर्घ वास कर मेरे महावैरियों के समूह पर प्रहार कर उन्हें विकट विपत्ति जानकर उनका भक्षण करें।

कृष्ण वर्ण रक्षा करें, ऊपर वाले ओठ।
आत्म-भू रक्षा करें, बसकर मम अधरोठ॥१७॥

ऊपर वाले ओष्ठ की कृष्णवर्ण व नीचे वाले ओष्ठ की आत्म-भू स्थित होकर रक्षा करें।

सूर्यपुत्र जिह्वा बसें, करें वाणी कल्याण।
दुर्निरीक्ष्य दन्तावलि, करें नाथ परित्राण॥१८॥

जिह्वा की सूर्यपुत्र वाणी का कल्याण करते हुए रक्षा करें व दंत पंक्तियों की दुर्निरीक्ष्य नाथ पूर्ण रूप से रक्षा करें।

कोटर नेत्रों की करें, कटि रक्षे बली मुख।
मिटे अमंगल तीव्र गति, देवें अविलंब सुख॥१९॥

दोनों नेत्रों की कोटर व बलीमुख मेरी कमर की रक्षा करें, जिससे अमंगल तीव्रता से नष्ट हों व शीघ्रता से सभी सुख मुझे मिलें।

भयदायी भुजा रक्षे, संवर्त्तक दोनों कंध।
शनैश्चर नाभि में रहे, बनकर अरि गल फंद॥२०॥

भयदायी बाँहों की, संवर्त्तक दोनों कंधों की, नाभि की शनैश्चर, दुष्टों के गलों का फंदा बनकर रक्षा करें।

कंठ विराजे विभीषणा, सदा बचावे अंग।
अखण्ड दण्ड धारी शनि, रहे सदा ही संग॥२१॥

गल में विभीषण स्थित होकर सूक्ष्म नाड़ियों की व अखण्ड दण्डधारण करने वाले शनि सदा साथ रहकर रक्षा करें।

ग्रहेश्वर ग्रीवा बसे, पोषे चंद्र समान।
महाबली रक्षा करें, मेरुदण्ड की आन॥२२॥

ग्रहेश्वर ग्रीवा में स्थित होकर जैसे चन्द्रमा वनस्पतियों का पोषण करता है, ऐसे पोषण करें व महाबली मेरी रीढ़ की रक्षा करें।

कंठ नली कालात्मा, बसें बना निज धाम।
भयहारी निर्भय करो, करूँ स्तुति प्रणाम॥२३॥

गल नलिका में कालात्मा धाम बना स्थित हों, हे भयहारी मुझे भयहीन कीजिए, जिससे मैं आपकी स्तुति वंदन कर सकूँ।

सब चक्रों की रक्षा करें, कलीनाथ सुरराज।
भक्त ढाल बन हो खड़ें, काँपे असुर समाज॥२४॥

शरीरस्थ सभी चक्रों की, कलियुग के नाथ सुरराज रक्षा करें व सदा भक्तों की ढाल बनें, जिससे असुरों में भय व्याप्त हो।

खद्योत रक्षें अंगुलिका, श्री ईशान नखवृन्द।
कुक्षिदेश भुवनेश्वर, बसें सदा सानन्द॥२५॥

अंगुलियों को खद्योत व नखों को ईशान व भुवनेश्वर मेरे कुक्षिप्रदेश में आनन्द सहित स्थित होकर रक्षा करें।

राशीनाथ रक्षा करें, नित्य मम स्तन देश।
विनशे शोक मन का 'मनु', काटे सभी क्लेश॥२६॥

मेरे स्तन प्रदेश की राशीनाथ, मेरे मन के शोक को खत्म कर रक्षा करें।

सिद्धसंकल्प हृदय की, रक्षा करें सदैव।
भीषण उदर समाय कर, नाशे सब दुर्दैव॥२७॥

वे सिद्धसंकल्प मेरे हृदय की सदैव रक्षा करें व भीषण पेट में स्थित होकर मेरे दुर्भाग्य का विनाश करें।

कालपुरूष रक्षें सदा, मर्मस्थल गुह्यांग।
प्रलयंकर नित ढाल बन, रक्षे मम लिगांग॥२८॥

नाजुक गुप्तांगों की कालपुरूष व मेरे लिंगादि की प्रलयंकर ढाल बनकर रक्षा करें।

महाघोर गुद की करें, रक्षा नित्य आय।
असुर संहारक देव शनि, प्रतिकूलता खाय॥२९॥

नित्य ही महाघोर मेरी गुदा की रक्षा करें व असुरों का दलन करने वाले शनि मेरी सभी प्रतिकूलताओं का हनन करें।

भैरव करें सब ओर से, टखनों को निर्मल।
पाद पृष्ठ रक्षित रखें, नाशे विरोधि दल॥३०॥

भैरव सभी ओर से मेरे टखनों को निर्मल करे व विरोधियों के दल का विनाश कर मेरे पैरों के पिछले भाग की रक्षा करें।

भयानक रूप जानु की, वरेण्य दोऊ जंघ।
रक्षें नित्य देव जी, लेकर कर में खंग॥३१॥

नित्य हाथ में तलवार लेकर वरेण्य दोनों पिंडलियों की व भयानक मेरे घुटनों की रक्षा करें।

कृष्ण रक्षें पादांगुली, बन दुर्दम दुर्जेय।
तलवें रक्षे महासिद्ध, नखगण धरमी ध्येय॥३२॥

पैर की अंगुलियों की कृष्णा प्रबल व सदा विजयी रहने वाले तलवों की महासिद्ध व नखगणों की महान धरमी रक्षा करें।

त्वचा रखें धनुर्धर, अशुष्क सदा अभेद्य।
अस्थि मज्जा माँस मेद, शुद्ध रक्त अरू स्वेद॥३३॥

धनुर्धर त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) को शुष्क न होने दें, बिना भेदने वाली कठोरतम करें, रक्त व पसीने को, मज्जा, वसा, माँस व हड्डियों की शुद्ध कर रक्षा करें।

आँतों की रक्षा करें, द्विज श्रेष्ठ द्विज रूप।
पित्त रखें निर्मल मेरा, नानाद्विपाधि भूप॥३४॥

मेरी आँतों को द्विजों में श्रेष्ठ व द्विज रूप धारी सुरक्षित रखें व नानाद्विपों का पालन करने वाले मेरे पित्त को शुद्ध बनाये रखें।

पद्म कोष तन में बसे, जहाँ जहाँ जिस देश।
रूप चतुर्भुज धार कर, रक्षो क्रूर सविशेष॥३५॥

तन के जिस-जिस स्थान पर पद्म कोष स्थित हैं वहाँ पर चतुर्भुजधारी क्रूर मेरी रक्षा करें।

कफ को श्री तिथ्यात्मा, रखें सदा निर्दोष।
यमभ्राता नखतेज को, आजीवन अभिपोष॥३६॥

मेरे कफ को श्री तिथ्यात्मा सदा निर्दोष रखें व यमभ्राता नखों के तेज का जीवन भर पोषण करें।

संधिस्थल तन के सभी, मार्गी से परित्रात।
अभिमर्दन अरि हेतु सदा, बनो निषंगी तात।।३७।।

मेरे तन के सभी संधिस्थल (जोड़) मार्गी से रक्षा प्राप्त हों, वे खड्‌गधारी धनुर्धारी मेरे पिता होकर शत्रुओं को सदा ही कुचल डालें।

गणना से जो रह गये, इस तन के संस्थान।
मृत्युंजय रक्षित रखें, कर लेकर धनु बाण।।३८।।

इस तन के ऐसे सभी संस्थान जिनका यहाँ वर्णन नहीं हुआ, हाथों में धनुष बाण लेकर मृत्यंजय उनकी रक्षा करें।

अहंकार मन बुद्धि भी, सदा जो आत्म साथ।
रक्षित कर पोषण करे, यमुनानुज शनि नाथ।।३९।।

अहंकार मन बुद्धि भी जो अत्यन्त सूक्ष्म व आत्म साथ रहते हैं, वे यमुना के भाई मेरे शनि नाथ उनका पोषण करें व रक्षा करें।

प्राणापान उदान भी, व्यान संग समान।
प्राण रूप पिंगल करें, सभी प्राण बलवान।।४०।।

प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान– इन सभी पाँचों प्राणों को वे प्राण रूप पिंगल बलवान करें।

जय गगन जल धरनी से, भानुज हृदय पाप।
सर्वजित सभी भयों से, नखेश नाशों ताप।।४१।।

आकाश, जल, पृथ्वी से जय, हृदयस्थ सभी पापों से, भानुज सब प्रकार के भयों से सर्वजित व सभी तापों से नखेश मेरी रक्षा करें।

प्रथम प्रहर दिवस में, रक्षें श्री महाकाय।
द्वितीय तृतीय चतुर्थ में, बचावें राज्यदाय।।४२।।

दिन के प्रथम प्रहर में महाकाय व द्वितीय, तृतीय और दिन के अंतिम प्रहर में राज्यदाय मेरी रक्षा करें।

रात्रि आरम्भ सर्वज्ञ, घन अर्द्ध रात्रान्त।

गृह बीच अन्दर बाहर, रक्षें मम कृतान्त।।४३।।

रात्रि के आरम्भ में सर्वज्ञ, घन अर्द्धरात्रि में, रात्रि के अन्त में घर के बीच में अन्दर व बाहर कृतान्त मेरी रक्षा करें।

शत्रु से रणभूमि में, सदा करावें जीत।
वनचर हिंसक जीव से, रक्षें वरिष्ठ अजीत।।४४।।

रणभूमि में शत्रु से, वन में विचरण करने वाले हिंसक जीवों से कभी ना हरने वाले अजेय वरिष्ठ मेरी रक्षा करें।

पाखण्ड से प्रमाद से, लगे न मुझे कलंक।
जन सेवा अपराध से, कृशतनु करे निरंक।।४५।।

पाखण्डियों से, आलस्य से मेरी रक्षा कर कृशतनु मुझे जन सेवा के समय हुए अपराधों से विमुक्त करें।

पिशाच व ब्रह्म राक्षस, प्रेत अरू बेताल।
भूत, यक्ष को भी करें, योगाधीश निढाल।।४६।।

भूत, पिशाच, यक्ष, ब्रह्मराक्षस, प्रेत, बेताल जो भी मेरे वैरी हों, उन्हें योगाधीश निढाल कर मेरी रक्षा करें।

बुरे स्वपन शकुन गति, दुर्भिक्ष अपथ उत्पात।
दुर्व्यसन संताप विषभय, रक्षें राशिग नाथ।।४७।।

बुरे स्वप्न, अपशकुन, गति, अकाल, दुर्गम मार्ग, उत्पात, बुरी आदतें, दुखों और विष के भय से राशिग नाथ मेरी रक्षा करें।

ग्रह-पीडा उच्चाटनादि, काल भय सकल रोग।
क्षुधा-तृषा निवारिये, विशालाक्ष महोग।।४८।।

ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीडा, शत्रु द्वारा किए गए उच्चाटन काल के भय व सकल रोग, अधिभूख व अधिप्यास का विशालाक्ष महोग निवारण करें।

कलिदोष कुपथ्य मार्ग से, रक्षे अक्षयफलदाय।
योग विघ्न अपवाद से, राहु सखा बचायें।।४९।।

कलियुग में उत्पन्न दोषों से, गलत कार्यों से अक्षयफल देने वाले व योग

में आने वाले विघ्न व बदनामी से राहु सखा सदैव मेरी रक्षा करें।

कालकृत रक्षा करें, शब्द स्पर्श गंध रस।
रूप रहे रक्षित सदा, निकट न आवे अयश॥५०॥

शब्द, स्पर्श, गंध, रस आदि विषयों का अनुभव करते समय कालकृत रक्षा करें व मेरे रूप, कीर्ति का विस्तार करें।

लक्ष्मी यश अरू कीर्ति, पुत्र भी रहे सबल।
भार्या की रक्षा करें, महाग्रह संग दल॥५१॥

महाग्रह दल सहित धन, यश, पुत्र तथा मेरी भार्या की रक्षा करें।

आयु को रक्षें सदा, गोत्र की रखें लाज।
धर्म मेरा रक्षित करें, सिद्धेश्वर महाराज॥५२॥

सिद्धेश्वर महाराज मेरा धर्म, गौत्र तथा आयु की सदैव रक्षा करें।

सत्व बढ़े रज तम घटे, रहे सदा ही शांत।
मन को भी कंचन करे, गुणाढ्य अरू अक्रांत॥५३॥

इस तन में सतोगुण बढ़े व रज, तम (शांति पाये) घटे व अविजित गुणाढ्य मेरे मन को भी पावन व त्रिगुण को दोष रहित करें।

विमुक्ति कर्मबन्धन से, करे भैंसा वाहन।
वैरी विषधर सर्पों का, कुचले जटाधर फन॥५४॥

शनि वाहन भैंसा मुझे सभी कर्मबन्धनों से मुक्त करे व मेरे वैरी भयंकर विष वाले सर्पों का जटाधर फन कुचल डालें।

वामवेध जन्मांग से, रहे शनि जी दूर।
भीषण द्वादस भाव में, न डालें दृष्टि क्रूर॥५५॥

शनि जी वामवेध व जन्मांग से दूर रहवें और बारह भावों में भीषण शनि किसी भी स्थान में अपनी क्रूर दृष्टि न डालें।

कुजाय न्यास क्रम से, करे पाठ परिपूर्ण।
सौम्य विषय विकार से, रक्षें मम सम्पूर्ण॥५६॥

मंगल शनि रक्षा कवच को न्यास क्रम से परिपूर्ण करें व सौम्य विषय विकारों से मेरी रक्षा करें।

काल बचावें काम से, गिद्ध देव अपराध।
गज बचावें नरकों से, पाकर गति अबाध॥५७॥

वे कालरूप मुझे काम के तीव्र आघात से व उनका वाहन गिद्ध देव सेवा में किए गए अपराधों से, उनका वाहन हाथी मुझे नरकों से अपार गति पाकर बचायें।

निश्चल बाधाएँ सकल, नष्ट करे तत्काल।
टाले अकाल मृत्यु शनि, काटे द्वन्द्वा जाल॥५८॥

सभी बाधाओं को उसी क्षण नष्ट कर अकाल मृत्यु को टालकर व सभी द्वन्द्वों को काटकर वे निश्चल शनि मेरी रक्षा करें।

तपोरूप निज क्षेत्र से, देवें सिद्धि अनेक।
नीलछत्र रक्षित रखें, सकल स्तुति मम लेख॥५९॥

तपोरूप (कल्याणकरी क्षेत्रों में) अपने अधिकार क्षेत्रों में सिद्धि प्रदान करें व मेरे द्वारा विरचित सभी स्तुति व लेखों को नीलछत्र रक्षित रखें।

गोचर जन्म लग्न में, महादशा आ जाय।
शनि रक्षा कवच शक्तिवत, करो पठन मन लाय॥६०॥

गोचर में जन्म, लग्न में या शनि की महादशा में साढ़ेसाती, ढैय्या, अन्तर्दशा में शनि रक्षा कवच का शक्तिवत पाठ कीजिए।

भय बन्धन पीड़ा सकल, ग्रह बाधा हो दूर।
जन्म लगन दोष हर दें, धन यश सुख भरपूर॥६१॥

भयवन्धन सकल पीड़ा व जन्म लग्न से उपस्थित दोष अन्य ग्रह द्वारा उपस्थित बाधा दूर कर यह शनि रक्षा कवच धन, यश और पूर्ण सुख प्रदान करता है।

सब संकट दुर्भिक्ष में, कवच ले हृदय धार।
वाम दृष्टि रक्षा करें, बन अभेद्य प्राकार॥६२॥

सभी संकटों में, अकाल में यह कवच हृदय में धारण करने से वे वामदृष्टि, आपके चारों ओर अभेद्य वृत बनाकर आपकी रक्षा करेंगे।

ब्रह्मचर्य अरू मूक हो, पठन करे शुद्ध चित्त।
हो पूजित महि पर सदा, होकर कवचावृत्त।।६३।।

ब्रह्मचारी व मौन होकर शुद्ध चित्त से जो इसका पठन करते हैं, कवचधारी होकर वे इस भूमि पर सदा वन्दनीय होते हैं।

दुर्लभ शनि का कवच यह, करे पाठ त्रिकाल।
अपराजित भू-लोक पर, बनें शनि प्रतिपाल।।६४।।

शनि का यह कवच अति ही दुर्लभ व शीघ्र फलदायी है जो लोग इसका पाठ करते हैं, वे इस पृथ्वी लोक पर अपराजित होकर शनिदेव की कृपा प्राप्त करते हैं।

इति श्री शनिभक्त मनु विरचितं शनि रक्षा कवच स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शनि प्रार्थना

किसी दूर के परिचितों में एक ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। अभी वह अस्पताल में ही था, मैंने शनि भगवान से प्रार्थना की। मेरा गला अन्दर से घाव से भर गया। तीन दिन तक कुछ नहीं खा पाया, परेशान रहा। तभी एक भक्त ने प्रार्थना लिखने को कहा। बस फिर क्या था प्रार्थना लिखी गई और घाव रात्रि को ही छूमंतर हो गया। व्यक्ति भी पूर्णरूपेण ठीक हो गया। वही प्रार्थना नीचे दे रहा हूँ-

शनि कष्टों ने मुझे आ घेरा। दारिद्रय मुझको सताय रहा।।
रहे हाड़ चाम तन में केवल। मुख फिर भी गुण तेरे गाय रहा।।
कर किरपा देओ हे नाथ जी अब। चरणों में शीश नवाय रहा।।
निज भक्ति देओ जो आप मिलो। मम टेर शनि मैं सुनाय रहा।।
प्रभु पाप हो कुछ अक्षमा कीजै। मन दीप बना के जलाय रहा।।

श्री शनिदेव प्रसन्नाष्टक

सूर्य छाया सुत कहलावें, जग जन श्री शनिदेव उच्चारें।
मन्दगते महिमा अति भारी, नील वस्त्र हैं तन पर धारे।
भक्तन के भारी संकट को, पल माँही शनिदेव निवारें।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

न्याय उपाधि से शनि विभूषित, कलि देवा हैं सबसे न्यारे।
महाज्ञानी हो योगी योगेश्वर, सब भक्तन को प्राणों से प्यारे।
मग्न सदा कृष्णानन्द रहते, गूँजे यश संसार में सारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

देवें योग समाधि साधन, मुक्ति कामी आये जो द्वारे।
नेह सभी जन के प्रति राखें, दुष्टन को भी नाहीं विडारे।
ऋषि मुनि दर्शन पा हर्षें, और गावें गुणगान तुम्हारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

राशीफल तुम शनि भुगताओ, राशी नाथ तुम्हें ही पुकारें।
शुभकर्मी के सदा सहाई, पातकी नीच को दो दुख भारे।
कीरति नेक बखाने शनि हम, वन्दन करते तेरा सारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

साढ़े साती निर्मल करती, वाणी शनि की संशय टारे।
शिव स्वरूपा भव सागर से, नाम जहाज बैठा के उतारे।
पल में योग अमर पा जाये, जिन शनिदेव की शरण सिधारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

दयानिधि दीनन हितकारी, करूणा सागर तुम अविकारे।
वेद पुराण बखाने महिमा, देवन के भी काज सँवारे।

तन-मन-धन अर्पण सब तुमको, कर निर्मल हे पातकहारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

चौरासी लख त्राश मिटावें, जो ले शरणा ध्यान विचारे।
अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, नाशे अविद्या मूल पिटारे।
मन आनन्द शनि भर देते, जो जन शनि का नाम उच्चारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

शनि चरणन पे वारी जाऊँ, छोड़ूँ जगत के कारज सारे।
काल पाश से मुक्ति देओ, भवबन्धन के मेटन हारे।
भेंट नहीं कोई मेरे संग में, 'मनु' न्यौछावर प्राण हमारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

दोहा- निर्मल मन श्रद्धा धरें, शनी नवावें शीश।
तापर शनैश्चर खुश रहें, आशिश देत कपीश।।

तू ही माता पिता मेरा बहन तू भैया है।
मैं सुदामा हूँ तेरा, तू मेरा कन्हैया है।।
तू ही भगतों की लाज का शनि रखैया है।
तू ही गरीबों के भण्डार का भरैया है।।
बड़े-बड़े पापियों के पाप का छुड़ैया है।
'मनु'' मन रात दिन लेता तेरी बलैया है।।

तुम्हीं विश्व रूप मैंने देव जी ये पाया है।
तुम्हीं में कृष्ण शिव सूर्य समाया है।
सभी दुष्टों को तुमने काल बन डराया है।
'मनु' भक्तों की तुमने लाज को बचाया है।।

शनि कष्ट निवारण मन्त्र

दो०- संकट पड़े गरीब का, ना जग देता साथ।
तेरे द्वारे आ गया, सुध लो हे शनी नाथ।।

सुनाऊँ शनिदेव फरियाद ऐसी,
कि शायद कभी ना सुनी होगी वैसी।
छाया है भारी कष्टों का झमेला।
कैसे मैं इसको सहूँगा अकेला।।
मेरी आज तुमसे यही है लड़ाई।
ना देवा मुँह मोड़ो मेरी बारी आई।।
कहूँ इस कलह की कहाँ तक कहानी।
कि दुनिया मेरी अब हुई है वीरानी।।
आया हूँ शरणा, ना मुख को छिपाओ।
ऐ दीनों के मालिक, गले से लगाओ।।
जग में नाम तेरे का बजता है डंका।
मिटाओ हिरदय की शनिदेव शंका।।
देख तेरे दर का प्यारा नजारा।
अब जाग इस गाफिल ने तुझको पुकारा।।
मैं पापी अधम हूँ बड़ा ही अभागा।
तेरे नाम से जोड़ा है प्रेम धागा।।
जो आते हैं दर तेरे पे शनिदेवा।
दया कर के करता ग्रहण उनकी सेवा।।
कहता हूँ शनि, मेरे पाप हैं भारी।
मुझ पर जो छाये, वे शाप हैं भारी।।
विश्वास है तेरी मुझे कृपा की डोर पर।
मेरे गुनाह माफ कर रहमत के जोर पर।।
काली छाया कष्टों की, मंडराने लगी अब।
जीना हुआ दूभर मेरा, हो गया गजब।।

दर तेरे आ गया हूँ शनि अब न जाऊँगा।
मर मिटूँगा या तेरी कृपा मैं पाऊँगा॥
दया दृष्टि फेर दो, इस अनाथ पर।
मुझको भरोसा आज मेरे कृपानाथ पर॥

दर तेरे होते रोज चमत्कार बहुत हैं।
श्री शनिदेव तेरे व्यापार बहुत हैं॥
तुझको पता है शनिदेव भक्तों के हाल का।
तू ही तो मात देता, कलियुग की चाल का॥

है तू ही रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी।
तू ही है लाज शनि भक्तों की आन की॥
तुम ब्रह्मा तुम विष्णु और तुम ही महेश हो।
तुम ही गणेश शारदा और तुम ही शेष हो॥

लाखों की बिगड़ी हे शनि तुमने बनाई है।
आज भक्त दर तेरे देता दुहाई है॥
परिवार जो मेरा रहा, हुआ अनाथ है।
तन पर नहीं है वस्त्र, ना घर में दाल भात है॥

हाथों में ना ही फूल फल, आँखों में नीर है।
हृदय के लाख टुकड़े हैं, जलता शरीर है।
अब मौत का सामान देख हुआ अधीर मैं।
कैसे सहूँगा शनिदेव भारी पीर मैं॥

कितने ही जलते मरतों को तुमने बचाया है।
वीरानों में सदा ही तुमने, फूल खिलाया है॥
स्वीकार कर शनि मेरे कोटि प्रणाम को।
विस्तार दे फिर आज अपने पावन नाम को॥

शिंगणापुर में वास तेरा शिलारूप है।
तू ही है ईष्ट सबका वहाँ तू ही भूप है॥
है आज तेरे नाम का लगता वहाँ मेला।

सब है तेरे भक्त वहाँ ना गुरू चेला॥
कर्मों के सारे भोग से निजात दिला दे।
शनिदेव अपने नाम की बूँटी तू पिला दे॥
हूँ बड़ा आकिल, मुझे कुछ होश नहीं है।
ए देव शनि तेरा इसमें दोष नहीं है॥
दर-दर भटकता रहा, तेरे दर पे ना आया।
दूसरा कोई दर फिर भी मुझको ना भाया॥
जब सुना दर तेरे सदा रहमत है बँटती।
दु:ख की सब जंजीर तेरे दर पे है कटती॥
उन हवस परस्तों के साये से बचा भागा।
गफलत की भारी नींद से मनवा तभी जागा॥
फिर बनाया नाम को तेरे ही आधार।
अब विनती मेरी सुन ले शनि परवर दिगार॥
है कौन काम जग में, जो तेरे वश में नहीं है।
रूतबा तेरा ऊँचा बड़ा, कोई यूँ ही नहीं है॥
तेरा बड़ा ही शनि है इतिहास निराला।
बड़े से बड़ा काम चुटकियों में कर डाला॥
हिंदू हो या मुस्लिम या फिर सिक्ख ईसाई।
सबने ही शनिदेव तेरी शरण है पाई॥
किस्मत के ताले खोल शनि तुमने रख दिये।
भक्तों को सुधा पिलाई खुद प्याले विष पिये॥
दुष्टों को काली रात, तेरा नाम है शनी।
भक्त को उबारना, तेरा काम है शनी॥
हृदय में बसाकर जो शनि नाम आ गये।
ओ जग के पालन हार तेरी कृपा पा गये॥
भरता है जो भी पेट वो है शनी हमारा।
है तू ही जगदाधार शनी तू ही करतारा॥

भोगेगा तेरा भक्त क्यों कष्ट की कारा।
तेरा द्वार सबको है मोक्ष का द्वारा॥
तू ही है सिरजन हार, सिरताज तू ही है।
अब डूबते इस भक्त की लाज तू ही है॥
तुझको है शनि वास्ता तेरे जमीर का।
बिगड़ा तू आज काज कर मुझसे फकीर का॥
ये मेरी जिंदगी पर अहसान हो तेरा।
'मनु' को भी शनिदेव कुछ भान हो तेरा॥
कीचड़ में कमल खूब तुमने खिलाये हैं।
मरते हुए बहुत तुमने ही जिलाये हैं॥
ये गगन चाँद सितारे सारे गवाह हैं।
मेरे दिल में बस चुकी शनि तेरी चाह है॥
अन्धों को तूने आँख दी, बाँझों को पुत्र दिये।
दी कोढ़ियों को काया, बुजुर्गों को सुख दिये॥
आँधी से तूफानों से, कश्ती को निकाला है।
शनि नाम का विरद तुमने ही सम्भाला है॥
घबरा के जो दुःखों से मरने को थे चले।
रहमत से रोक डाले तुमने ऐसे काफिले॥
संकट में भक्तों पर किया एहसान है।
हर भक्त में बसे शनी तेरे प्राण हैं॥
भक्तों के लिये तू ही खुद जानो जहान है।
रहा भक्त जहाँ टेर वहीं तेरे कान हैं॥
गाते जो रोज मुश्किलों में शनि नाम हैं।
हो जाते हैं उजाले, कटें संकट तमाम हैं॥
है तू ही जग में सार, कुछ भी सार नहीं है।
तेरे द्वार जैसा, दरबार नहीं है॥
कलियुग में आज भारी अनाचार बढ़ रहा।

हुई धर्म की हानि अत्याचार बढ़ रहा॥
ऐसे में कहाँ जाऊँ, न कोई ठौर ठिकाना।
दर तेरे सत्य हँस रहा है, मैंने ये जाना॥
मुझको अपने प्रेम की तू राह दिखा दे।
कर मेरा कल्याण, सोया भाग जगा दे॥
चिंताएँ सारी मेरी, हो जाएँ छू मंतर।
जले प्रेम ज्योत सदा मेरे हिय अन्दर॥
सुमिरण सदा जिह्वा से तेरा करता रहूँगा।
मैं साधुओं की झोली लाजमी ही भरूँगा॥
प्रचार तेरा करूँ, ले हाथ पताका।
अब तो सँवार बिगड़ी मेरी, हे शनि दाता।
है आज इम्तिहाँ तेरे प्रेम का शनी।
पत्थर से हीरा कर मुझे लाज रख अपनी॥
विनती करे भक्त मनु संसार संग।
जमाना सदा गाए शनि मेरा ये अभंग॥
त्रिकाल ज्योति जगा शुद्ध मुख से जो गाए।
जीवन में शनिदेव की कृपा वो पाए॥
हृदय में धारण करे, शनी वचन मान।
युगों युग याद रखे, उसको ये जहान॥
भूत प्रेत राक्षस बेताल हो जहाँ।
कष्ट निवारण जाप कर शुद्धि हो वहाँ॥
मन्त्र शनि कृपा का, ये बड़ा निराला।
संकट में जपने वाले को अभय कर डाला॥
दीनों की दूर दीनता हो, इसको जाप कर।
शनि पुत्र की आकांक्षा भी देते पूरी कर॥

दोहा– कष्ट निवारण मंत्र को, लीजै मन में धार।
शनि कृपा 'मनु' मिल जाय, बढ़ें सकल व्यापार॥

शनिवार व्रत कथा

नमन करूँ गणनायका, सुमिर शारदा मात।
कंठ विराजो शारदे, बनिये गणपति हाथ।।
बजरंगी रघुनाथ को, पूजूँ सीता साथ।
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्ना, करें सुखद प्रभात।।
करूँ शनी आराधना, देखूँ ना दिन रात।
आदित्य संग बृहस्पति, सफल करो पुण्यार्थ।।
कथा शनि व्रतवार की, करता हूँ आरम्भ।
मार्ग दर्शन कीजिए, त्रिपुरारि जगदम्ब।।

हिन्दुस्तान के मध्य बस्ती, उज्जयनी एक पावन नगरी।
महाकालेश्वर पावन लिंग से, बनी सुंदर मन भावन नगरी।
चक्कवत विक्रम न्यायकारी, इस नगरी के बन अधिकारी।
प्रजा का कल्याण हैं करते, भगवन का भी नाम सुमिरते।
योद्धा परम थे शक्तिशाली, महाकाली की किरपा पाली।
सभी कलाएँ निधि में डाली, करे सभी जन की रखवाली।
प्रेमवीर प्रेमी था जन का, बजता विकरम नाम का डंका।
करता था सम्मान सभी का, ज्ञानी पंडित संतन जी का।
अनेक बरस किया राज नगर पर, रहता संग बेताल गुणी खर।
नव-रत्नों से दरबार सुसज्जित, दुश्मन रहते थे सब लज्जित।
उग्र तपस्या विकरम कीन्ही, सब देवों की किरपा लीन्ही।
दिया इन्द्र वरदान अनोखा, स्वर्ग यात्रा का मिला मौका।
इन्द्र दीपक राग सिखाया, सहस्त्र बरस जियो आशिष पाया।
बैठाकर सिंहासन अपने, किये पूरे विक्रम के सपने।
तीन बार जा स्वर्ग गमन को, महकाया इस धरा चमन को।

राज करें राजा न्यायकारी, प्रजा रहने लगी सुखारी।
देव लोक में हुआ फिर झगड़ा, बढ़ते-बढ़ते बढ़ गया रगड़ा।
दो०- अंधकार अभिमान का, छाया नभ के लोक।
बल पड़े देव ललाट पर, कोई न पाया रोक।।
सब देवों में ठन गई तन गई, हममें सब में बड़ा है कौन।
देवराज निर्णय कैसे हो, खड़े रहे वो होकर मौन।
सूझा एक उपाय कहा, आप मृत्युलोक में जाइये।
राजा विकरम न्यायकारी, उनसे न्याय कराइये।
पहुँचे नवग्रह राजा जी, विकरम के दरबार में।
कैसे न्याय हो इन देवों का, पड़ गये सोच विचार में।
सोचा कुछ आसन लगवाये, उनके एक कतार में।
बड़ा वही जो देर से बैठे, कहलाये संसार में।
बृहस्पत बैठे, सूर्य बैठे, चन्द्र देव भी बैठ गये।
बुध मंगल राहू केतु भी, अपना आसन ग्रहण किये।
धर्म संकट आया राजन पर, शनिदेव पिछवारी थे।
सब देवों में शक्तिशाली, वो ही अमंगलकारी थे।
हंसे बृहस्पति हंसे सूर्य, हंस पड़े वहाँ देव सभी।
आँखें क्रोध से लाल हो गईं, तनी शनि भृकुटि तभी।
मुझसे वैर लेकर राजन, तुमने अच्छा नहीं किया।
क्या समझकर तुमने मेरा, नृप विकरम अपमान किया।
चन्द्र दशा सवा दो दिन, बुध सूर्य शुक्र आधा मास।
दो माह रहे सोम और मंगल, गुरू रहते हैं तेरह मास।
राहु केतु अठारह महीने, साढ़े सात वर्ष मैं आऊँ।
अन्न धन से खाली मैं कर दूँ, तन तक भी मैं बिकवाऊँ।
बीता कुछ समय राजन जी, भूल गये बातें सभी।

विकरम के दरबार में, घोड़े वाला आ गया तभी।
पसन्द किया राजा जी ने एक, भंवर घोड़े का नाम था।
पवन समान दौड़ना, ये ही उसका काम था।
लेने परीक्षा विक्रम जी, अश्व पीठ पर हुये सवार।
कर में पकड़ लगाम हुए, दौड़ाने को अश्व तैयार।
दौड़ पड़ा तेजी से वो, भयानक वन में पहुँच गया।
गिरा दिया राजा जी को, जाने कहाँ गायब हुआ।
जंगल में जब राजा जी, भूख प्यास से व्याकुल हुए।
कौन वन है कौन दिशा है, जानने को आकुल हुए।
लगे चिल्लाने जंगल में जब, अंधकार छाने लगा।
पूरा जंगल एक स्वर में, तभी गीत गाने लगा।
दो०- प्यास बढ़ी भारी भई, भूप भए बेचैन।
तन मन सब व्याकुल हुआ, नीर भरे दोउ नैन।।
ग्वाला एक उस रस्ते आया, राजा जी को शीश नवाया।
कुशल क्षेम राजा का पूछा, जान बुद्धि से कुल का ऊँचा।
लाकर नीर नदी का पिलाया, पानी पिलाकर इनाम पाया।
मध्यमा से मुद्रिका निकाली, ग्वाले को नृप ने दे डाली।
ग्वाले ने मार्ग दिखलाया, ताम लिंदा पुर नगरी लाया।
तामलिंदा पुर पहुँच भूप ने, पूर्ण किए अमाशय सपने।
बैठ लगे करने विश्राम, ताम लिंदा पुर नगर के धाम।
भोर भई रवि सर पर आये, राजा जी आकर के जगाये।
उसी चौक खुली एक दुकान, जहाँ मिटी राजा की थकान।
नंदलाल था सेठ सर्राफ, बोला सज्जन उठिये आप।
बैठे थोड़ा जाकर दूर, फरमाये विश्राम हुजूर।
करने लगे सेठ फिर काम, लगी भीड़ न मिला आराम।

धन वर्षा हुई अजब अनोखी, आज तलक ना मैंने देखी।
दरसन हुए मुझे किसके आज, बनी माँ लक्ष्मी मेरा साज।
याद आ गई वो पुण्य आत्मा, था मुसाफिर या परमात्मा।
दर्शन मिले बड़े भाग्यवान, लगा ढूँढ़ने बढ़ा दुकान।
मंदिर था नजदीक वहाँ पर, नृप विकरम बैठे थे जहाँ पर।

दो०- नंदलाल पहचान कर, बोला दोउ कर जोर।
भाग्यवान हे हरि प्रिय, किरपा कीजै और।।

कौन हैं सज्जन कहाँ से आए, ताम लिंदा पुर के धाम।
राजा जैसा वेष आपका, परिचय दीजिये मुझे तमाम।
सुंदर मुख है हरि के जैसा, तन भी भया है सुवर्ण समान।
जब से दर्शन हुए आपके, धन से भरी है मेरी दुकान।
मैं हूँ जात का क्षत्री लाला, स्वीकारो मेरा प्रणाम।
दूर देश वासी हूँ जी मैं, सफर रहा कर हर एक ग्राम।
पहचान छुपायी अपनी विकरम, नंदलाल का रखा मान।
आतिथ्य स्वीकार किया फिर, पहुँच गये सर्राफ मकान।
भोज अनेक राजा सम्मुख, रखवा दिये लाला ने तमाम।
छक कर खाये राजा जी ने, मन से शिव को किया प्रणाम।
शनिदेव जी की लीला को, पहचान ना पाये जगत तमाम।
कभी भटकाये नाथ अरण्य में, कभी खिलवाये सभी मिष्ठान।
परिचय कराया फिर पुत्री से, आलोलिका जिसका था नाम।
गुण यौवन से महक रहा था, तन उसका पद्म गंध समान।
मुख दर्शन कर सुध-बुध खोयी, विकरम भूला जगत तमाम।
रति काम का मिलन अनोखा, अब जाने क्या होगा राम।
नौजवान ये बड़ा रूपवर, लगता कोई राजकुमार।
मेरा जीवन स्वामी हो ये, लिया मन में आलोलिका ने धार।

शयनागार में शयन को चले, संग सोये नंदलाल जी।
हार उतारे मयूर चित्र पर, लटका दिये तत्काल जी।
शयन कर रहे राजा जी के, स्वप्न में आये शनि महाराज।
हंस करे बोले जोर-जोर से, सुख से सो ले विकरम आज।
आँखें खुली विकरम जी की, उठ गये संग नंदलाल सर्राफ।
चित्र मयूर पर हार ना पाया, लागे चोर-चोर कह काँप।
शनि दृष्टि ने बुद्धि पलटी, जिसको समझा हरि समान।
अभी उसी का हाथ पकड़कर, कहने लगे तू चोर महान।
सभी कर्मों का फल भुगताये, नहीं दूजा कोई शनी समान।
सब देवों में बड़े कहलावें, कलि के देव को पूजे जहान।
राजा चन्द्रसेन के सम्मुख, नंदलाल ने नृप किए पेश।
हाथ पैर कटवाये भूप ने, उनके जिनसे मिला था देश।
चंद्रसेन पहचान ना पाये, शनि दृष्टि ने डाला फेर।
सिंह गर्जना हिरण है करता, संग में खाने लगा है शेर।

दो०- शनि दृष्टि अति क्रूर है, जो न हो अनुकूल।
तन पीड़ित धन नष्ट हो, मिट जाए सुख मूल॥
दृष्टि शनैश्चर की पड़े, छाये तिमिर अपार।
सम्बंध धूमिल हो सभी, सिमटे सब व्यापार॥

न्यायकारी विकरम राजा का, किया शनि ने ऐसा हाल।
चन्द्रसेन ने धमकी देकर, कहा निकाल दे सारा माल।
मौन हुए विकरम राजा जी, नष्ट अहम् सारा हुआ।
काम न आया बल पौरुष भी, काम नहीं आई दुआ।
हाथ और पैर काटकर इसके, डाल आओ जंगल में आज।
चेहरे से है नूर झलकता, मगर अशोभन इसके काज।
हस्त पद काट विकरम के, किया सैनिक ने पूर्ण फरमान।

उज्जैनी प्रजा थी सारी, स्थिति विकरम की से अन्जान।
बिना जाँच पड़ताल किए ही, न्याय ये कैसा हुआ है आज।
चक्रवर्ती सम्राट घूमता, नगर नगर में खोकर ताज।
मन ही मन फिर किया आवाहन, विकरम ने माँ महाकाली।
हे माँ मेरी विपदा ये क्यूँ ना, तूने अब तक है टाली।
माँ महाकाली प्यार से बोली, बेटा नहीं भूली वरदान।
मगर शनि की निंदा करके, तूने किया अपराध महान।
शनिदेव के क्रोध ताप को, विकरम सहना ही पड़े।
मिट जायेंगे इससे विकरम, संस्कार कष्टकारी बड़े।
शनि दशा दुख और भोग, सबको सहना पड़ता है।
जैसे दशा में शनि जी रक्खे, वैसा रहना ही पड़ता है।
तेरे मन की शक्ति बनकर, रहती हर पल तेरे साथ।
तेरा संयम अब से तेरा, पैर बना और बना है हाथ।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, वैसे विकरम तड़फे आज।
दौड़ रहा है काल गति से, छिन गयी विकरम की सब लाज।
हस्तपद खंडित हुए तन से, टूट गया सब देहाभिमान।
रह गया फिर अंतिम साधन, करना महाकाल का ध्यान।
शनिदेव ने सपन में जाकर, चन्द्रसेन को चेता दिया।
हुआ नहीं अपराध सिद्ध, हे चन्द्रसेन क्या न्याय किया।
अब उसके अन्नजल का प्रबंध, होगा कृपा से मेरी।
इसका पश्चाताप तू कर ले, होगी शुद्ध बुद्धि तेरी।
तेली एक पत्नी के संग में, उस रस्ते से जा निकला।
पत्नी उज्जयनी की वासी, विकरम को पहचान लिया।
बोली अपने स्वामी से हे, नाथ ये उज्जयनी राजा।
विवाह इन्होंने सम्पन्न कराया, था सब इनका गाजा बाजा।

अब इनको इस दारूण दुख में, नहीं छोड़ना हमको नाथ।
डोली में विकरम को बैठा के, पैदल चलने लगे वो साथ।
तामलिंदा नगर पहुँचकर, अपने घर नृप लिये उतार।
तेली ने फिर मन ही मन में, किया विकरम सेवा का विचार।
शयन कक्ष तैयार कराकर, करवाया तन का उपचार।
मन ही मन दम्पत्ति सोचे, किसका बने राजन हैं शिकार।
दो०- 'मनु' तेरे संस्कार का, होगा जब भुगतान।
तन मन पीड़ित हो तबहिं, शनी दशा को जान।।
होश तभी विकरम को आया, देखा फिर अपना सब हाल।
तेली तेलन की सेवा से, हो गये विकरम जी निहाल।
स्वस्थ जानकर अपने तन को, तेली का दिया जता आभार।
बोले भैया किया क्यों मुझ पर, तुमने बड़ भारी उपकार।
तेली की पत्नी ने आकर, दिया राजन को परिचय तमाम।
मात-पिता सब ही तुम मेरे, तुमसे सुख वैभव ये धाम।
भोग खिलाया राजन को फिर, थी आँखों में अश्रु धार।
छककर खाया विकरम जी ने, समझ सत्य का प्रेम व्यवहार।
स्वाभिमानी राजा ने फिर, किया आग्रह करने को काम।
लगे हाँकने कोल्हू बैल को, सुबह से हो जाती थी शाम।
लक्ष्मी को तेली के घर में, मिल गया रहने को अस्थान।
तेली ने हिरदय से माना, राजा को साक्षात् भगवान।
कोल्हू के बैलों को हाँकते, समय कष्ट का बीत गया।
अहम मिटा चक्कवत राजा का, तन-मन भी नवनीत भया।
साढ़े साती के दो दिन केवल, रह गये राजा जी के शेष।
वक्रदृष्टि शनिदेव ने बदली, कृपा दृष्टि का हुआ प्रवेश।
इन्द्र देव से सीखे राग का, हिरदय ने किया गायन आदेश।

दीपक राग के गायन का, अभी हुआ था समय विशेष।
लगे गुनगुनाने विकरम जी, महक उठी नगरी सारी।
जैसे गाने लगी धरा पर, मधुरित कोयलिया प्यारी।
प्रहर रात का गाते-गाते, ना जाने कब शुरू हुआ।
गूँज उठा फिर स्वर विकरम का, राजमहल तक पहुँच गया।
राजकुमारी पदमावती के कर्ण, हृदय को छूने लगा।
भाव हिय में निपट प्रेम का, पदमा के बढ़ने लगा।
महल की छत पर पदमावती थी, मंत्र मुग्ध-सी खड़ी हुई।
सुध-बुध भूल गयी अपनी सब, आज हैरानी बड़ी हुई।
तभी जल उठे दीप राज्य के, राजमहल जगमगा उठा।
राजकुमारी दंग रह गई, आज नगर में क्या ये हुआ।
दीपक राग खत्म हुआ तो, श्री राग गाने लगे।
भाव अनोखे पदम सेना के, हृदय में आने लगे।
खत्म हुआ श्री राग ज्योंहि, फिर से नगर अंधेर हुआ।
पदमावती के दिल यौवन को, दूर से ही विकरम ने छुआ।
दो०- चित्त निर्मल हो भक्ति से, तन निरमल पा कष्ट।
खत्म दशा शनिदेव की, सुख आवे दुख नष्ट॥
आदेश हुआ परिचारिका को, उसे ढूँढ़ो जिसने गाया राग।
वो ही हो प्रियतम अब मेरा, वो ही होवे मेरा भाग।
हुआपालन आदेश दिया फिर, परिचय सखि ने लाकर खास।
हाथ पैर बिन एक नवयुवक, तेली के घर का है दास।
थी विस्मय में रानी पदमा, पर संकल्प लिया मन धार।
केवल भाग्य वही अब मेरा, वही हो मेरे प्राण आधार।
दिया आदेश बुलाकर लाओ, दे आतिथ्य और सत्कार।
अब से केवल राजमहल में, होगा उनका दुख परिहार।

पदमावती के सम्मुख जब, विकरम को लाया गया।
अजब अनोखा रानी महल में, सन्नाटा विस्तृत हुआ।
लगे निहारने एक दूजे को, घड़ियाँ बीतती जाती थीं।
नैनों ही नैनों में भेजीं, पदमा ने प्रेम की पाती थी।
रही थी रूप निहार विक्रम का, अजब बड़ा व्यवहार था।
अजनबी दोनों एक हो गए, प्रथम मिलन ही प्यार था।
हस्तपद खंडित होने पर, मुख पर तेज अपार था।
हुए मोहित पदमा पर राजन, केवल शनी आधार था।
गायन शुरू किया राजन ने, पदमा के एक इशारे पर।
रानी महल में पुरुष गान सुन, पहुँचे राजन द्वारे पर।
जान हाल गुस्से में भभके, दिया सैनिकों को आदेश।
इस चौरंगे को ले जाकर, दे दो कारागार विशेष।
पदमा राजन के पद पर, रख मस्तक बोली पिताश्री।
अब मेरे तन का प्राण यही है, और जीवन आधार यही।
उधर नैनों में अश्रु भर कर, विकरम जी ने किया शनि ध्यान।
बड़ी तेरी अद्भुत लीला है, मैंने लिया है अब ये मान।
सब देवों में आप बड़े हो, आप ही बलशाली शनिदेव।
मंदिर एक निर्माण कराकर, सदा करूँगा तेरी सेव।
आलोक हुआ फिर उसी महल में, प्रकटे सम्मुख श्री शनिराज।
बोले हे विकरम अब तेरे, बनाऊँगा बिगड़े मैं काज।
किया प्रणाम मन ही मन में, शीश झुकाकर शनि सम्मुख।
अवरूद्ध हुआ कंठ राजा का, फिर से मिल गया वैभव सुख।
हस्त उपजे फिर पैर भी उपजे, विक्रम तन सम्पूर्ण भया।
बहु दिव्य रत्नों से सुसज्जित, मुकुट शीश पे रखा नया।
बोले अहम् तुम्हारा राजन, चित्त शुद्धि में बदल गया।

नवजीवन नवरूप ये तेरा, कृपा से मेरी निखर गया।
जो तुमको हो श्रेष्ठ वही, माँग लेओ मुझसे वरदान।
अभीष्ट करूँ पूर्ण सब तेरे, हे नरश्रेष्ठ हे भूप महान।

दो०- विकरम ने शनी सम्मुख, प्रकट किया निज भाव।
सब देवों में हो बड़े, करते रंक से राव।

एक यही वर मुझे चाहिए, हे जन पालक सर्वाधार।
जैसी विपदा मैंने भोगी, भोगे ना कोई करो स्वीकार।
कह तथास्तु प्रेम से बोले, और कोई वर माँगो साल्हाद।
सुख वैभव धन यश कीर्ति, और देता तुम्हें अभय प्रसाद।
विकरम जी ने शीश झुकाकर, हाथ जोड़ फिर नमन किया।
स्तुति की श्री शनिदेव की, प्राणों से शनि हवन किया।
वरद हस्त सर विकरम के, शनैश्चर ने रक्खा तत्काल।
तुमसा इस पूरे कलियुग में, होगा नहीं कोई महिपाल।
जो भी विकरम कथा तुम्हारी, श्रवण पाठ करे शनिवार।
उसकी भक्ति से प्रसन्न हो, दूँगा उसको फल मैं चार।
सर्व रोग हर भय मुक्त कर, सब बाधा का नाश करूँ।
अष्टम व्ययस्थ जन्मस्त द्वितीयस्त, सब पीड़ा तत्काल हरूँ।
सब और से रक्षा मैं करूँ, शमन करूँ सब कष्ट क्लेश।
जो मंदिर मेरे दर्शन करके, कहें कथा चढ़ाए पुष्प विशेष।
अंतर्धान हुए शनिदेवा, पूर्ण मनोरथ किए सकल।
हस्त पद सम्पूर्ण हो गए, लौट आया विकरम का बल।
चन्द्रसेन पदमा और सखियाँ, निद्रा माया से जो थेअचल।
स्मृति लौटी चन्द्रसेन की, देख विक्रम को हुए विकल।
हाल जानकर फिर यह सारा, कन्या देने का जिक्र किया।
सहमति विक्रम की पा ली, बाद विवाह का फिक्र किया।

उधर खूंटी ने हार था उगला, देखा स्वयं ही सेठ सर्राफ।
हे भगवन मेरे हाथों से, हुआ बड़ा ही यह महापाप।
आलोलिका को संग लेकर, चन्द्रसेन सम्मुख आए सर्राफ।
कथा सारी राजा को सुनायी, मन में भरकर भारी विषाद।
विकरम के दर्शन करवाकर, करवाया नंदलाल संवाद।
पाणिग्रहण कर आलोलिका का, दिया सेठ को पूर्ण प्रसाद।
कथा नगर वासी कर्णों तक, पहुँच नया सुख देने लगी।
सभी जन आनन्द में भरकर, गाने लगे जय जय श्री शनि।
तेली तेलन को अपार स्नेह दे, और दिया सुंदर उपदेश।
पीड़ित की सदा सेवा करना, होगी किरपा शनि जी की विशेष।
राजाचन्द्र सेन और सेठ ने, रीति सहित फिर किया विदा।
आलोलिका पदमा के संग में, सुख वैभव यश भोगो सदा।
हाथी घोड़े सेना धन ले, पहुँचे विकरम अपने धाम।
प्रजा सुखी हुई फिर सारी, कष्ट हो गये दूर तमाम।
फिर सभा में बैठ किया, शनी मंदिर निर्माण विचार।
सब देवों में बड़े शनि हैं, सभासदों ने किया स्वीकार।
मंदिर एक निर्माण कराया, लेकर 'मनु' शनि सेवा भार।
उ़ज्जैनी प्रजा पर करते, तब से शनि कृपा अपार।
पूर्ण हुई कथा अनोखी, कैसे विक्रम का हुआ कल्याण।
पूजन करना सदा शनि का, कलियुग में उत्पन्न इन्सान।

दो०- शनि लीला की यह कथा, करे पठन शनिवार।
विकरम सम किरपा मिले, आये सुख घर द्वार॥

शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज ही प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है। शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः।

विधि विधान – शनिवार को पीपल वृक्ष के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की लोहे की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक तथा लोहे के पाशों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़ें, तत्पश्चात पीपल को अर्घ्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा – एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बड़ा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहने लगे। जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओं के राजा हैं इसलिए ये न्याय करके बताइए कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूँ।

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अतः आप सभी उनके पास जाएँ। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे। सभी ग्रह देवता भू लोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा में पहुँचे तथा अपना प्रश्न राजा

के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहों की बात सुनकर चिंतित हो गए तथा सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊँ। जिसे छोटा बताऊँगा वही क्रोध करेगा। विवाद निपटाने के लिए उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछवा दिया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिए क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिए शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है।

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चंद्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूँ। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दुःख दिया है। सुनो राजन- रामचंद्र जी को साढ़े साती आई तो उन्हें वनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन! तुमने मुझे अपमानित किया है। अतः अब तुम सावधान रहना।

राजा विक्रमादित्य ने कहा- जो कुछ भाग्य में होगा देखा जाएगा। ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहाँ से सिधारे। कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों का सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी में आए। जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने

अपने अश्वपाल को अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाही दी। अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ों में से एक अच्छे नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अंतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात राजा विक्रमादित्य अकेले जंगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वयं शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया। भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस खूंटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूंटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया। अत: उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया। तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़कर नगर फौजदार के पास ले गए।

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसक हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए। राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ-पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश

वह उसे अपने घर ले गया। तेली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जुबान से बैलों को हांकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मनभावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई। राजकन्या ने अपनी दासी को मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिए भेजा। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूँगी। प्रातः काल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली– माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेली के घर जो चौरंगिया है मैं उससे ही विवाह करूँगी। माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हो गई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी बोली– हे माता! ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नहीं तोड़ूँगी। चिंतित हो रानी ने यह बात राजा को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया– हे पुत्री! ये कैसी जिद है? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा– पिताजी प्राण दे सकती हूँ पर अपना प्रण नहीं तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा– यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर में चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूँगा।

तेली ने आश्चर्य से कहा– महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहाँ

राजकुमारी और कहाँ एक चौरंगिया। राजा ने कहा- ये सब भाग्य का खेल है। तुम जाकर विवाह की तैयारियाँ करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल में सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा- हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए। राजा ने शनिदेव से कहा- प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ-पैर वापिस कर दिये।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनय की- हे शनिदेव! मेरी आपसे विनती है कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए, ऐसे किसी को कभी नहीं देना। शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा- राजन्! तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा में कभी कोई दुख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चींटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अंतर्ध्यान हो गए। सवेरे जब राजकुमारी मनभावनी की आँख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ-पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उससे इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतांत राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रातः काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हालचाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ-पैर सही हो जाने का सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मांगी और कहा- हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिए। राजा ने कहा- यह सब मेरे भाग्य तथा शनिदेव के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था।

तब सेठ ने कहा- हे महाराज! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर

दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी। राजा ने कहा- जैसा आप उचित समझें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य और राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूंटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा- महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत सी भेंट राजा को दी। इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों जगह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पहुँचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर में भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य में घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे भवन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

शनि स्तुति

जिन्हें श्रेष्ठ, कवियों का उत्सव प्रिय है, जो उर्ध्वलोकों को ऊर्जा प्रदान करते हैं, जो वेदों, पुराणों, उपनिषदों द्वारा वन्दनीय हैं, जिन्हें ओंकार शिव मंत्र प्रिय है, जो वृन्दावन के कान्हा की छवि दर्शन के लिए लालायित हैं, जिन्हें गोघृत से प्रीत है तथा गौ-दान प्रिय है, शान्तस्वरूप, काम दग्ध करने वाले, कुरु वंश द्वारा पूजित, ग्रहराज महाबली ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक, ज्ञान की महानिधि, जगत जनों के मंगल के लिए मनोहर रूप धारण करने वाले करूणानिधि, जब इन्द्र भोग के समान भक्तों को साधन देते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जिनको तिल, तेल, तिल होम, तिल चूर्ण, तिल भक्षण, काली उड़द प्रिय है, जो तिल दीप दान करने वालों की पीड़ा का निवारण करते हैं, जिन्होंने चक्रवर्ती दशरथ को अभय कर दुर्भिक्षकाल से संसार को बचाया है, जो सिद्धों तथा ऋषि मुनियों द्वारा सेवित हैं। दैत्यों का विनाश करने वाले तथा भक्तों के दुखों का हनन करने वाले हैं, धनदाता जब धर्म की स्थापना करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो द्विजों के हृदय में रमण करते हैं, जिन्होंने विक्रम, नल और धर्मराज की स्तुतियों से प्रसन्न हो श्रेष्ठ वर दिये हैं, जो पृथ्वी के नाना द्वीपों के पालनकर्त्ता हैं, जो अष्टग्रहों की पीड़ा हरने वाले हैं, जो वन्दन, स्तुति गान से जल्द प्रसन्न होते हैं, जो प्राणियों को पीड़ा देने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षसों को आग्रह से ही भस्म करने वाले हैं, जब वे प्रेमवश भक्त चित्त को निर्मल करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो दीर्घलोचन, त्रिदंडी, सूर्य तथा छाया के हृदय में रमण करने वाले हैं, जो शनि ग्रह के स्वामी हैं, शिला रूप से शिंगणापुर में वास करने वाले, भयंकर से भयंकर, शांत से भी शांत, असुरारि मणि रत्नों से विभूषित, दिव्य सुगंध वाले, मुक्तिमार्ग के प्रदर्शक, योगदाता, यम के

अग्रज, राशियों के स्वामी, लौह प्रतिमा विग्रह के प्रेमी, विश्व व्यापार के हेतु, शमी मूल, अश्वत्थ व शमशान निवासी, सभी दोषों का नाश करने वाले, जब भक्तों के सर्वार्थ सम्पूर्ण करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो छायानन्दन हैं। पिता के वर्ण से विपरीत होते हुए जिनकी आभा नीलवर्ण है। जिनका रंग काला है, जो भक्तों के भयभक्षक हैं। जिनकी क्रोधाग्नि ही प्रलयाग्नि है। जो अपने ही बाल्यापन से सर्वथा विपरीत हैं अर्थात् योग द्वारा चांचल्य त्याग चुके हैं। जो रिद्धि-सिद्धि दाता भक्तों को मनोवांछित फल देते हैं, जो भाव के भूखे हैं, निपट प्रेम के भिखारी हैं, जिनके तरकश में अत्यन्त तीक्ष्ण सौ तूणीर शोभा पाते हैं, जो गगनाचारी हैं, मंद हैं, क्षुधा त्यागी हैं, भक्तवत्सल हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

यक्ष, राक्षस, भूत-प्रेत, निशाचर जिनसे भय खाते हैं, द्विज, सिद्ध, चारण, ऋषि, तारागण जिनसे अभय पाते हैं। अलग-अलग फल देने वाली जिनकी नववाहन से सुसज्जित सवारियाँ हैं। जिनके आकाशीय रथ में अत्यन्त शक्तिवान चितकबरे रंग के अश्व जुते हुए हैं, जिनके नेत्रों से काल को भी मात देने वाला मृत्युंजय स्तोत्र का उद्भव हुआ है, जो भक्तों के हित में सदा संलग्न रहते हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

जिनका मार्ग रोकने का साहस तीनों लोकों में किसी में नहीं, जिनके भय से अन्य देवगण उनकी मित्रता स्वीकार करते हैं, जो त्रिशूल, भाला, ढाल लिए हुए हैं, जिनके गले में शमी पुष्पों की माला है, जिन्हें मंदार प्रिय है। जिनके विशाल भाल पर किरीट मुकुट शोभा पाता है, जो शिव शिष्य हैं, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी कान्हा के मान्य भक्त हैं, जिनके सुवासित बदन पर नील वस्त्र शोभा पाते हैं, जो भक्तों का भीषण आपत्तियों से संरक्षण करते हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

जो सभी प्राणियों को कर्म फल भुगताकर पावन करते हैं, प्रारब्ध जिनके वशीभूत होकर फलता है। जो कोटि जन्मों के संचय का भुगतान

करवा मुक्त कर देते हैं। जो स्मरण मात्र से ही कृपा करने वाले हैं। जो अजरामर हैं। जो मानवों में शक्तिशाली ग्रह होकर जाने जाते हैं। जिनकी अनुकूल किरणें सुख व आनंद प्रदान करती हैं, जिनकी प्रतिकूल दशायें धन-हानि, अनन्त दुख व भाई बान्धवों का नाश करने वाली हैं, जो दुष्टों के लिए अति क्रूर क्रोधी हैं, जिनकी आराधना भक्तों को अक्षय सुख प्रदान करती है, जिनकी शरणागति से वंश गति पाता है, ऐसे श्री शनिदेव के महाराज के चरण कमलों में मेरा आश्रय हो।

देवर्षि नारदादि जिनकी कृष्ण भक्ति का उन्मुक्त कंठ से यशगान करते हैं, जो सदा ध्यान मग्न रहते हैं, जिन्होंने सदा विष्णु अवतारों के सहायक हो, दुष्ट राक्षसों को प्रतिकूल दशाओं का मजा चखाया है। जिनकी प्रतिकूलता से राम वनवासी कृष्ण रणछोड़ कहलाये। जो अपने ही नहीं, अन्यान्य देवों के भक्तों पर भी कृपा वृष्टि करते हैं, जो पृथ्वी का भार उतारने में सदा ही सहायक हैं, जो दीन दयाल और भक्त वत्सल हैं, मुझ दीन को अपने चरणों का आश्रय प्रदान करें।

जो कलियुग के अधिपति हैं, जो नाना प्रकार के मणि-माणिक्यों के उत्पन्नकर्त्ता हैं, जो नाना द्वीपों के अधिकर्त्ता हैं, जिनसे नाना प्रकार की लिपियों व भाषाओं का उद्‌गम हुआ है, जो नाना लोकों पर राज करते हैं, और नाना रूपों में जगत के सृष्टिकर्त्ता हैं, जिनके नाना रूपों पर जगत जन आश्रित हैं, ऐसे सूर्यनंदन शनि मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे शरणागति प्रदान करें।

हे शनि आप योगियों में श्रेष्ठ योगी, निर्मल और कल्याणमय हैं। हे शिव रूप आप भोग और मोक्ष देने में सक्षम हैं। आप छाया हृदयनन्दन, सदा कृष्ण ध्यान में खोये रहने वाले, खड्‌गधारी, धनुष बाण वाले, महाकाल शनि समस्त असुरों का नाश करने वाले हैं। आपको नमस्कार है।

हे अभयदान देने वाले, अकाल मृत्यु का शमन करने वाले, आपत्तियों का शमन करने वाले, कालात्मा सभी राशियों के स्वामी, राशिफल दाता। हे दयानिधान, सर्वपाप विनाशक, कल्पवृक्ष रूप, ऐश्वर्य प्रदान करने

वाले, शरणागत वत्सल, कालों के भी महाकाल आपको नमस्कार है।

मोटे रोम वाले, बड़े नेत्रों वाले, आपके स्मरण मात्र से तीनों ताप शान्त हो जाते हैं। आप उन भगवानसूर्य के पुत्र हैं जो परात्पर रूप में भगवान ब्रह्मा शिव हरि के भी स्वामी हैं। जिस प्रकार आसमान से देखने पर विशाल समुद्र नीला दिखाई देता है उसी प्रकार आपके शरीर की नील कान्ति दिखाई देती है। जिसके सम्मुख सहस्त्रों नीलम भी फीके प्रतीत होते हैं। आपको नमस्कार है।

हे शनि आपका श्याम वर्ण काली घटा के समान प्रतीत होता है, जो पृथ्वीवासियों के लिए बारिश रूप में सुख लेकर आती है। आपके कवच कुण्डल तथा वलय कंकण और गले में शोभा पा रहे हार से अनेकों माणिक्य की शोभा मुखरित हो रही है। आपका वक्षस्थल नभ के समान विशाल है। हे मन्दगते, कपालधारी, देवताओं में शिरोमणि कृपानाथ, आपकी वक्र दृष्टि ब्रह्मा-ऋषि-तारागण को भी राज्य भ्रष्ट कर सकती है। आपको नमस्कार है।

हे रौद्रे, सभी संसारी आपकी न्याय पद्धति से परिचित हैं, आपके क्रोध के डर से कोटि मनुष्य अपना कर्म विधान बदल देते हैं। हे राम भक्त हनुमान के परम मित्र आप योगियों के ध्यान से परे तथा सूक्ष्म रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं। हे सिद्धिदाता, आप पल में प्रलय कर सकते हैं। हे मृत्युञ्जय, आपकी भुजाओं में अनन्त बल पराक्रम का धाम है। आप आनन्दमय तथा करुणामय हैं। आप वरदायक हैं, भैंसे की सवारी आपको अतिप्रिय है। अपनी कामना करने वाले भक्तों के लिए आप प्राण-वल्लभ हैं। आपको नमस्कार है।

हे भक्त दुखहारी, परम शान्त, सभी ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ा को शांत करने वाले आपको काली उड़द, काले तिल, तेल, मोदक, नीलम, कृष्ण तुलसी, शमीपत्र व शमीपुष्प और आक का गजरा अतिप्रिय है। आप पीपल तथा श्मशान में निवास करते हो। हे 108 नाम वाले मनु रूप शनि देव 'मनु' चित्त नाथ आपको नमस्कार है।

जो नील वस्त्र धारण किए हुए हैं, जिनका वक्षस्थल नभ के समान विशाल हैं, जो खड्गधारी, धनुर्धारी तथा कपालधारी हैं, जिनके पादारविंद

नीले हैं, जो सबसे दीर्घ हैं तथा मन्दगति वाले हैं। जिनका रंग काला है तथा आभा नील वर्ण है। जो योगियों में श्रेष्ठ योगी हैं, जो कालों के भी काल हैं, जो कलियुग में सभी धर्मों के लिये पूज्य हैं तथा सदैव जाग्रत रहने वाले हैं। जिनके चरणों के भार से पृथ्वी डोल जाती है, जिनके भय से समस्त ब्रह्माण्ड कम्पित होता है, जो छाया तथा रवि के लाल हैं, जो साक्षात् भगवान शिव के स्वांस हैं, जिनका जन्म असुरों का विनाश करने के लिए हुआ है, जिनके होने से सभी देवता स्वच्छन्द होकर विचरते हैं, जिनके नौ वाहन हैं, जिनकी दृष्टि मात्र से ब्रह्मा-ऋषि-तारागण तक पथ भ्रष्ट हो जाते हैं, जिनके ललाट की रेखाओं से सदा भक्तिक्षुधा का अनुभव होता है, जो मुमुक्षुओं की चाह पूरी करने वाले हैं, जो न्यायकारी हैं, जो भक्तों का भीषण आपत्तियों में संरक्षण करते हैं। जो धर्माचरण तथा दान करने वालों को संसार के सभी ऐश्वर्य क्षणमात्र में दे देते हैं, जो धर्मत्राता हैं, जो अल्पाहारी हैं, जो अत्यंत क्रोधी हैं, जिनका तिरस्कार करना ही जीवन पराजय है, जो सम्पूर्ण विश्व में प्रतिख्यात हैं तथा सभी देवों में परम वन्दनीय हैं। ऐसे श्री शनिदेव महाराज को मेरा बारम्बार, कोटि-कोटि व दण्डवत प्रणाम है।

जो सुंदर गोलाकार सोने से मढे हुए सींग वाले विशाल भैंसे पर सवार होकर सम्पूर्ण लोकों में भक्तों की रक्षा हेतु विचरते हैं, जो रात्रि के अधिपति हैं, जिनके ओष्ठ कमलों से भक्तों के लिए सदा ही आशीर्वाद प्रस्फुटित होते हैं, जिनके चरणों की रज मुक्ति का अति उत्तम साधन है, जो भक्तों को पीड़ा देने वाले दुष्टों को अंकुश से पीटकर निम्न लोकों में गिरा देते हैं। जिनके रोम-रोम से अनंत नाद उत्थित है। जिनके नाभिकमल से अनेक दिव्य सुगंधियाँ छिटककर देवताओं और पितृगणों का मन मोहती हैं, जिनके विशाल हस्त की अंगुलियों के पौर चटकने से प्रसारित भयंकर शब्द दुष्टों को व्याकुल कर देता है। जो ग्रह-अधिपति हैं, पाप फल भुगताकर समस्त राशि वाले जातकों के पापों का उच्छेदन करते हैं तथा पुण्यों की श्रृंखला उजागर करते हैं और अन्य ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ाओं का हरण करने वाले हैं। ऐसे शनिदेव महाराज को मेरा कोटि-कोटि दण्डवत व अक्षरशः प्रणाम है।

शनि गायत्री

- ॐ रौद्रान्तकाय विद्महे शनैश्चराय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ छायात्मजाय विद्महे रूद्ररूपाय धीमहि तन्नौ पिप्पलैः प्रचोदयात्।
- ॐ नीलाञ्जनाय विद्महे सौम्य रूपाय धीमहि तन्नौ दिव्यदेहः प्रचोदयात्।
- ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे कालरूपाय च धीमहि तन्नौ शनैश्चर प्रचोदयात्।
- ॐ महाग्रहाय विद्महे मन्दगताये च धीमहि तन्नौ महाकालः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वमांगलाय विद्महे शत्रुविमर्दनाय च धीमहि तन्नौ मृत्युञ्जयः प्रचोदयात्।
- ॐ थणु गणाय विद्महे श्याम वर्णाय धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वरोगविनाशनाय विद्महे आयुवृद्धाय धीमहि तन्नौ देवः प्रचोदयात्।
- ॐ रविपुत्राय विद्महे शिव शिष्याय च धीमहि तन्नौ शनैश्चरः प्रचोदयात्।
- ॐ विष्णुभक्ताय विद्महे बभ्रु कोणस्थाय धीमहि तन्नौ पिप्पलः प्रचोदयात्।
- ॐ कृष्णाय विद्महे महाकाल स्वरूपाय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ महारौद्राय विद्महे भगभवाय धीमहि तन्नौ यमानुजः प्रचोदयात्।
- ॐ नक्षत्रदोष निवारणाय विद्महे कालभीतिहराय च धीमहि तन्नौ नीलमयूखः प्रचोदयात्।

- ॐ सुवर्णात्मजाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नौ भानवे प्रचोदयात्।
- ॐ कालप्रबोधाय विद्महे यमुनानुजाय धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।
- ॐ कोणस्थाय विद्महे पिंगलाय च धीमहि तन्नौ यमः प्रचोदयात्।
- ॐ मंदचराय विद्महे खड्गधारिणे च धीमहि तन्नौ प्रसन्नः प्रचोदयात्।
- ॐ क्रूरग्रहाय विद्महे भस्मधारिणे च धीमहि तन्नौ शनिदेवः प्रचोदयात्।
- ॐ शनिग्रहाय विद्महे योगिराजाय धीमहि तन्नौ भीष्मः प्रचोदयात्।
- ॐ छायासुताय विद्महे कोकिलावन राजाय धीमहि तन्नौ उग्रः प्रचोदयात्।
- ॐ कालाग्नाय विद्महे नीलवर्णाय धीमहि तन्नौ निश्चलः प्रचोदयात्।
- ॐ घोररूपाय विद्महे दन्डाधिकारये च धीमहि तन्नौ रौद्रः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वभक्षणाय विद्महे कलि नाथाय धीमहि तन्नौ भव्यः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वान्तकाय विद्महे सत्यस्वरूपाय धीमहि तन्नौ योगेश्वरः प्रचोदयात्।
- ॐ दीर्घरूपाय विद्महे वक्रदृष्टाय धीमहि तन्नौ सिद्धः प्रचोदयात्।
- ॐ दक्षदृष्टाय विद्महे वामदृष्टये च धीमहि तन्नौ क्रूरः प्रचोदयात्।
- ॐ राशिगाय विद्महे राशिभोक्ते धीमहि तन्नौ राशिनाथः प्रचोदयात्।
- ॐ राशिफलदात्रे विद्महे राशिनाथाय च धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।

- ॐ राहुसखाय विद्महे भीमरूपाय धीमहि तन्नौ प्रलयंकरः प्रचोदयात्।
- ॐ सूक्ष्मरूपाय विद्महे शिंगणापुर वासाय च धीमहि तन्नौ दाता प्रचोदयात्।
- ॐ काल शरीराय विद्महे काल पुत्राय च धीमहि तन्नौ कालयः प्रचोदयात्।
- ॐ रवि नन्दनाय विद्महे शिव शिष्याय च धीमहि तन्नौ भीष्मः प्रचोदयात्।
- ॐ दुष्टनाशाय विद्महे शनैश्चराय धीमहि तन्नौ महाग्रहः प्रचोदयात्।
- ॐ दुर्निरीक्षाय विद्महे स्थूलरोम्णे धीमहि तन्नौ भीषणः प्रचोदयात्।
- ॐ दीर्घलोचनाय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नौ कालपुरुषः प्रचोदयात्।
- ॐ चण्डीशाय विद्महे क्षतजाय च धीमहि तन्नौ सौरि प्रचोदयात्।
- ॐ वैवस्वताय विद्महे ग्रहपतये च धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।
- ॐ जन्म लग्न दोष नाशनाय विद्महे छायात्मजाय धीमहि तन्नौ पिप्पलः प्रचोदयात्।
- ॐ हरिभक्ताय विद्महे थणुगणाय च धीमहि तन्नौ सौरि प्रचोदयात्।
- ॐ नीलोत्पलनिभाय विद्महे कृष्णाय च धीमहि तन्नौ शितिकण्ठः प्रचोदयात्।
- ॐ बलीमुखाय विद्महे शुष्कोदराय धीमहि तन्नौ शुष्कः प्रचोदयात्।
- ॐ विभीषणाय विद्महे भयानकाय धीमहि तन्नौ रौद्रः प्रचोदयात्।
- ॐ ग्रहराजाय विद्महे करालाय च धीमहि तन्नौ भौमः प्रचोदयात्।

- ॐ सिहिंकासुताय विद्महे काव्याय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ श्यामांगाय विद्महे धनदाताय धीमहि तन्नौ कर्मविरोधः प्रचोदयात्।
- ॐ खञ्जाय विद्महे कोधनाय धीमहि तन्नौ देवपतये प्रचोदयात्।
- ॐ कुबेराय विद्महे ईशानाय च धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।
- ॐ नक्षत्रेशो विद्महे ग्रहेश्वराय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ ग्रहपीडाहराय विद्महे महाकाय च धीमहि तन्नौ महाबलः प्रचोदयात्।
- ॐ भयदाताय विद्महे आदित्याय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ स्वतिथिरूपाय विद्महे नक्षत्रगणनायकाय धीमहि तन्नौ नीलः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वरोग हराय विद्महे देवगणस्तुताय धीमहि तन्नौ सिद्धैः प्रचोदयात्।
- ॐ कृष्णांगाय विद्महे शुष्कोदराय च धीमहि तन्नौ शनयैः प्रचोदयात्।
- ॐ अधोक्षजाय विद्महे धनुर्धराय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ चतुर्भुजाय विद्महे ग्रहराजाय धीमहि तन्नौ पिप्पलैः प्रचोदयात्।
- ॐ अभीष्टकराय विद्महे श्यामवर्णाय च धीमहि तन्नौ कपाली प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे शान्तस्वरूपाय च धीमहि तन्नौ देवः प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे कोटराक्षाय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे धनदाताय धीमहि तन्नौ देवेशः प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे दग्धदेहाय धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।

श्री शनि अष्टोत्तरशत नामावली

1. ॐ शं शनैश्चराय नमः। 2. ॐ शं शांताय नमः। 3. ॐ शं सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः। 4. ॐ शं शरणाय नमः। 5. ॐ शं वरेण्याय नमः। 6. ॐ शं सर्वेशाय नमः। 7. ॐ शं सैन्याय नमः। 8. ॐ शं सुर वन्द्याय नमः। 9. ॐ शं सुरलोक विहारिणे नमः। 10. ॐ शं सुखासनोपविष्ठाय नमः। 11. ॐ शं सुन्दराय नमः। 12. ॐ शं घनाय नमः। 13. ॐ शं घनरूपाय नमः। 14. ॐ शं घनाभरणधारिणे नमः। 15. ॐ शं खद्योताय नमः। 16. ॐ शं मन्दाय नमः। 17. ॐ शं मन्दचेष्टाय नमः। 18. ॐ शं वेदास्वादस्वभावाय नमः। 19. ॐ शं वज्रदेहाय नमः। 20. ॐ शं वैराग्यदाय नमः। 21. ॐ शं वीराय नमः। 22. ॐ शं वीतरोगभयाय नमः। 23. ॐ शं विपत्परं परेशाय नमः। 24. ॐ शं विश्ववन्द्याय नमः। 25. ॐ शं गृध्रवाहनाय नमः। 26. ॐ शं गूढ़ाय नमः। 27. ॐ शं कुर्मांगाय नमः। 28. ॐ शं कुरूपिणे नमः। 29. ॐ शं कुत्सिताय नमः। 30. ॐ शं गुणाढ्याय नमः। 31. ॐ शं गोचराय नमः। 32. ॐ शं अविद्यामूलनाशनाय नमः। 33. ॐ शं विद्याऽविद्यास्वरूपिणे नमः। 34. ॐ शं महनीयगुणात्मने नमः। 35. ॐ शं मर्त्यपावनपादाय नमः। 36. ॐ शं महेशाय नमः। 37. ॐ शं छायापुत्राय नमः। 38. ॐ शं शर्वाय नमः। 39. ॐ शं शततूणीर धारिणे नमः। 40. ॐ शं शुष्काय नमः। 41. ॐ शं चरस्थिरस्वभावाय नमः। 42. ॐ शं चञ्चलाय नमः। 43. ॐ शं नीलवर्णाय नमः। 44. ॐ शं नित्याय नमः। 45. ॐ शं नीलाञ्जननिभाय नमः। 46. ॐ शं नीलम्बरविभूषाय नमः। 47. ॐ शं निश्चलाय नमः। 48. ॐ शं वेद्याय नमः। 49. ॐ शं विधिरूपाय नमः। 50. ॐ शं विरोधाधारभूमये नमः। 51. ॐ शं गरिष्ठाय नमः। 52. ॐ शं वज्रांकुशधराय नमः। 53. ॐ शं वरदाय नमः। 54. ॐ शं अभयहस्ताय नमः। 55. ॐ शं वामनाय नमः। 56. ॐ शं ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः।

57. ॐ शं श्रेष्ठाय नमः। 58. ॐ शं मितभाषिणे नमः। 59. ॐ शं कष्टौघनाशिने नमः। 60. ॐ शं आयुर्पुष्टिदाय नमः। 61. ॐ शं स्तुत्याय नमः। 62. ॐ शं स्तोत्रकामाय नमः। 63. ॐ शं भक्तिवश्याय नमः। 64. ॐ शं भानवे नमः। 65. ॐ शं भानुपुत्राय नमः। 66. ॐ शं भव्याय नमः। 67. ॐ शं आयुष्यकारणाय नमः। 68. ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः। 69. ॐ शं विष्णुभक्ताय नमः। 70. ॐ शं वाशिने नमः। 71. ॐ शं विविधागमवेदिने नमः। 72. ॐ शं विधिस्तुत्याय नमः। 73. ॐ शं वन्द्याय नमः। 74. ॐ शं विरूपाक्षाय नमः। 75. ॐ शं वरिष्ठाय नमः। 76. ॐ शं पशूनां पतये नमः। 77. ॐ शं खेचराय नमः। 78. ॐ शं घननीलाम्बराय नमः। 79. ॐ शं काठिन्यमानसाय नमः। 80. ॐ शं आर्यगणस्तुताय नमः। 81. ॐ शं नीलच्छत्राय नमः। 82. ॐ शं नित्याय नमः। 83. ॐ शं निर्गुणाय नमः। 84. ॐ शं गुणात्मने नमः। 85. ॐ शं निरामयाय नमः। 86. ॐ शं निन्द्याय नमः। 87. ॐ शं वन्दनीयाय नमः। 88. ॐ शं पावनाय नमः। 89. ॐ शं धनुर्मण्डलसंस्थिताय नमः। 90. ॐ शं धनदाय नमः। 91. ॐ शं धनुष्मते नमः। 92. ॐ शं तनुप्रकाशदेहाय नमः। 93. ॐ शं तामसाय नमः। 94. ॐ शं अशेषजनवन्द्याय नमः। 95. ॐ शं विशेषफलदायिने नमः। 96. ॐ शं वशीकृतजनेशाय नमः। 97. ॐ शं धीराय नमः। 98. ॐ शं दिव्यदेहाय नमः। 99. ॐ शं दीनार्तिहरणाय नमः। 100. ॐ शं दैन्यनाशनाय नमः। 101. ॐ शं आर्यजनगण्याय नमः। 102. ॐ शं क्रूराय नमः। 103. ॐ शं क्रूरचेष्टाय नमः। 104. ॐ शं कामक्रोधकराय नमः। 105. ॐ शं कलत्रपुत्रशत्रुत्व कारणाय नमः। 106. ॐ शं परितोपितभक्ताय नमः। 107. ॐ शं परभीतिहराय नमः। 108. ॐ शं भक्तसंघमनोभीष्टफलदाय नमः।

यदि शनि अष्टोत्तरनामावली से हवन करना हो तो खेजड़ी की समिधा, शमीपत्र, काले तिल, जल से हवन करना चाहिए तथा नमः की जगह 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

शनि अष्टोत्तर नामावली स्तोत्र

शनिवार के दिन जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र को पढ़ता है। उसको शनि की दशा व गोचर सब अनुकूल होकर शनि पीड़ा शांत हो जाती है। उस दिन शमी वृक्ष खेजड़ी के पुष्प, पत्ते, अक्षत, कालावस्त्र, लौह प्रतिमा से शनिदेव की पूजा की जाए तो व्यक्ति सभी प्रकार के दुःख व कष्टों से मुक्त हो जाता है।

सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः।
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।।१।।
शितिकण्ठ निभो नीलश्छाया-हृदयनन्दनः।
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावली मुखः।।२।।
दीर्घो निर्मांस-गात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः।
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुजटाधरः।।३।।
मन्दोमन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः।
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी।।४।।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो, भानुजः सिंहिका सुतः।
केतुर्देव पतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा।।५।।
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशानः सुरः आत्मभूः।
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः।।६।।
कर्त्ता हर्त्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायकः।
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्त्ता धनप्रदः।।७।।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः।
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः।।८।।
ग्रहपीड़ा हरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः।
स्थिरासनः स्थिरगतिः महाकायो महाबलः।।९।।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः।

आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्य-नन्दनः।।१०।।
शतभिद्रुक्ष दायिने त्रयोदशी तिथि प्रियः।
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगण नायकः।।११।।
योग राशिर्मुहूर्त्तात्मा कर्त्ता दिनपतिः प्रभु।
शमीपुष्पप्रियः श्यामः त्रैलोक्य भयदायकः।।१२।।
नीलावासाः क्रियासिन्धुः नीलाञ्जन च यच्छविः।
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगण स्तुतः।।१३।।

॥ फलश्रुति ॥

अष्टोत्तर शतंनाम्नां सौरेष्छाया सुतस्य यः।
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम्।।१।।
कृत्वा पूजां पठेन् मर्त्यो भक्तिमान् यो स्तव राजम्।
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति।।२।।
जन्म लग्ने स्थितिर्वाऽपि गोचरे क्रूरराशिगे।
दशासु च गते सौरे तदा स्तवमिमं पठेत्।।३।।
पूजयेद् यः शनि भक्तया शमीपुष्पाक्षताम्बरैः।
विधाय लौहप्रतिमां नरो दुःखात् विमुच्यते।।४।।
बाधा याऽन्य ग्रहाणां च यः पठेत् तस्य नश्यति।
भीतो भयात् विमुच्येत् बद्धो मुच्यते बन्धनात्।
रोगी रोगात् विमुच्येत् नरः स्तवमिमं पठेत्।।५।।

इस स्तोत्र को पढ़ने से रोगी रोग से मुक्त हो जाता है तथा भयग्रस्त व्यक्ति भय से मुक्त हो जाता है। बन्दी (कैदी) कैद से छूट जाता है। इस का अत्यधिक महत्व माना गया है।

दान करे मन चित्त से, और लगावे ध्यान।
शनि दया से भक्त वो, पावे मुक्ती ज्ञान।।

पिप्पलादऋषिकृत शनिस्तोत्रम्

य: पुरा नष्टराज्याय, नलाय प्रददौ किल।
स्वप्ने तस्मै निजं राज्यं, स मे सौरिः प्रसीद तु॥1॥
केशनीलाञ्जन प्रख्यं, मनश्चेष्टा प्रसारिणम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्॥2॥
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय, नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यं भव कामदश्च, फलप्रदो मे भव सूर्य पुत्र॥3॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय, कृष्णदेहाय वै नमः।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने॥4॥
य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहम्।
मदीयं तु भयं तस्य स्वप्नेऽपि न भविष्यति॥5॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रूः, कृष्णो रोद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः, प्रीयतां मे ग्रहोत्तमः॥6॥
नमस्तु कोणसंस्थाय, पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रूरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥7॥
नमस्ते रौद्र देहाय, नमस्ते बालकाय च।
नमस्ते यज्ञ संज्ञाय, नमस्ते सौरये विभो॥8॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय, शनैश्चर नमोऽस्तुते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनस्य प्रणतस्य च॥9॥

पिप्पलाद ऋषिकृत इस स्तोत्र के नित्य पाठ से व्यक्ति को नष्टराज्य की प्राप्ति हो जाती है। शनिदेव प्रसन्न हो जाते हैं। पूर्वकाल में राजा नल ने इसी स्तोत्र का पाठ करके अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त किया था।

श्री शनि वज्र पञ्जर कवचम्

शनि वज्रपंजर कवच का वर्णन ब्रह्मांडपुराण में मिलता है। यह कवच स्वयं ब्रह्मा द्वारा देवर्षि नारद को बतलाया गया था।

श्रीब्रह्मोवाच

शृणुश्वमृषयः सर्वे, शनि पीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य, सौरेरिदमनुत्तमम्।।
कवचं देवतावासं, वज्र पञ्जर संज्ञकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वं, सौभाग्यदायकम्।।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीशनैश्चर कवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्द, शनैश्चरो देवता, शीं शक्तिः, शूं कीलकम्, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोग।

विनियोग बोलकर जल भूमि पर छोड़ दें। इसके पश्चात् ध्यानोपरांत कवच का पाठ करें।

ऋष्यादिन्यासः- शिरसि कश्यप ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः। श्रीशनैश्चरः देवतायै नमः। सर्वांगे श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय।

ध्यानम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यस्तः प्रसन्न सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।

अथ कवचम् (ब्रह्मोवाच)

शृणुश्व मृषयः सर्वे शनि पीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।1।।
कवचं देवतावासं वज्रपंजर संज्ञकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्।।2।।

ॐ श्री शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु, पातु कर्णौ यमानुजः॥3॥
नासां वैवस्वतः पातु, मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्ध कंठश्च मे कंठं, भुजौ पातु महाभुजः॥4॥
स्कंधौ पातु शनिश्चैव, करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता, कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥5॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु, मंद पातु कटि तथा।
उरू ममांतकः पातु, यमो जानुयुंग तथा॥6॥
पादौ मन्द गतिः पातु, सर्वांग पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि, रक्षेत् मे सूर्यनन्दनः॥7॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः॥1॥
व्यय जन्म द्वितीयस्थो मृत्युस्थान गतोऽपि वा।
कालस्थ गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥2॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्म द्वितीयगे।
कवचं पठतो नित्यो न पीडा जायते क्वचित्॥3॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं, सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टम् जन्मस्थ, दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान् नाशयते प्रभु॥4॥

॥ श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्री शनिवज्र पञ्जर कवचं सम्पूर्णम् ॥

दीनन और अपंग को, भोजन देवे कराय।
शनी दया उस पर पड़े, सुख सम्पत्ति मिल जाय॥

शनि तंत्रोक्त साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्री शनि मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्द: शनैश्चर देवता शं बीजं आप शक्ति श्री शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

ऋष्यादिन्यास–

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः सिरशि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ शं शनैश्चर देवतायै नमः हृदय, ॐ शं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आप शक्तये नमः पादयो।

करान्यास–

ॐ शं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शं अनामिकाभ्यां नमः ॐ शं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ शं करतलपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादिन्यास–

ॐ शं हृदयाय नमः। ॐ शं शिरसि स्वाहा। ॐ शं शिखायै वषट्। ॐ शं कवचाय हुं। ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ शं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र–

सूर्यसुतं महेश अंशं मातु छाया नन्दनम्।
कालरूपं कृष्णवर्णं मन्दगते तव वन्दनम्।।

मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः।

तंत्रसार में वर्णित इस मंत्र का 7,11 21,31,51 माला रोज करने से शनिदेव अनुकूल फल प्रदान करते हैं। यदि इस मंत्र के एक करोड़ जप कर लिये जाएं या किसी योग्य ब्राह्मण से कराये जाएं तो व्यापारिक, शारीरिक व कानूनी समस्या से तुरंत राहत मिलती है।

वैदिक शनि साधना

यह साधना शनिवार को पड़ने वाले किसी शुभ मुहूर्त में शास्त्रोक्त विधि से संकल्प लेकर प्रारंभ की जाती है। इसमें नीचे लिखे मंत्र का जाप 21 दिनों तक करना पड़ता है। इस साधना में शनि यंत्र, पहनने के लिये काले वस्त्र, बैठने के लिए काले ऊन का आसन, चौकी या पटरा, शनि यंत्र हेतु काला वस्त्र, तेल का दीपक, रुद्राक्ष की माला और शमी पुष्प व आक पुष्प या काला गुलाब उपयोग में लायें।

मंत्र

ॐ शन्नौ देविरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये। शंयोरभि स्रवंतु नः।

विनियोग– **शन्नोदेवीरिति मंत्रस्य दध्यङ्डाथर्वण ऋषि गायत्री छन्दः। शनिर्देवता। आपो बीजम्। वर्तमान इति शक्तिः। शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।**

ऋष्यादि न्यास– **ॐ दध्यङ्डाथर्वणऋषये नमः शिरसि।।१।। ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे।।२।। ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः हृदये।।३।। ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये।।४।। ॐ वर्तमानशक्तये नमः पाद्‌यो।।५।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।**

करन्यास– **ॐ शन्नोदेवीरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।।१।। ॐ अभिष्टये तर्जनीभयां नमः।।२।। ॐ आपोभवंतु मध्यमाभ्यां नमः।।३।। ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः।।४।। ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।५।। ॐ अभिस्त्रवंतुनः करतल पृष्ठाभ्यां नमः।।६।। इति करन्यासः।**

हृदयादिन्यास– **ॐ शन्नोदेवीरिति हृदयाय नमः।।१।। ॐ अभिष्टये शिरसे स्वाहा।।२।। ॐ आपो भवन्तु शिखायै वषट्।।३।। ॐ पीतये कवचाय हुं।।४।। ॐ शंय्योरिति नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।। ॐ अभिस्त्रवंतुनः अस्त्राय फट्।।६।।**

मंत्रन्यास– **ॐ शन्न इति शिरसि।।१।। ॐ देवीरिति ललाटे।।२।। ॐ अभिष्टये मुखे।।३।। ॐ आपो हृदये।।४।। ॐ भवन्तु नाभौ।।५।। ॐ**

पीतये कद्याम॥६॥ ॐ शंय्योरूर्वो:॥७॥ ॐ अभिस्त्रवन्तु जानुनो:॥८॥ ॐ पादयो:॥९॥ इति मंत्रन्यास:॥

ध्यान

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः सदास्तु मह्यं वरदो शनैश्चरा॥

शनिग्रह की शांति हेतु की जाने वाली इस साधना का प्रारंभ शनिवार को जप करना चाहिए और प्रतिदिन 21 माला का जाप अवश्य करना चाहिए। एक बात का विशेष ध्यान रखें कि जितनी माला पहले दिन हुई है, उतनी ही माला का जाप 21 दिन तक होना चाहिए, माला का क्रम न तोड़ें। इस बीच शनि से संबंधित वस्तुओं का नियमित दान भी आवश्यक है। जितने दिनों तक साधना चले, साधक को नियमपूर्वक यम, नियमादि का पालन करते हुए ब्रह्मचर्य रहना चाहिए। साधना के दौरान तामसी भोजन का परित्याग आवश्यक है।

साधना के पहले दिन साधक को शनिदेव के यंत्र को चौकी या पटरे पर काला वस्त्र बिछाकर स्थापित करना चाहिए और स्वयं स्नानोपरांत पवित्र होकर काले वस्त्र धारण कर काले ऊन के आसन पर बैठकर श्री गणेश प्रार्थना करने के बाद साधना का संकल्प लेना चाहिए। शनि यंत्र के पास तेल का दीपक व धूप प्रज्ज्वलित करते हुए शनि प्रतिमा व शनि यंत्र या शनि चित्र का ध्यान करने के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का जाप प्रारंभ करना चाहिए। शनि यंत्र को हमेशा किसी लौह पात्र में स्थापित करना चाहिए। मंत्र जाप करते समय अपनी दृष्टि शनि यंत्र, शनि प्रतिमा या शनि चित्र पर केन्द्रित रखनी चाहिए और यथाशक्ति उसे एकटक देखते रहना चाहिए। यदि आँसू बहने लगे तो कुछ देर आँखों को बंद किया जा सकता है। किंतु उस समय भी मन से शनि यंत्र, शनि प्रतिमा या शनि चित्र का ध्यान अवश्य करना चाहिए। नित्य प्रति 21 माला जाप करने के बाद शनि यंत्र पर सरसों का तेल चढ़ाकर आसन से उठ जाना चाहिए। किंतु ध्यान रहे, जब तक साधना चले, तब तक शयन भी उसी कक्ष में करें, जहाँ

साधना की जा रही है।

साधना के दौरान संभव है शनिदेव भय उत्पन्न करते हैं, लेकिन किसी भी स्थिति में भयभीत होकर मंत्रजाप न रोकें। बीच में ही साधना से उठ जाने पर भारी अनिष्ट होने की संभावना रहती है। नित्य प्रति की जाने वाली साधना में माला समाप्ति के बाद हवन, मार्जन, तर्पण के बाद चावल व काले उड़द को पकाकर शनिदेव को भोग अवश्य लगायें।

साधना के अंतिम दिन जितने अभी तक मंत्र हुए हैं, उनका दशांश हवन, मार्जन व तर्पण भी करें। हवन के दौरान साधक को शनिदेव का दर्शन भी हो जाया करता है। ध्यान रहे, यदि दर्शन न भी हों तो भी उक्त साधना निष्फल नहीं जाती। साधक को इसका फल अवश्य मिलता है। इस वैदिक साधना से उक्त शनि मंत्र सिद्ध हो जाता है, जिससे अपने कल्याण के साथ दूसरों का भी कल्याण बड़ी आसानी से किया जा सकता है।

यदि कोई व्यक्ति उक्त मंत्र इस वैदिक विधि से सिद्ध कर लेता है तो उसकी सभी ग्रह बाधाएँ दूर हो जाती हैं। शत्रु-भय से छुटकारा पाने के लिए उक्त मंत्र की 21 माला जाप पर्याप्त रहता है। किसी यात्रा की सफलता हेतु उक्त शनिमंत्र का 11 या 21 बार जाप पर्याप्त है। यदि ऐसा लगे कि कोई प्रिय कार्य सम्पन्न होने में बाधाएँ आ सकती हैं तो बाधा निवारण के लिए उक्त मंत्र का 108 बार जाप आवश्यक है। साथ ही, रोज सोने के पहले मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप करना भी बहुत कारगर सिद्ध होता है। मंत्र के जाप से मनःस्थिति तुरन्त ठीक हो जाती है। यदि किसी के कारोबार में समस्या आ रही हो तो इस मंत्र का मध्य रात्रि में स्थान पवित्र करके तेल का दीपक जलाकर 21 दिन तक प्रतिदिन पाँच माला जाप करने से कैसी भी कारोबारी समस्या ठीक हो जाती है।

अथ दानद्रव्याणि

माषांश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम्।
कृष्णा च धेनुः प्रवदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनंदनाय॥

तंत्रोक्त शनि साधना

तंत्रोक्त साधना में काले तिल, काले वस्त्र, काले ऊन के आसन, मूंगे की माला, धूप, दीप, शनियंत्र, काले रंग में रंगे सरसों तेल में भीगे अक्षत (चावल) और काले उड़द की जरूरत पड़ती है। साधना का स्थान एकांत में अवस्थित नदी किनारे या गंगा-यमुना किसी पुराने पीपल के पेड़ के नीचे होना चाहिए। यदि पीपल किसी शमशान में हो तो और बेहतर है। इस साधना में प्रयुक्त होने वाला तांत्रिक मंत्र इस प्रकार है- **'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।'**

यह साधना करने के लिए साधक को स्नानोपरांत काले वस्त्र पहनकर गणेश आराधन व गुरू पूजन करना चाहिए, तदोपरांत शनि से प्रार्थना करें। हे शनि आप मुझे धैर्य और साधना की सफलता का आशीर्वाद प्रदान करें। इस प्रार्थना के बाद मार्गदर्शक गुरु के निर्देशानुसार संकल्प करके साधना के आसन पर अवस्थित हो शनि प्रतिमा व शनियंत्र को काले वस्त्र का आसन देकर पूजन करें और पूजनोपरांत विधिवत मंत्र जाप प्रारंभ करने के पूर्व साधक को अपने शरीर में सरसों का तेल अवश्य लगा लेना चाहिए। इस साधना में प्रयुक्त होने वाली पूजन सामग्रियों को अपने पास में रखकर जाप प्रारंभ करना चाहिए। शनिवार से प्रारंभ होकर चलने वाली यह साधना 40 दिनों में समाप्त होती है। इसमें प्रतिदिन 108 माला का जाप अति आवश्यक है और जाप के बाद उक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए जितने मंत्र जाप हुए हैं, उन मंत्रों का दशांश हवन करना चाहिए और दशांश का मार्जन व मार्जन का तर्पण करना चाहिए। आहुति तिल व तेल से करनी चाहिए। इस साधना में साधक को केवल दूध या फलों का सेवन संध्याकाल में करना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पूरा पालन भी आवश्यक है। यह साधना अर्धरात्रि में प्रारंभ की जाती है। मंत्र जाप के दौरान शनि प्रतिमा या शनि यंत्र पर अपनी दृष्टि एकाग्र करनी चाहिये।

साधक को शयन भी उसी आसन पर करना चाहिए। साधना के अंतिम दिन अब तक जितने मंत्र जाप हुए हैं, उन मंत्रों का दशांश हवन उसका मार्जन व तर्पण करें। श्रद्धापूर्वक की गई साधना के फलस्वरूप इष्टदेव के दर्शन होते हैं और मनोनुकूल इच्छाएँ भी पूरी होती हैं। साधक को साधना के दौरान अहंकार और भय से रहित रहना चाहिए। भयभीत और अहंकार युक्त हृदय में दर्शनों का आनंद नहीं मिलता। साधना के दौरान अनेकों प्रकार के विचित्र अनुभव भी होने लगते हैं। इसलिए साधक को दृढ़ निश्चय और प्रभु की प्रार्थना के बल पर अडिग बने रहना चाहिए। किसी भी स्थिति में आसन से उठना नहीं चाहिये।

अतः हर स्थिति में जप जारी रखें और शनिदेव को प्रणाम कर अपनी सफलता की कामना को मन ही मन अवश्य दुहराते रहें। 40 दिनों की इस साधना में उक्त मंत्र पूर्ण सिद्ध हो जाता है, जिसके द्वारा साधक अपने साथ दूसरों का कल्याण भी करने में समर्थ हो जाते हैं। तत्पश्चात् किसी भी कार्य की सफलता के लिए मात्र इस मंत्र का 108 बार जाप पर्याप्त होता है। किंतु यदि मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेषण आदि अभिचार कर्म करना हो तो साधक को उक्त मंत्र का 11 माला अवश्य जाप करना चाहिए और उसका दशांश हवन, मार्जन व तर्पण भी यथाविधि अवश्य करना चाहिए, परंतु किसी अनिष्ट कार्य के लिए सिद्धि नहीं लगानी चाहिए, अन्यथा मंत्र सिद्धि लुप्त हो जायेगी।

हे देव जिस प्रकार भौंरा गुंजार करता हुआ पुष्प के रस का आस्वादन करता रहता है, उसी प्रकार मैं भी भौंरे के समान गुंजार करता हुआ (ॐ शं शनैश्चराय नमः) आपकी रसमयी भक्ति का आस्वादन ले पाऊँ, हे दाता यही वरदान चाहता हूँ।

प्रमुख शनि साधना मंत्र

सर्वबाधा निवारक वैदिक गायत्री मंत्र–

शनि गायत्री

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरुपाय धीमहि,
तन्नौ शौरिः प्रचोदयात्।

प्रतिदिन श्रद्धानुसार शनि गायत्री का जाप करने से घर में सदैव मंगलमय वातावरण बना रहता है।

वैदिक शनि मंत्र

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये
शं योरभिस्रवन्तु नः॥

शनिदेव को प्रसन्न करने का सबसे पवित्र और अनुकूल मंत्र है। इसकी पाँच माला सुबह–शाम करने से शनिदेव की भक्ति व प्रीति मिलती है।

पौराणिक शनि मंत्र

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

यह बहुत ही सटीक फल देने वाला शनि मंत्र है। इसका यदि सवा करोड़ जाप स्वयं करे या विद्वान साधकों से करवाएं तो जातक राजा के समान सुख प्राप्त करता है।

शनि ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र

सूर्यपुत्रो दीर्घ देहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥

सूर्योदय के समय, सूर्य दर्शन करते हुए 21 या 7 बार इस मंत्र का पाठ करना शनि शांति में विशेष उपयोगी होता है।

कष्ट निवारण शनि मंत्र

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।

चर्तुभुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तुं मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

इस मंत्र से अनावश्यक समस्याओं से छुटकारा मिलता है। प्रतिदिन एक माला सुबह शाम करने से शत्रु चाहकर भी नुकसान नहीं पहुँचा पायेगा।

सुख-समृद्धि दायक शनि मंत्र

कोणस्थ पिंगलो बभ्रु कृष्णौ रोद्रान्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः।।

इस शनि स्तुति को प्रातःकाल 21 या 7 बार पाठ करने से शनिजनित कष्ट नहीं व्यापते और सारा दिन सुखपूर्वक बीतता है।

किसी शनिवार से आरंभ करके 21 दिनों में शनि के तांत्रिक शनि मंत्र– **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः** का 23000 जाप करने से घर में सुख-शांति आती है।

शनि पत्नी नाम स्तुति

ॐ शं शनैश्चराय नमः

ध्वजनि धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया।
कंटकी कलही चाऽथ तुरंगी महिषी अजा।।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

यह बहुत ही अद्‌भुत और रहस्यमय स्तुति है। यदि आपको कारोबारी, पारिवारिक या शारीरिक समस्या हो। इस मंत्र का विधिविधान से जाप और अनुष्ठान किया जाये तो कष्ट आपसे कोसों दूर रहेंगे। यदि आप अनुष्ठान न कर सकें तो प्रतिदिन इस मंत्र की एक माला अवश्य करें, घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

शांत धनी मन्द चेष्ट हैं, शुष्क गूढ़ अरू धीर।
नित्य क्रूर अरू श्रेष्ठ हैं, भव्य वन्द्य अति वीर।।
नीलांजन निभ अरू शत, तूणीर सर्व धार।
भक्ति के वश भानू पुत्र, वरदायक बलकार।।

श्री शनैश्चर स्तोत्र

दशरथकृतस्तोत्र साधना

विनियोग

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप छन्दः, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

कोणाऽन्तकोरौद्रयमोऽथबभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरीः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥१॥
सुराऽसुराः किंपुरुषोनगेन्द्रागन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥२॥
नरानरेन्द्राः पशवोमृगेन्द्रावन्याश्च ये कीटपतंगभृंगा।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥३॥
देशाश्चदुर्गाणिवनानि यत्रसेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥५॥
प्रयागकूलेयमुना तटे च सरस्वती पुण्य जले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्म तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥६॥
अन्य प्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥७॥
स्त्रष्टास्वयं भूर्भुवनत्रयस्यत्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रै पशुवान्धवैश्च।
पठेत्तुसौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥९॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥१०॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥११॥

श्री शनिस्तवराजः

संकट निवारण व मनोवांछित फलों की प्राप्ति में विशेष उपयोगी

विनियोग

अस्य श्रीशनैश्चरस्तवराजस्य सिन्धुद्वीपऋषिः। गायत्री छन्दः, आपो देवता, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

नारद उवाच–

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम् ॥१॥
शिरो मे भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती ॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं वलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः ॥४॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरनेमिबलैर्युताम् ॥५॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नैव संशयः।
ॐ सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शितिकण्ठनिभो नीलश्चछायाहृदयनन्दनः ॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्ष स्थूलरोमा बलीमुखः।
दीर्घो निर्मांसंगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः।
मन्दो मन्दगतिः खञ्जोस्ततश्च संवर्तको यमः ॥९॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी।

कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥१०॥
केतुदेवपतिबार्हुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
कुशी मरूत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभू ॥११॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वर ।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्यभुग् राज्यदायकः ॥१२॥
छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्माविरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥१५॥
आदित्यः भयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिद्रुक्षदयिता त्रयोदशितिथिप्रियः ॥१६॥
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥१७॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्य भयदायकः ।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्चयजनच्छविः ॥१८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥
पठेन्नित्यं तस्य पीड़ा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् य स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीड़ा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥
विधाय लौहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।

बाधाचान्यग्रहाणां च यः पठेतस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
रोगी रोगाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥२४॥
पुत्रबान्धनवान् श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः ॥२५॥

नारद उवाच

स्तवं निशम्य पार्थस्य, प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः।
दत्त्वा राज्ञे वरं, कामं शनिश्चरोन्तर्दधे तदा ॥२६॥

प्रस्तुत शनि स्तोत्र का जाप प्रतिदिन करने से शनि की कृपा प्राप्त होती है, ग्रहबाधा शान्त होती है तथा गृह क्लेश मिटता है। मन में श्रद्धा और विश्वास से यदि इस स्तोत्र का जाप प्रतिदिन ग्यारह बार किया जाये तो मनुष्य की सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयग्ग्स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदांऽगिरोभिः पितृभिस्संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्, हविषा मादयस्व॥ ॐ अधिदेवता प्रत्याधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

श्रीदशरथकृतशनिस्तोत्रम्

विनियोग– श्री गणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री शनिस्तोत्रमन्त्रस्य, कश्यपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, सौरिर्देवता, रां बीजम्, निःशक्ति, कृष्णवर्णेति कीलकम्, धमार्थ, काम-मोक्षात्मक-चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धहर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यासः

करन्यास– शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः॥१॥ अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णाङ्गाय अनामिकाभ्यां नमः॥२॥ शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥३॥

हृदयादिन्यास– शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये नमः शिरसे स्वाहा॥ अधोक्षजाय नमः शिखायै वौषट्। कृष्णाङ्गाय कवचाय हुं। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय नमः अस्त्राय फट्॥

दिग्बन्धनम्– ॐ भूर्भुवः स्वः, इति दिग्बन्धनम्।

(इस मंत्र को 5 बार पढ़कर, सभी दिशाओं में जल छिड़कें)

ध्यानम्

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥१॥

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रह निवारणम्।
शनैश्चर प्रसादार्थंचिन्तयामास पार्थिवः॥२॥
रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा।
चक्रवर्ती च यज्ञेयः सप्तद्वीपाधिपोऽभवत्॥३॥
कृतिकान्तेशनिंर्ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वातु शनिर्यास्यिति साम्प्रतं॥४॥
शकटं मेधमित्युक्तं सुराऽसुरभयङ्करम्।

द्वादशाब्दंतु दुर्भिज्ञे भविष्यति सुदारूणम्।।५।।
एतच्छुत्वातुतद्वाक्यंमन्त्रिभिः सह पार्थिवः।
व्याकुलंचजगद्दृष्टवा पौर जानपदादिकम्।।६।।
ब्रुवन्तिसर्वलोकाश्च भयमेतत्समागतम्।
देशाश्चनगरग्रामाः भयभीता समागताः।।७।।
पप्रच्छ प्रयतोराजा वसिष्ठप्रमुखान् द्विजान्।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूहिमे द्विजसत्तमाः।।८।।

वशिष्ठ उवाच

प्रजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्नेकुतः प्रजाः।
अयं योगोऽध्यवसायश्च ब्रह्मा शक्रादिभिः सुरैः।।९।।
तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितं।।१०।।
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम्।
त्रिलक्षयोजनं स्थानं चन्द्रस्योपरिसंस्थितम्।।११।।
रोहिणीपृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः।
रथकेतुकाञ्चने दिव्ये मणिनातद्द्विभूषिते।।१२।।
हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छ्रिते।
दीप्तमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्वलैः।।१३।।
व्यराजच्च तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः।
आकर्णचापामाकृष्य सहस्त्रास्त्रं नियोजितं।।१४।।
कृतिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्रविशतांच रोहिणीम्।
दृष्ट्वा दशरथंचाग्रे तस्थौतु भृकुटामुखः।।१५।।
संहास्त्रास्त्रं शनिर्दृष्टवा सुराऽसुरनिषूदनम्।
प्रहस्य चभयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत्।।१६।।

शनिरुवाच

पौरुषं तव राजेन्द्र! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुरामनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः।।१७।।

मयाविलोकिताः सर्वेभयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसापौरुषेण च॥१८॥
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन।

दशरथ उवाच

प्रसन्नोयदि मे सौरे! एकश्चास्तु वरः परः॥१९॥
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी॥२०॥
याचितं तु महासौरे! नान्यमिच्छाम्यहं परम्।
एवमस्तुशनि प्रोक्तं वरंलब्ध्वा तु शाश्वतम्॥२१॥
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुब्रत॥२२॥
प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
नभेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दन॥२३॥
द्वादशाब्दं तुं दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरेषामदीयां च त्रैलोक्ये स्थापय प्रभो॥२४॥
एवं वरं तु संप्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वा चैव कृताञ्जलिः॥२५॥
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकम्।
राजादशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत्॥२६॥

दशरथ उवाच

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः सुरूपगात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः॥२७॥
नमोनित्यं क्षुधार्त्ताय अतृप्ताय च वै नमः।
नमः कालाग्निरूपायकृष्णाङ्गाय च वै नमः॥२८॥
नमोदीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः।
नमोऽस्तुकोटराक्षाय दुर्भिक्षाय कपालिने॥२९॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।

नमो मन्दगते! रौद्र भानुज! भयदायिने॥३०॥
अधोदृष्टे! नमस्तेऽस्तु संवर्तकभयाय च।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च॥३१॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेतु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासिवै राज्यं रूष्टोहरसि तत्क्षणात्॥३२॥
सुर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।
देवाऽसुर मनुष्याश्च पशु-पक्षि-सरीसृपः॥३३॥
त्वया विलोकिताः सर्वे देवाचाशुव्रजन्तिते।
ब्रह्माशक्रोहरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः॥३४॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येयेत्वयादृष्ट्यावलोकिता।
देशाश्चनगरग्रामा द्वीपाश्चैवतथाद्रुमाः॥३५॥
त्वयाविलोकिता सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे! वरदो भव भानुज॥३६॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिः सः राजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः॥३७॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत।
एवं वरं दास्यामि यत्ते मनसि वर्तते॥३८॥

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे! वरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृतिपिंगाक्ष! पीडादेया न कस्यचित्॥३९॥
प्रसादं कुरू मे सोरे! वरोऽयं मे मयेसिप्तः।

शनिरुवाच

अदेयस्तु वरोयुस्मत् तुष्टोऽहं च ददामि ते॥४०॥
त्वयाप्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्तिमानवाः।
देवासुर मनुष्याश्चसिद्ध विद्याधरोरगाः॥४१॥
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्यु स्थानचतुर्थेवाजन्म-व्यय-द्वितीयगे॥४२॥

गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वि-त्रिसन्ध्यायां वा शुचिर्भूत्वासमाहितः।।४३।।
न तस्य जायते पीडा कृता वै ममनिश्चितम्।
प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्थजाम्।।४४।।
वरदांच धनुः शूल बाणांकितकरांशुभाम्।
अयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः।।४५।।
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैघृतनीलपंकजैः।
पायसंशर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्।।४६।।
ब्राह्मणान् भोजयेत्तत्र स्वशक्त्याघृत पायसैः।
तैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं चयथाविधि।।४७।।
पूजनं चैव मन्त्रेण कुकुंमंच विलेपयेत्।
नील्यावाकृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः।।४८।।
ददन्मे प्रीतये यस्तुकृष्णवस्त्रादिकं शुभम्।
धेनुवृषभंवाऽपि सवत्सां च पयस्विनीम्।।४९।।
एवं विशेषपूजां यः मद्द्वा कुरूते नृप।
मन्त्र द्वारा विशेषेन स्तोत्रेणानेन पूजयेत्।।५०।।
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृतांजलि।
तस्यपीडां नचैवाहं करिष्यामि कदाचन।।५१।।
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्यच।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत्।।५२।।
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा।
मत्वा कृतार्थमात्मनं नमस्कृत्य शनैश्चरं।।५३।।
शनैश्चराध्यनुज्ञातो रथमारूह्य वीर्यवान्।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभवत्तदा।।५४।।
स्वार्थसिद्धिभवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत्।
कोणस्थः पिङ्गलोवभ्रुः कृष्णोरौद्रान्तको यमः।।५५।।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयसंस्थितः।

एतानिशनिनामानिजपेदश्वत्थ सन्निधौ।।५६।।
शनैश्चरकृता पीडा न कदापि भविष्यति।
अल्पमृत्युविनाशाय दु:खस्योद्धारणायच।।५७।।
स्नातव्यं तिलतैलेन धान्य माषादिंक तथा।
लौहं देव च विप्राय सुवर्णेन समन्वितम्।।५८।।
उशनिस्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयाद्वा समाहित:।
विजयंचार्थकामंचारोग्यं सुखमवाप्नुयात्।।५९।।

(इति श्रीशनिस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

शनि

शनिदेव अन्त:करण के प्रतीक हैं। बाह्य प्रवृत्तियों और आंतरिक चेतना को मिलाने में पुल का कार्य करते हैं। अहं भाव द्योतक हैं। आत्मज्ञान, तत्वज्ञान, स्वतंत्र विचार, आत्म संयम, धैर्य, दृढ़ता, गाम्भीर्य, विचारशीलता के प्रतीक हैं। शरीर की हड्डियाँ, नीचे के दाँत, बड़ी आँतें एवं मांसपेशियों पर प्रभाव डालते हैं।

दशरथकृत शनि स्तोत्र

(हिन्दी पद्यांश, भक्त बजरंगकृत)

हे श्यामवर्णवाले, हे नीलकण्ठ वाले।
कालाग्नि रूप वाले, हल्के शरीर वाले,
स्वीकारो नमन मेरे, शनिदेव हम तुम्हारे।
सच्चे सुकर्म वाले हैं, मन से हो तुम हमारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे दाढ़ी-मूंछों वाले, लम्बी जटायें वाले,
हे दीर्घ नेत्र वाले, शुष्कोदरा निराले।
भय आकृति तुम्हारी, सब पापियों को मारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे पुष्ट देहधारी, स्थूल-रोम वाले,
कोटर सुनेत्र वाले, हे बज्र देह वाले।
तुम ही सुयश दिलाते, सौभाग्य के सितारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे घोर रौद्र रूपा, भीषण कपालि भूपा,
हे नमन सर्वभक्षी बलिमुख शनी अनूपा।
हे भक्तों के सहारे, शनि! सब हवाले तेरे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे सूर्य-सुत तपस्वी, भास्कर के भय मनस्वी,
हे अधो दृष्टि वाले, हे विश्वमय यशस्वी।
विश्वास श्रद्धा अर्पित सब कुछ तू ही निभाले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।
अतितेज खड्गधारी, हे मन्दगति सुप्यारी,
तप-दग्ध-देहधारी, नित योगरत अपारी।

संकट विकट हटा दे, हे महातेज वाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

नितप्रियसुधा में रत हो, अतृप्ति में निरत हो,
हो पूज्यतम जगत में, अत्यंत करुणा नत हो।
हे ज्ञान नेत्र वाले, पावन प्रकाश वाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

जिस पर प्रसन्न दृष्टि, वैभव सुयश की वृष्टि,
वह जग का राज्य पाये, सम्राट तक कहाये।
उत्तम स्वभाव वाले, तुमसे तिमिर उजाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हो वक्र दृष्टि जिसपै, तत्क्षण विनष्ट होता,
मिट जाती राज्यसत्ता, हो के भिखारी रोता।
डूबे न भक्त-नैय्या पतवार दे बचा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हो मूलनाश उनका, दुर्बुद्धि होती जिन पर,
हो देव असुर मानव, हो सिद्ध या विद्याधर।
देकर प्रसन्नता प्रभु अपने चरण लगा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

होकर प्रसन्न हे प्रभु! वरदान यही दीजै,
बजरंग भक्त गण को दुनिया में अभय कीजै।
सारे ग्रहों के स्वामी अपना विरद बचा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

शनि स्तोत्र का जाप करे, सुबह दोपहरी शाम।
और सुने चित्त लाय के, प्राप्ति विजया काम॥

दशरथकृत शनि स्तोत्र

(हिन्दी पद्यांश, भक्त बजरंगकृत)

हे श्यामवर्णवाले, हे नीलकण्ठ वाले।
कालाग्नि रूप वाले, हल्के शरीर वाले,
स्वीकारो नमन मेरे, शनिदेव हम तुम्हारे।
सच्चे सुकर्म वाले हैं, मन से हो तुम हमारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे दाढ़ी-मूंछों वाले, लम्बी जटायें वाले,
हे दीर्घ नेत्र वाले, शुष्कोदरा निराले।
भय आकृति तुम्हारी, सब पापियों को मारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे पुष्ट देहधारी, स्थूल-रोम वाले,
कोटर सुनेत्र वाले, हे बज्र देह वाले।
तुम ही सुयश दिलाते, सौभाग्य के सितारे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे घोर रौद्र रूपा, भीषण कपालि भूपा,
हे नमन सर्वभक्षी बलिमुख शनी अनूपा।
हे भक्तों के सहारे, शनि! सब हवाले तेरे।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हे सूर्य-सुत तपस्वी, भास्कर के भय मनस्वी,
हे अधो दृष्टि वाले, हे विश्वमय यशस्वी।
विश्वास श्रद्धा अर्पित सब कुछ तू ही निभाले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

अतितेज खड्गधारी, हे मन्दगति सुप्यारी,
तप-दग्ध-देहधारी, नित योगरत अपारी।

संकट विकट हटा दे, हे महातेज वाले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

नितप्रियसुधा में रत हो, अतृप्ति में निरत हो,
हो पूज्यतम जगत में, अत्यंत करुणा नत हो।
हे ज्ञान नेत्र वाले, पावन प्रकाश वाले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

जिस पर प्रसन्न दृष्टि, वैभव सुयश की वृष्टि,
वह जग का राज्य पाये, सम्राट तक कहाये।
उत्तम स्वभाव वाले, तुमसे तिमिर उजाले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हो वक्र दृष्टि जिसपै, तत्क्षण विनष्ट होता,
मिट जाती राज्यसत्ता, हो के भिखारी रोता।
डूबे न भक्त-नैय्या पतवार दे बचा ले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

हो मूलनाश उनका, दुर्बुद्धि होती जिन पर,
हो देव असुर मानव, हो सिद्ध या विद्याधर।
देकर प्रसन्नता प्रभु अपने चरण लगा ले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

होकर प्रसन्न हे प्रभु! वरदान यही दीजै,
बजरंग भक्त गण को दुनिया में अभय कीजै।
सारे ग्रहों के स्वामी अपना विरद बचा ले।।
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे।।

शनि स्तोत्र का जाप करे, सुबह दोपहरी शाम।
और सुने चित्त लाय के, प्राप्ति विजया काम।।

श्रीशनैश्चरसहस्रनामस्तोत्र

विनियोग एवं न्यास

अस्य श्रीशनैश्चरसहस्रनामस्तोत्र महामन्त्रस्य। कश्यपऋषि: अनुष्टप्छन्द:। शनैश्चरो देवता। शम् बीजम्। नम शक्ति:। मम् कीलकम्। शनैश्चरप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग:।

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नम:। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नम:। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नम:। सौरये अनामिकाभ्यां नम:। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नम:। छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। शनैश्चराय हृदयाय नम:। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। सौरये कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्। भूर्भुस्वसुवरोमिति दिग्बन्ध:।

शनिदेव का ध्यान

चापासनो गृध्रधरस्तु नील: प्रत्यङ्मुख: काश्यप गोत्रजात:।
सशूलचापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरि:॥
नीलाम्बरो नीलवपु: किरीटी गृध्रासनास्थो विकृताननश्च।
केयूरहारादि विभूषितांग स्सदाऽस्तु मे मन्दगति: प्रसन्न:॥

शनिसहस्रनामस्तोत्रम्

अमिताभाष्यघहर: अशेषदुरितापह:।
अघोररूपोऽतिदीर्घकायोऽशेषभयानक: ॥१॥
अनन्तोअन्नदाता चाश्वत्थमूलजपे प्रिय:।
अतिसम्पत्प्रदोऽमोघ: अन्यस्तुल्याप्रकोपित: ॥२॥
अपराजितो अद्वितीय: अतितेजोऽभयप्रदा:।
अष्टमस्थोऽञ्जननिभ: अखिलात्मार्कनन्दन: ॥३॥
अतिदारुण अक्षोभय: अप्सरोभि: प्रपूजित:।
अभीष्टफलदोऽरिष्टमथनोऽमरपूजित: ॥४॥

अनुग्राह्यो अप्रमेय पराक्रम विभीषणः।
असाध्ययोगो अखिल दोषघ्नः अपराकृतः ॥५॥
अप्रमेयोऽतिसुखदः अमराधिपपूजितः।
अवलोकात् सर्वनाशः अश्वत्थाम द्विरायुधः ॥६॥
अपराधसहिष्णुश्च अश्वत्थाम सुपूजितः।
अनन्तपुण्यफलदो अतृप्तोतिबलोपिच ॥७॥
अवलोकात् सर्ववन्द्यःअक्षीणकरुणानिधिः।
अविद्यामूलनाशश्च अक्षय्यफलदायकः ॥८॥
आनन्दपरिपूर्णश्च आयुष्कारक एवच।
आश्रितेष्टार्थवरदः आधिव्याधिहरोपिच ॥९॥
आनन्दमय आनन्दकरौ आयुधधारकः।
आत्मचक्रकाधिकारी चआत्मस्तुत्यपरायणः ॥१०॥
आयुष्करो आनुपूर्व्यः आतायत्तजगत्त्रयः।
आत्मनापजपप्रीतः आत्माधिकफलप्रदः ॥११॥
आदित्यसंभवो आर्तिभञ्जनो आत्मरक्षकः।
आपद्बान्धव आनन्दरूपो आयुः प्रदोपिचः ॥१२॥
आकर्णपूर्णचापश्च आत्मोदिष्ट द्विजप्रदः।
आनुकूल्यो आत्मरूप प्रतिमादान सुप्रियः ॥१३॥
आत्मारामो आदिदेवो आपन्नार्ति विनाशनः।
इन्दिरार्चितपादश्च इन्द्रभोगफलप्रदः ॥१४॥
इन्द्रदेवस्वरूपश्च इष्टेष्टवरदायकः।
इष्टापूर्तिप्रदो इन्दुमनीष्टवरदायकः ॥१५॥
इन्दिरारमणः प्रीतः इन्द्रवंशनृपार्चितः।
इहामुत्रेष्टफलदः इन्दिरारमणार्चितः ॥१६॥
इंद्रियो ईश्वरप्रीतः ईषणात्रयवर्जितः।
उमास्वरूपउद्बोध्यः उशना उत्सवप्रियः ॥१७॥

उमादेव्यर्चनप्रीतः उच्चस्थोच्चफलप्रदः।
उरुप्रकाशो उच्चस्थ योगदः उरुपराक्रमः ॥१८॥
ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारी ऊर्ध्वलोकादिनायकः।
ऊर्जस्वी ऊनपादश्च ऋकाराक्षरपूजितः ॥१९॥
ऋषिप्रोक्त पुराणज्ञः ऋषिभिःपरिपूजितः।
ऋग्वेदवन्द्यो ऋग्रूपी ऋजुमार्गप्रवर्तकः ॥२०॥
लुलितोद्धारको लूत भवपाशप्रभञ्जनः।
लूकाररूपकोलब्धर्ममार्गप्रवर्तकः ॥२१॥
एकाधिपत्यसाम्रज्यप्रदो एनौघनाशनः।
एकपाद्येक ऐकोनविंशतिमासभुक्तिदः ॥२२॥
एकोनविंशतिवर्षदशो एणांकपूजितः।
ऐश्वर्यफलदो ऐन्द्र ऐरावतसुपूजितः ॥२३॥
ओंकार जपसुप्रीतः ओंकार परिपूजितः।
ओंकारबीजो औदार्य हस्तो औन्नत्यदायकः ॥२४॥
औदार्यगुण औदार्य शीलोऔषधकारकः।
करपंकजसन्नद्धधनुश्च करुणानिधिः ॥२५॥
कालः कठिनचित्तश्च कालमेघसमप्रभः।
किरीटी कर्मकृत्कारयिताकालसहोदरः ॥२६॥
कालाम्बरः काकवाहः कर्मठः काश्यपान्वयः।
कालचक्रप्रभेदी च कालरूप चकारणः ॥२७॥
कारिमूर्तिः कालभर्ता किरीटमकुटोज्वलः।
कार्यकारण कालज्ञः काञ्चनाभरथान्वितः ॥२८॥
कालदंष्ट्रः क्रोधरूपः कराली कृष्णकेतनः।
कालात्मा कालकर्ता च कृतान्तः कृष्णगोप्रियः ॥२९॥
कालाग्निरुद्ररूपश्च काश्यपात्मजसंभवः।
कृष्णवर्णहयश्चैव कृष्णगोक्षीरसुप्रियः ॥३०॥

कृष्णगोघृतसुप्रीतः कृष्णगोदधिषुप्रियः।
कृष्णगावैकचित्तश्च कृष्णगोदानसुप्रियः ॥३१॥
कृष्णगोदत्तहृदयः कृष्णगोरक्षणप्रियः।
कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकः ॥३२॥
कृष्ण गोदान शान्तस्य सर्वशान्त फलप्रदः।
कृष्णगोस्नान कामस्य गंगास्नानफलप्रदः ॥३३॥
कृष्णगोररक्षणस्यागु सर्वाभीष्टफलप्रदः।
कृष्णगावप्रियश्चैव कपिलापुद्युषु प्रियः ॥३४॥
कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदः।
कपिलादानसुप्रीतः कपिलाज्यहुतप्रियः ॥३५॥
कृष्णश्च कृत्तिकान्तस्थःकृष्णगोवत्ससुप्रियः।
कृष्णमाल्यांबरधरः कृष्णवर्णतनूरुहः ॥३६॥
कृष्णकेतुः कृशकृष्णदेहः कृष्णंबरप्रियः।
क्रूरचेष्टः क्रूरभाव क्रूरदंष्ट्र कुरूपिच ॥३७॥
कमलापति संसेव्यः कमलोद्भवपूजतः।
कामितार्थप्रदः कामधेनु पूजनसुप्रियः ॥३८॥
कामधेनुसमाराध्यः कृपायुष विवर्धनः।
कामधेन्वैकचित्तश्च कृपराज सुपूजितः ॥३९॥
कामदोग्धा च क्रुद्धश्च कुरु वंशसुपूजितः।
कृष्णाङ्गमहिषीदोग्धा कृष्णेन कृतपूजनः ॥४०॥
कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियः कोणस्थ एवच।
कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपः कामपूजितः ॥४१॥
क्रूरावलोनात्सर्वनाशः कृष्णाङ्गदप्रियः।
खद्योतः खण्डनः खड्गधरःखेचरपूजितः ॥४२॥
खरांशुतनयश्चैव खगानां पतिवाहनः।
गोसवासक्तहृदयः गोचरस्थानदोषहृत् ॥४३॥

गृहराश्याधिपश्चैव गृहराज महाबलः ।
गृध्रवाहो गृहपतिः गोचरो गानलोलुपः ॥४४॥
घोरो घर्मो घनतमो घर्मीघनकृपान्वितः ।
घननीलाम्बरधरो डादिवर्ण सुसंज्ञितः ॥४५॥
चक्रवर्तिसमाराध्यः चन्द्रमत्या समर्चितः ।
चन्द्रमत्यार्तिहारी च चराचरसुखप्रदः ॥४६॥
चतुभुर्जश्चापहस्तः चराचरहितप्रदः ।
छायापुत्रः छत्रधरः छायादेवीसुतस्तथा ॥४७॥
जयप्रदो जगन्नीलो जपतां सर्वसिद्धि ।
जपविध्वस्तविमु खो जंभारिपरिपूजितः ॥४८॥
जभांरिवन्द्यो जयदो जगज्जनमनोहरः ।
जगत्रयप्रकुपितो जगत्राणपरायणः ॥४९॥
जयो जयप्रदश्चैव जगानन्दकारकः ।
ज्योतिश्च ज्योतिषां श्रेष्ठो ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्तकः ॥५०॥
झर्झरीकृतदेहश्च झल्लरीवाद्यसुप्रियः ।
ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानगम्यो ज्ञानी ज्ञानमहानिधिः ॥५१॥
ज्ञानप्रबोधकश्चैव ज्ञानदृष्टयावलोकितः ।
टङ्कितारिवललोकश्च टङ्कितैन स्तमोरविः ॥५२॥
टङ्कारकश्चैव टिङ्कृतो टाम्भदप्रियः ।
ठकारमय सर्वस्वः ठकारकृतपूजितः ॥५३॥
डक्कारवाद्यप्रीतिकरः डमड्डमरुकप्रियः ।
डम्भरप्रभवो डम्भः डक्कानादप्रियङ्करः ॥५४॥
डाकिनी शाकिनी भूतसर्वोपद्रवकारकः ।
डाकिनीशाकिनीभूत सर्वोपद्रवनाशकः ॥५५॥
ढकाररूपो डाम्भीको णकारजपसुप्रियः ।
णकारमयमन्त्रार्थः णकारैकशिरोमणिः ॥५६॥

णकारवचनानन्दः णकारकरुणामय।
णकारमय सर्वस्वः णकारैकपरायणः ॥५७॥
तर्जनीधृतसमुद्रश्च तपसां फलदायकः।
त्रिविक्रमनुतश्चैव त्रयीमयवपुर्धरः ॥५८॥
तपस्वी तपसा दग्धदेहः ताम्राधरसतथा।
त्रिकालवेदितव्यश्च त्रिकालमतितोषितः ॥५९॥
तुलोच्चयः त्रासकरः तिलतैलप्रियस्तथा।
तिलान्न सन्तुष्टमनाः तिलदानप्रियस्तथाः ॥६०॥
तिलभक्ष्यप्रियश्चैव तिलचूर्णप्रियस्तथा।
तिलखण्डप्रियश्चैव तिलापूपप्रियस्तथा ॥६१॥
तिलहोमप्रियश्चैव तापत्रयनिवारकः।
तिलतर्पणसन्तुष्टः तिलतैलान्नतोषितः ॥६२॥
तिलैकदत्तहृदयः तेजस्वी तेजसान्निधिः।
तेलसादित्यसङ्काशः तेजोमय वपुर्धरः ॥६३॥
तत्वज्ञः तत्वगस्तीव्रः तपोरूपःतपोमयः।
तुष्टिदस्तुष्टिकृत् तीक्ष्णः त्रिमूर्तित्रिगुणात्मकः॥६४॥
तिलदीपप्रियश्चैव तस्य पीडानिवारकः।
तिलोत्तमामेनकादिनर्तन प्रियएवचः ॥६५॥
त्रिभागमष्टवर्गश्च स्थूलरोमा स्थिरस्तथा।
स्थितः स्थायी स्थापकश्चस्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकः॥६६॥
दशरथार्चितपादश्च दशरथस्तोत्रतोषितः।
दशरथप्रार्थक्लृप्त दुर्भिक्ष विनिवारकः ॥६७॥
दशरथ प्रार्थनाक्लृप्त वरद्वय प्रदायकः।
दशरथस्वात्मदर्शी च दशरथाभीष्टदायकः ॥६८॥
दोर्भिर्धनुर्धरश्चैव दीर्घश्मश्रुजटाधरः।
दशरथस्तोत्रवरदः दशरथाभीप्सितप्रदः ॥६९॥

दशरथस्तोत्रसन्तुष्टः दशरथेन सुपूजितः।
द्वादशष्टजन्मस्थो देवपुङ्गवपूजितः ॥७०॥
देवदानवदर्पघ्नो दिनं प्रतिमुनि स्तुत।
द्वादशस्थो द्वादशात्मा सुतो द्वादश नामभृत ॥७१॥
द्वितीयस्थो द्वादशार्कसूनुः दैवज्ञपूजितः।
दैवज्ञचित्तवासी च दमयन्त्या सुपूजितः ॥७२॥
द्वादशाब्दंतु दुर्भिक्षकारी दुस्स्वप्ननाशनः।
दुराराध्यो दुराधर्षः दमयन्ती वरप्रदः ॥७३॥
दुष्टदूरो दुराचार शमनो दोषवर्जितः।
दुस्सहो दोषहन्ता व दुर्लभो दुर्गमस्तथ ॥७४॥
दुःखप्रदो दुःखहन्ता दीप्तरन्जित दिङ्भुखः।
दीप्यमान मुखांभोजःदमयत्त्याश्शिवप्रदः॥७५॥
दुर्निरोक्षो दृष्टमात्र दैत्यमण्डलनाशकः।
द्विजदानैकनिरतो द्विजाराधनतत्परः ॥७६॥
द्विजसर्वार्तिहारी च द्विजराज समर्चितः।
द्विजदानैकचित्तश्च द्विजराज प्रियङ्करः ॥७७॥
द्विजो द्विजप्रियश्चैव द्विजराजेष्टदायकः।
द्विजरूपो द्विजश्रेष्ठः दोषदो दुस्सहोपिच ॥७८॥
देवादिदेवो देवेशो देवराजसुपूजितः।
देवराजेष्ट वरदो देवराज प्रियङ्करः ॥७९॥
देवादिवन्दितो दिव्यतनुर्देवशिखामणिः।
देवगानप्रियश्चैव देवदेशिकपुङ्गवः ॥८०॥
द्विजात्मजसमाराध्यः ध्येयो धर्मीधनुर्धरः॥
धनुष्मान् धनदाता च धर्माधर्मविवर्जितः ॥८१॥
धर्मरूपो धनुर्दिव्यो धर्मशास्त्रात्मचेतनः।
धर्मराज प्रियकरो धर्मराजस्सुपूजितः ॥८२॥

धर्मराजेष्टवरदो धर्माभीष्टफलप्रदः।
नित्यतृप्तस्वभावश्च नित्यकर्मरतस्तथा ॥८३॥
निजपीडार्तिहारी च निजभक्तेष्टदायकः।
निर्मांसदेहो नीलश्च निजस्तोत्र बहुप्रियः ॥८४॥
नलस्तोत्र प्रियश्चैव नलराजसुपूजितः।
नक्षत्रमण्डलगतो नमतां प्रियकारकः ॥८५॥
नित्यार्चितपदाम्भोजो निजाज्ञापरिपालकः।
नवग्रहरो नीलवपुर्नलकरार्चितः ॥८६॥
नलप्रियानन्दितश्च नलक्षेत्रेनिवासकः।
नलपाक प्रियश्चैव नलपद्भञ्जनक्षमः ॥८७॥
नलसर्वार्तिहारी च नलेनात्मार्थपूजितः।
निपाटवीनिवासश्च नलाभीष्टवरप्रदः ॥८८॥
नलतीर्थ सकृत्स्नानसर्वपीडानिवारकः।
नलेशदर्शनस्याशु साम्राज्यपदवीप्रदः ॥८९॥
नक्षत्रराश्याधिपश्च नीलध्वजविराजितः।
नित्योगरतश्चैव नवरत्नविभूषितः ॥९०॥
नवधा भज्यदेहश्च नवीकृतजगत्त्रयः।
नवग्रहाधिपश्चैव नवाक्षरजपप्रियः ॥९१॥
नवात्मा नवचक्रात्मा नवतत्वाधिपस्तथा।
नवोदन प्रियश्चैव नवधान्यप्रियस्तथा ॥९२॥
निष्कण्टको निस्पृहश्च निरपेक्षोनिरामयः।
नागराजार्चिपदो नागाराजप्रियङ्करः ॥९३॥
नागराजेष्टवरदो नागाभरण भूषितः।
नागेन्द्रगान निरतः नानाभरणभूषितः ॥९४॥
नवमित्र स्वरूपश्च नानाश्चर्यविधायकः।
नानाद्वीपाधिकर्ता च नानालिपिसमावृतः ॥९५॥

नानारूप जगत् स्रष्टा नानारूपजनाश्रयः ।
नानालोकाधिपश्चैव नानाभाषाप्रियस्तथा ॥९६॥
नानारूपाधिकारी च नवरत्नप्रियस्तथा ।
नानाविचित्रवेषाढयः नानाचित्र विधायकः ॥९७॥
नीलजीमूतसङ्काशो नीलमेघसमप्रभः ।
नीलाञ्जनचयप्रख्यः नीलवस्त्रधरप्रियः ॥९८॥
नीचभाषा प्रचारज्ञो नीचे स्वल्पफलप्रदः ।
नानागम विधानज्ञो नाननृपसमावृतः ॥९९॥
नानावर्णाकृतिश्चैव नानावर्णस्वरार्तवः ।
नागलोकान्तवासी च नक्षत्रत्रयसंयुतः ॥१००॥
नाभादिलोकसंभूतो नामस्तोत्रबहुप्रियः ।
नामपारायणप्रीतो नामर्श्चनवरप्रदः ॥१०१॥
नामस्तोत्रैकचित्तश्च नानारोगार्तिभञ्जनः ।
नवग्रहसमाराध्यः नवग्रह भयापहः ॥१०२॥
नवग्रहसुसंपूज्यो नानावेद सुरक्षकः ।
नवग्रहाधिराजश्च नवग्रहजपप्रियः ॥१०३॥
नवग्रहमयज्योतिः नवग्रह वरप्रदः ।
नवग्रहाणामधिपो नवग्रह सुपीडितः ॥१०४॥
नवग्रहाधीश्वरश्च नवमाणिक्यशोभितः ।
परमात्मा परब्रह्म परमैश्चर्यकारणः ॥१०५॥
प्रपन्नभयहारी च प्रमत्तासुरशिक्षकः ।
प्रासहस्तः पङ्गुपादो प्रकाशात्मा प्रतापवान् ॥१०६॥
पावनः परिशुद्धात्मा पुत्रपौत्र प्रवर्धनः ।
प्रसन्नावत्सर्वसुखदः प्रसन्नेक्षण एवच ॥१०७॥
प्रजापत्यः प्रियकरः प्रणतेप्सितराज्यदः ।
प्रजानां जीवहेतुश्च प्राणिनां परिपालकः ॥१०८॥

प्राणरूपी प्राणधारी प्रजानां हितकारकः।
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रज्ञावान्प्रजारक्षणदीक्षितः ॥१०९॥
प्रावृषेण्यः प्राणकारी प्रसन्नोत्सववन्दितः।
प्रज्ञानिवासहेतुश्च पुरुषार्थैकसाधनः ॥११०॥
प्रजाकरः प्रानुकूल्यः पिङ्गलाक्षः प्रसन्नधीः।
प्रपञ्चात्मा प्रसविता पुराण पुरुषोत्तम ॥१११॥
पुराण पुरुषश्चैव पुरुहूतः प्रपञ्चधृत्।
प्रतिष्ठितः प्रीतिकरः प्रियकारीप्रयोजन ॥११२॥
प्रीतिमान् प्रवरस्तुत्यः पुरूरवसमर्चितः।
प्रपञ्चकारी पुण्यश्च पुरुहूतसमर्चितः॥११३॥
पाण्डवादि सुसंसेव्यः प्रणवः पुरुषार्थदः।
पयोदसमवर्णश्च पाण्डुपुत्रार्तिर्दभञ्जनः ॥११४॥
पाण्डुपुत्रेष्टदाता च पाण्डवानां हितङ्करः।
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥११५॥
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्ट निवारकः।
पाण्डुपुत्राद्यर्चितश्च पूर्वजश्च प्रपञ्चभृत ॥११६॥
परचक्रप्रभेदी च पाण्डवेषुवनप्रदः।
परब्रह्म स्वरूपश्च पराज्ञा परिवर्जितः ॥११७॥
परात्परः पाशहन्ता परमाणुःप्रपञ्चकृत्।
पातङ्गी पुरुषाकारः परशंभुसभुद्भवः ॥११८॥
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रपञ्चोद्भवसंभवः।
प्रसन्नः परमोदारः पराहङ्कारभञ्जनः ॥११९॥
परः परमकारुण्यःपरब्रह्ममयस्तथा।
प्रपन्नभयहारी च प्रणतार्तिहरस्तथा ॥१२०॥
प्रसादकृत् प्रपञ्चश्च पराशक्ति समुद्भवः।
प्रदानपावनश्चैव प्रशान्तात्मा प्रभाकरः ॥१२१॥

प्रपञ्चात्मा प्रपञ्चोपशमनः पृथिवीपतिः ।
परशुराम समाराध्यः परशुरामवरप्रदः ॥१२२॥
परशुराम चिरञ्जीविप्रदः परमसावनः ।
परमहंसस्वरूपश्च परमहंससुपूजितः ॥१२३॥
पञ्चनक्षत्राधिपश्च पञ्चनक्षत्रसेवितः ।
प्रपञ्च रक्षितश्चैव प्रपञ्जस्यभयङ्करः ॥१२४॥
फलदानप्रियश्चैव फलहस्तः फलप्रदः ।
फलाभिषेकप्रियश्च फल्गुनस्य वरप्रदः ॥१२५॥
पुटच्छमित पापौघः फल्गुनेन प्रपूजित ।
फणिराजप्रियश्चैव पुल्लाम्बुज विलोचनः ॥१२६॥
बलिप्रियोबली बभ्रुः ब्रह्मविष्णवीश क्लेशकृत् ।
ब्रह्मविष्णीशरूपश्च ब्रह्मशक्रादिदुर्लभः ॥१२७॥
बासदष्टर्यां प्रमेयाङ्गो बिभ्रत्कवचकुण्डलः ।
बहुश्रुतो बहुमतिः ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः ॥१२८॥
बलप्रमथनो ब्रह्मा बहुरूपो बहुप्रदः ।
बालार्क्द्युतिमान्बाले बृहद्वक्षो बृहत्तमः ॥१२९॥
ब्रह्माण्डभेदकृच्चैव भक्तसर्वार्थसाधकः ।
भव्यो भोक्ता भीतिकृच्च भक्तानुग्रहकारकः ॥१३०॥
भीषणो भैक्षकार च भूसुरादि सुपूजितः ।
भोगभाग्यप्रदश्चैव भस्मीकृत जगत्त्रयः ॥१३१॥
भयानको भानुसूनुः भूतिभूषित विग्रहः ।
भास्वद्व्रतो भक्तिमतां सुलभोभ्रुकुटीमुखः॥१३२॥
भवभूत गणैस्स्तुत्यो भूतसंघसमावृतः ।
भ्राजिष्णुर्भगवान्भीमो भक्ताभीष्टवरप्रदः ॥१३३॥
भवभक्तैकचित्तश्च भक्तिगीतस्तवोन्मुखः ।
भूतसन्तोषकारी च भक्तानांचित्तशोधक ॥१३४॥

भक्तिगम्यो भयहरो भावज्ञोभक्तसुप्रियः।
भूतिदो भूतिकृत् भोज्यो भूतात्माभुवनेश्वरः ॥१३५॥
मन्दो मन्दगतिश्चैव मासमेवप्रपूजितः।
मुचुकुन्द समाराध्यो मुचुकुन्द वरप्रदः ॥१३६॥
मुचुकुन्दार्चितपदो महारूपो महायशाः।
महाभोगी महायोगी महाकायोमहाप्रभुः ॥१३७॥
महेशो महदैश्चर्यो मन्दारकुसुमप्रियः।
महाक्रतुर्महामानी महाधीरो महाजयः ॥१३८॥
महावीरो महाशान्तो मण्डलस्थो महाद्युतिः।
महासुतो महोदरो महनीयो महोदयः ॥१३९॥
मैथिलीवरदायी च मार्ताण्डस्यद्वितीयजः।
मैथिलीप्रार्थनाक्लप्त दशकण्ठशिरोपहृतः ॥१४०॥
मरामरहराराध्यो महेन्द्रादि सुरार्चितः।
महारथो महावेगो मणिरत्नविभूषितः ॥१४१॥
मेषनीचो महाघोरो महासौरिर्मनुप्रियः।
महादीर्घो महाग्रासो महदैवर्श्यदायकः ॥१४२॥
महाशुष्को महारौद्रो मुक्तिमार्ग प्रदर्शकः।
मकरकुम्भाधिपश्चैव मृकण्डुतनयार्चितः ॥१४३॥
मन्त्राधिष्ठानरूपश्च मल्लिकाकुसुमप्रियः।
महामन्त्र स्वरूपश्च महायन्त्रस्थितस्तथा ॥१४४॥
महाप्रकाशदिव्यात्मा महादेवप्रियस्तथा।
महाबलि समाराध्यो महर्षिगणपूजितः ॥१४५॥
मन्दचारी महामायी माषदानप्रियस्तथा।
माषोदन प्रीतचित्तो महाशक्तिर्महागुणः ॥१४६॥
यशस्करो योगदाता यज्ञाङ्गोपऽपि युगन्धरः।
योगी योग्यश्च याम्यश्च योगरूपी युगाधिपः ॥१४७॥

यज्ञभृद्यजमानश्च योगो योगविदां वरः।
यक्षराक्षसवेताल कुष्माण्डादिप्रपूजितः ॥१४८॥
यमप्रत्यधिदेवश्च युगपत् भोगदायकः।
योगप्रियो योगयुक्तो यज्ञरूपो युगान्तकृत् ॥१४९॥
रघुवंश समाराध्यो रौद्रौ रौद्राकृतिस्तथा।
रघुनन्दन सल्लापो रघुप्रोक्तजपप्रियः॥१५०॥
रौद्ररूपी रथारूडो राघवेष्ट वरप्रदः।
रथी रौद्राधिकारी च राघवेण समर्चितः ॥१५१॥
रोषात्सर्वस्वहारी च राघवेण सुपूजितः।
राशिद्वयाधिपश्चैव रघुभिः परिपूजितः ॥१५२॥
राज्यभूपाकरश्चैव राजराजेन्द्र वन्दितः।
रत्नकेयूरभूषाढ्यो रमानन्दनवन्दितः ॥१५३॥
रघपौ षसन्तुष्टो रघुस्तोत्रबहुप्रियः।
रघुवंशनृपैः पूज्यो रणन्मञ्जीरनूपुरः ॥१५४॥
रविनन्दन राजेन्द्रो रघुवंशप्रियस्तथा।
लोहजप्रतिमादानप्रियो लावण्यविग्रहः ॥१५५॥
लोकचूडामणिश्चैव लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियः।
लोकरक्षो लोकशिक्षोलोकलोचनरञ्जितः ॥१५६॥
लोकाध्यक्षो लोकवन्द्योलक्ष्मणाग्रजपूजतः।
वेदवेद्यो वज्रदेहो वज्राङ्कुशधरस्तथा ॥१५७॥
विश्वन्द्यो विरूपाक्षो विमलाङ्गविराजितः।
विश्वस्थो वायसारूढो विशेषसुखकारकः ॥१५८॥
विश्वरूपी विश्वगोप्ता विभावसु सुतस्तथा।
विप्रप्रियो विप्ररूपो विप्राराधनतत्परः ॥१५९॥
विशालनेत्रो विशिखो विप्रदानबहुप्रियः।
विश्वसृष्टि समुद्भूतो वैश्वानरसमद्युतिः ॥१६०॥
विष्णुर्विरिञ्चिर्विश्वेशो विश्वकर्ताविशाम्पतिः।

विराडाधारचक्रस्थो विश्वभुग्विश्वभावनः ॥१६१॥
विश्वव्यापारहेतुश्च वक्रक्रूरविवर्जितः ।
विश्वोद्भवो विश्वकर्मा विश्वसृष्टिविनायकः ॥१६२॥
विश्वोमूलनिवासी च विश्वचित्रविधायकः ।
विश्वधारविलासी च व्यासेनकृतपूजितः ॥१६३॥
विभीषणेष्टवरदो वाञ्छितार्थप्रदायकः ।
विभीषणसमाराध्यो विशेषसुखदायकः ॥१६४॥
विषमव्ययाष्ट जन्मस्थोप्येकादशफलप्रदः ।
वासवात्मजसुप्रीतो वसुदो वासवार्ञ्चितः ॥१६५॥
विश्वत्राणैकनिरतो वाङ्भनोतीविग्रहः ।
विराण्मन्दिरमूलस्थो वलीमुखसुखप्रदः ॥१६६॥
विपाशो विगतातङ्को विकल्पपरिवर्जितः ।
वरिष्ठो वरदो वन्द्यो विचित्राङ्गोविरोचनः ॥१६७॥
शुष्कोदरः शुक्लवपुः शान्तरूपीशनैश्वर ।
शूली शरण्यः शान्तश्चशिवायामप्रियङ्करः ॥१६८॥
शिवभक्तिमतां श्रेष्ठः शूलपाणेश्शुचिप्रियः ।
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः श्रुतिजालप्रबोधकः ॥१६९॥
श्रुतिपारग संपूज्यः श्रुतिश्रवणलोलुपः ।
श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञः श्रुत्येष्ठवरदायकः ॥१७०॥
श्रुतिरूपः श्रुतिप्रीतः श्रुतीस्प्सितफलप्रदः ।
श्रुचिश्रुतः शान्तमूर्तिः श्रुतिः श्रवणकीर्तनः ॥१७१॥
शमीमूलनिवासी च शमीकृतफलप्रदः ।
शमीकृतमहाघोरः शरणागतवत्सलः ॥१७२॥
शमीतरुस्वरूपश्च शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदः ।
शिवागभैकनिलयः शिवमन्त्रजपप्रियः ॥१७३॥
शमीपत्रप्रियश्चैव शमीपर्णसमर्चितः ।
शतोपनिषदस्तुत्यो शान्त्यादिगुणभूषितः ॥१७४॥

शान्त्यादिषड्गुणोपेतः शंखवाद्यप्रियस्तथा।
श्यामरक्तसितज्योतिः शुद्धपञ्चाक्षरप्रियः ॥१७५॥
श्रीहालास्यक्षेत्रवासी श्रीमान्शक्तिधरस्तथा।
षोडशद्वयसंपूर्णलक्षणः षण्मुखप्रियः ॥१७६॥
षड्गुणैश्वर्यसंयुक्तः षडङ्गावरणोज्वलः।
षडक्षरस्वरूपश्च षट्चक्रोपरि संस्थितः ॥१७७॥
षोडशी षोडशान्तश्चषट्छक्तिव्यक्तमूर्तिमान्।
षड्भावरहितश्चैव षडङ्गश्रुतिपारगः ॥१७८॥
षट्कोणमध्यनिलयः षट्छास्त्रस्मृतिपारगः।
स्वर्णेन्द्रनीलमकुटः सर्वाभीष्टप्रदायकः ॥१७९॥
सर्वात्मा सर्वदोषघ्नः सर्वगर्वप्रभञ्जनः।
समस्तलोकाभयदः सर्वदोषाङ्गनाशकः ॥१८०॥
समस्तभक्तसुखदः सर्वदोषनिवर्तकः।
सर्वनाशक्षमस्सौम्यः सर्वक्लेशनिवारकः ॥१८१॥
सर्वात्मा सर्वदा तुष्टःसर्वपीडानिवारकः।
सर्वरूपी सर्वकर्मा सर्वज्ञःसर्वकारकः॥१८२॥
सुकृती सुलभश्चैव सर्वाभीष्टफलप्रदः।
सूरात्मजस्सदातुष्टः सूर्यवंशप्रदीपनः ॥१८३॥
सप्तद्वीपाधिपश्चैव सुरासुरभयङ्करः।
सर्वसंक्षोभहार च सर्वलोकहितङ्करः ॥१८४॥
सर्वौदार्यस्वभावश्च सन्तोषात्सकलेष्टदः।
समस्तऋषिभिस्स्तुत्यः समस्तगणपावृतः ॥१८५॥
समस्तगणसंसेव्यः सर्वारिष्टविनाशनः।
सर्वसौख्यप्रदाता च सर्वव्याकुलनाशनः ॥१८६॥
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वारिष्ट फलप्रदः।
सर्वव्याधिप्रशमनः सर्वमृत्युनिवारकः ॥१८७॥

सर्वानुकूलकारी च सौन्दर्यमृदुभाषितः।
सौराष्ट्रदेशोद्भवश्च स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदः ॥१८८॥
सोमयाजि समाराध्यः साताभीष्ट वरप्रदः।
सुखासनोपविष्टश्च सद्यःपीडानिवारकः ॥१८९॥
सौदामनीसन्निभश्च सर्वानुल्लङ्घ्यशासनः।
सूर्यमण्डलसञ्चारी संहारास्त्रनियोजितः ॥१९०॥
सर्वलोकक्षयकरः सर्वारिष्टविधायकः।
सर्वव्याकुलकारी च सहस्त्रजपसुप्रियः ॥१९१॥
सुखासनो पविष्टश्च संहारास्त्रप्रदर्शितः।
सर्वालङ्कारः संयुकतकृशणगोदानसुप्रियः ॥१९२॥
सुप्रसन्नस्सुरश्रेष्ठः सुघोषः सुखदस्सुहृत्।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पःसर्वज्ञस्सर्वदस्सुखी ॥१९३॥
सुग्रवीस्सुधृतिस्सारस्सुकुमारस्सुलोचन ।
सुव्यक्तस्सच्चिदानन्दः सुवीरस्सुजानाश्रयः ॥१९४॥
हरिश्चन्द्रसमाराध्यो हेयेपादेयवर्जितः।
हरिश्चन्द्रेष्टवरदो हंसमन्त्रादि संस्तुतः ॥१९५॥
हंसवाह समाराध्यो हंसवाहवरप्रदः।
हृद्यो हृष्टो हरिसखो हंसोहंसगतिर्हविः ॥१९६॥
हिरण्यवर्णोहितकृद्धर्षदो हेमभूषणः।
हविर्होता हंसगतिर्हंसमन्त्रादिसंस्तुतः ॥१९७॥
हनुमदर्चितपदो हलधृत् पूजितस्सदा।
क्षेमदः क्षेमकृत्यक्षेम्यः क्षेत्रज्ञः क्षामवर्जितः ॥१९८॥
क्षुद्रघ्नः क्षान्तिदः क्षेमः क्षितिभूषःक्षमाश्रयः।
क्षमाधरः क्षयद्वारो नाम्नामष्टसहस्त्रकम् ॥१९९॥
वाक्यैनैकेन वक्ष्यामि वाञ्छितार्थंप्रयच्छति।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नियमेन जपेत्सुधीः ॥२००॥

॥श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम्॥

शनि पूजनम्

आवाहनम्– ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात।
सभूमिर्ठ सर्वतस्पृत्वात्यत्त्ठद्दशाङ्गुलम्॥
सौरि! त्वं समागच्छ मम कल्याणकारक।
पूजां गृहाणमेदेवः पात्रेऽस्मिन् सुस्थिरोभवः॥

हे मेरे कल्याणकारक शनिदेव महाराज! आप यहाँ आकर इस चित्र प्रतिमा या यंत्र में स्थित हों और हमारी पूजा स्वीकार करें।

आसनम्– ॐ पुरुष एवेदंर्ठ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहतिः॥
रम्यैकुसुमैर्दिव्यैरासनं ते विनिर्मितम्।
उपवेशय मन्द! त्वं सफलं पूजनं कुरु॥

अति सुंदर अलौकिक पुष्पों से बनाया गया आसन आपके बैठने के लिए दे रहा हूँ, कृपया पूजन सफल करें।

ध्यानम्– सौराष्ट्रजातमष्टम्यां पौष्णभं धनुराकृतिम्।
सूर्यपुत्रं चतुर्वाहुं कृष्णाङ्गं तं शनिं नुमः॥

सौराष्ट्र में अष्टमी तिथि, पुष्य नक्षत्र धनु के समान आकृति युक्त जन्म लिये हुए, कृष्ण वर्ण, चार भुजा धारी हे सूर्यपुत्र शनि आपको नमस्कार है।

पाद्यम्– एताव्वानस्य महिमातो, ज्यायांश्च पुरुषः पादोऽस्य
विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि।
रम्यं श्रमहरं वारि गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
पाद्यं तुभ्यं प्रयच्छामि गृहाण रविनन्दन॥

चंदन, पुष्प, अक्षतों से मिले हुए, थकावटों को दूर करने वाला सुंदर जल आपके पाद्य के लिये अर्पित है। हे रविनन्दन, इसे ग्रहण करें।

अर्घ्यम्– त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनान्नशनेऽभिः॥

तिलसर्सप दूर्वाभिः गन्धपुष्पाक्षतैश्च यत्।
शीतलं शोभनमर्घ्यं ते अर्पयामि यमाग्रज।।

पुष्प, चंदन, अक्षत, तिल, सरसों और दूर्वा मिला हुआ अतिशीतल और सुंदर जल आपके अर्घ्य के लिए अर्पित कर रहा हूँ। हे यमाग्रज स्वीकार करें।

मधुपर्कम्– मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः माध्वीर्णः
संतोषधीः मधुनक्त मुतोषसो।
मधुपर्कं मयानीतं सितघृतमधुनिर्मितम्।
गृहाणग्रहनाथत्वं सफलंकुरुमे सदा।।

दही, घृत, मधु से युक्त मधुपर्क मैं लाया हूँ। हे ग्रह नाथ, कृपया स्वीकार कर मेरे मनोरथ सफल करें।

पयस्नानम्– ॐ पयः पृथिव्यां पया ओषधीषु
पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।
इत्यनेन पयः स्नानम्।
पयः सुशोभनं दिव्यं गोसम्भूतं च निर्मलम्।
स्नानार्थं ते प्रयच्छामि सफलं कुरु मे सदा।।

सुंदर, शीतल, आलौकिक गाय का दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

दधिस्नानम्– ॐ दधिक्राव्णोऽकारिषञ्जिणोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयु षितारिपत।
इति दधिस्नानम्।।
शीतलं स्वादु मधुराम्लं दधि नवनीत निर्मितम्।
मयानीतं तवार्थंहि स्नानं कुरु शनैश्चर।।

मक्खन से युक्त मधुर, शीतल दही आपके स्नान के लिए लाया हूँ। हे शनिश्चर महाराज! कृपया इससे स्नान करें।

घृतस्नानम्– घृतं घृत पावानः पिवतवसांपावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।

दिशः प्रदिशः आदिशः उदिशः विदिशः दिग्भ्य स्वाहा।। घृतं स्निग्धं सुधारूपं तुष्टिपुष्टिकरं प्रभो।
स्नानीयंते मयानीतं गृहाणकुरु मंगलम्।।

अमृत रूप, पुष्टि और संतोषकारक, कोमल घृत आपके स्नान के लिये लाया हूँ। स्वीकार कर मंगल प्रदान करें।

मधुस्नानम्– मधु व्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवां रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः माध्वीर्गांवो भवन्तु नः।
मधुमाक्षिकसम्भूतं मधुरंपुष्टिवर्धनम्।
स्नानार्थं ते मयादत्तमङ्गीकुरुमुदान्वित।।

मधुमक्खियों से उत्पन्न मीठा, पुष्टिवर्धक मधु स्नान के लिए अर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

शर्करास्नानम्–ॐ अपा रसमुद्वस्यस सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युतममुपयाम गृहीतोसिन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्ये एषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।
इक्षुरससमुदभूता शर्करा मधुराप्रिया।
ग्रहनाथ प्रसन्नार्थं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गन्ने के रस से बनी हुई मीठी और प्रिय शक्कर आपकी प्रसन्नता के लिए उपस्थित है। कृपया स्नान के लिए स्वीकार करें।

पंचामृतस्नानम्– ॐ पंच्चनद्यः सरस्वती मपयंति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पंचधासो देशे भवत् सरित्।
पयोदधिघृतंगव्यं माक्षिकं शर्करानिव्तं।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृहताम्।।

दूध, दही, घृत, मधु और शक्कर से बना पंचामृत सेवार्पित है। कृपया स्नान करें।

शुद्धोदकस्नानम्– ॐ शुद्ध बालः सर्व शुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनः। श्येत श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभौ रूपापार्जन्याः।
शुद्धोदकं शीतलं च निर्मलं गंध संयुतम्।
गंगादि सर्वतीर्थेभ्यो स्नानीयं ते समर्पितम्।।

ॐ शं शनैश्चराय नमः– 5 बार उच्चारण करें।

शीतल, स्वच्छ, चंदनयुक्त गंगा और तीर्थों का जल शुद्धोदक स्नान के लिए समर्पित है।

गन्धोदकस्नानम्– श्रीखण्ड केसरयुतं रम्यं वारिसशीतलम्।
गन्धोदकं मयानीतं गृहाणग्रहनायक।।

हे ग्रह नायक, श्रीखण्ड चंदन, केसर युक्त स्वच्छ, शीतल, गन्धोदक मैं लाया हूँ। कृपया ग्रहण करें।

आचमनीयम्– ॐ आचम्यतां मयानीतं सुस्वादु निर्मलं जलम्।
पिंगलायनमस्तुभ्यं गृहाणाचमनीयकम्।।

हे पिंगल! स्वादिष्ट, निर्मल, शीतल जल आपके आचमन के लिए उपस्थित है, ग्रहण करें।

वस्त्रम्– युवासुवासा परिवीत आगात्, सउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीराशः कवयउन्वन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।
क्षेमपट्ट विनिर्मीतं स्निग्धंचारु सुकोमलम्।
वस्त्रं ददामि ते कृष्ण गृहाण मुदयान्वित।।

हे कृष्ण! रेशम निर्मित स्निग्ध, सुंदर कोमल वस्त्र दे रहा हूँ। प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ततः आचमनीयम्– फिर अनुष्ठान कर्ता शनिदेव को आचमनीय समर्पित करें।

यज्ञोपवीतम्– ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवःसुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च

योनिमसतश्च व्विवः।

यज्ञोपवीतम् शुद्धं पवित्रं परमं शुभम्।
अर्पयामि प्रभो गृह्य सफलं कुरु मनोरथम्॥

हे प्रभो, शुद्ध पवित्र, सुंदर, यज्ञोपवीत अर्पित कर रहा हूँ। स्वीकार कर हमारा मनोरथ सफल करें।

ततः आचमनीयम्– फिर अनुष्ठानकर्ता शनिदेव को आचमनीय समर्पित करें।

गंधम्– गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टाङ्करींषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां तमिहोपह्वये श्रियम्।
मलयाचल संभूतं श्रीखण्डं गंधसंयुतम्।
मयोपपादित्तं तुभ्यं लेपनं स्वीकुरुप्रभो॥

हे प्रभो, मलयागिरी सुगंधित श्रीखण्ड चंदन मैंने आपके लिए तैयार किया है, कृपया स्वीकार करें।

कुंकुमम्– कुंकुमं कोमलं रक्तं कांतिदं परमं शुभम्।
कामनापूर्तिदं देव गृहाणसुमनोहरम्॥

हे देव! अति मनोहर, कान्तिवर्धक, सुंदर, कोमल, कामना पूर्ति करने वाला लाल कुंकुम समर्पित है।

इत्रम्– नाना पुष्प समुद्भूतं नाना गन्धसुसंयुक्तम्।
मनः प्रह्लादकमित्रं ददामि प्रतिगृह्यताम्॥

अनेक पुष्पों के रस से बनाया हुआ, अनेक गंधों से युक्त मन को आनन्दित करने वाला इत्र दे रहा हूँ, स्वीकार करें।

अक्षत– ॐ अक्षन्नमी मदन्त्यस्यवप्रिया अधोषत स्वभानवो
विप्रा नविष्ठयामती योयान्विन्दते हरिः॥
अखण्डं तंडुलं देव अक्षतं परिकल्पितम्।
अरिष्टं शमनार्थं ते ददामि प्रतिगृह्यताम्॥

अखण्डित चावलों का अक्षत उपस्थित है। कृपया स्वीकार करें।

पुष्पम्– ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवरी प्रशूवरी अश्वाइव सजित्वरी विरुधः पार इष्णवः।
मालती चम्पकाब्जादि पाटलावकुलादिभिः।
पुष्पैर्मयार्चितोदेव प्रसन्नोभव सर्वदा।।

हे प्रभु! मालती, चंपा, कमल, पाटल, वकुल आदि पुष्पों के द्वारा मैं अर्चन कर रहा हूँ। आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

माला– नानापुष्पविचित्रैश्चमाल्यंमूर्धनिशोभनम् ।
सुगंधितंपरंरम्यंगृह्यतां सुमनोहरम्।।

अनेक रंग-बिरंगे पुष्पों से निर्मित सिर पर सुशोभित होने वाली सुगंधित पुष्पमाला को ग्रहण करें।

दूर्वाम्– ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्तिपरुष परुषस्परि एवानो दूर्वेप्रतनु सहस्त्रेनशतेन च।
तुष्टिपुष्टिकरादूर्वा हरिताकोमलाशुभा।
मनः प्रह्लादकरीरम्या अर्पिता मे प्रगृह्यताम्।।

मन को आनंद देने वाली, सुंदर हरे रंग की कोमल संतुष्टि और पुष्टि प्रदान करने वाली दूर्वा समर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

बिल्वपत्रम्–ॐ नमोः विल्मिने च कवचिने च, नमोः व्वर्म्मिणे च व्वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चहनन्याय च नमो धृष्णवे।।
श्रीवृक्षोद्भवं पत्रं श्री शंकर सदाप्रियम्।
त्रिनेत्र रूप पत्रं ते अर्पयामिमुदाप्रभो।।

श्री वृक्ष के त्रिनेत्र रूप बिल्वपत्र शंकर को सदा प्रिय लगने वाले समर्पित हैं।

धूपम्– ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्धउत्तमः।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।।
वनस्पति रसोदभूतमुत्तमं गन्धसंयुतम्।

धूपं मया समानीतं गृहाण रविनंदनः॥

हे रविनंदन! अनेक वनस्पतियों के रस से तैयार किया हुआ उत्तम सुगंधित धूप मैं लाया हूँ। कृपया, स्वीकार करें।

दीपम्– ॐ साज्यं च वर्त्ति संयुक्तं वह्निनां योजितं मया।
दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्य तिमिरापह।
घृतवर्ति समायुक्तं दीपं प्रज्वलितं मया॥
अंधकार विनाशांर्थं गृहाण परमेश्वरः॥

हे प्रभो! घी और बत्तियों से प्रज्वलित दीपक अंधकार को दूर करने के लिए स्वीकार करें। (दीप दिखाने के बाद हाथ धो लें।)

नैवेद्यम्– ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्य नमीवश्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातांरंतारिषऽउर्ज्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे॥
षडरस स्वादुसंयुक्तं नवनीत सुदामयम्।
नैवेद्यमर्पितं तुभ्यं गृहाण परमेश्वरः।

हे परमेश्वर, अमृत रूप, मक्खन से युक्त, षडरस नैवेद्य अर्पित है। कृपया ग्रहण करें।

आचमनम्– शीतलं शान्तिदं शुभ्रं निर्मलं सुमनोहरम्।
पानीयं ते मयादत्तमाचमनीयं प्रगृह्यताम्॥

शीतल, स्वच्छ, शान्ति प्रदाय आचमनीय जल स्वीकार करें।

ताम्बूलम्– ॐ यत्पुरुषेण हविषादेवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोस्याशीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
ताम्बूलंगृह्यतां देव लवंगैलासमन्वितम्।
मुखवासार्थं द्रव्योऽयं सदा तुष्टि प्रदायकः॥

हे प्रभो! लौंग व इलायची से सुगंधित तांबूल मुख-शुद्धि के लिए संतोषजनक द्रव्य उपस्थित है। स्वीकार करें।

फलम्– ॐ याः फलि निर्या अफलाः अपुष्या याश्च
पुष्पिणी बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुंच तृ हस।

फलान्यमृतकल्यानिरसानि मधुराणि च।
कर्म साफल्यप्राप्तयर्थं गृहाण सूर्यपुत्रक॥

हे सूर्यपुत्र, मधुर, रसयुक्त अमृत के समान सुंदर फल सेवार्पित है। कृपया कर्मसाफल्यता प्रदान करें।

दक्षिणाम्– हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

दक्षिणायज्ञपत्निस्तुष्टासा फलदायिनी।
तस्माद्धिरण्य रूपां हि दक्षिणां प्रतिगृह्यताम्॥

यज्ञपत्नी दक्षिणा से संतुष्ट होने पर फल देने वाली है। अतः स्वर्ण रूप यह दक्षिणा स्वीकार करें।

आरार्तिक्यम्– ॐ इदं हवि प्रजननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽस्मासुधत्त।

कर्पूरेण समायुक्तं वार्तिकं ज्वलितं प्रभो।
आरार्तिक्यं ते मयानीतं गृहाण परमेश्वरः॥

हे परमेश्वर! कर्पूर और बत्तियों से युक्त प्रज्वलित आरती को ग्रहण करें।

पुष्पांजलि– ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

प्रदक्षिणाम्– ॐ सप्तान्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवाः यज्ञन्तन्वाना। अबध्नन् परुषं पशु॥

यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

मंत्रपुष्पांजलि– श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हृदिप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ शनैश्चर देवताभ्यो नमो नमः।।

नमस्कार– सर्वसौख्य प्रदातारं दुष्टदर्पविमर्दकम्।
भक्तार्तिनाशनं देवं शं शनिं प्रणमाम्यहम्।
प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।।

चरणामृत पान– अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
शनैश्चर पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

चरणामृत को पात्र में लेकर ग्रहण करें। सिर पर भी चढ़ा लें।

आरती (नीराजन)– आरती शनि बलकारी की कीजै......

क्षमा याचना– मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीन रविनन्दनः।
यत्पूजितं तव देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व शनैश्चर।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्ष मां शनैश्चर।।

योगियों में श्रेष्ठ श्री शनिदेव भगवान जिनकी दृष्टि के सामने परम ज्योति स्वरूप परब्रह्म विराजित है। जिसके प्रभाव से यह दृश्यमान जगत सीधी दृष्टि से देखने में नहीं आता। इससे पृथ्वी के न्याय-देवता अधोदृष्टि, वक्रदृष्टि किये रहते हैं, जिससे कि पृथ्वीवासियों तथा अन्यान्य निम्न लोकों का कार्य सक्षमता से कर सकें।

मानस पूजा

(1)

1. ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

इस मंत्र को बोलकर शुद्ध जल से शनि भगवान के चरण कमलों को धोकर अपने मस्तक पर धारण करें।

2. ॐ अर्घ्यों समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान के हस्त कमलों पर पवित्र जल छोड़ें।

3. ॐ आचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

इस मंत्र से शनि भगवान को आचमन करायें।

4. ॐ गन्धं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान के ललाट पर रोली लगायें।

5. ॐ मुक्ताफलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान के ललाट पर मोती लगायें।

6. ॐ पुष्पं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

मस्तक नासिका के सामने आकाश पर पुष्प छोड़ें।

7. ॐ मालां समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

पुष्पों की माला शनि के गले में पहनायें।

8. ॐ धूपमाघ्रापयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान के सामने अग्नि में धूप छोड़ें।

9. ॐ दीपं दर्शयामि शनैश्चराय नमः।

तेल का दीपक जलाकर सामने रखें।

10. ॐ नैवेद्यं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान को भोग लगायें।

11. ॐ आचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

12. ॐ ऋतुफलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

केले आदि का भोग लगायें।

13. ॐ पुनराचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान को फिर आचमन करायें।

14. ॐ पूंगीफलं सताम्बूलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

सुपारी सहित नागर पान भगवान को अर्पण करें।

15. ॐ पुनराचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

आचमन कराकर फिर स्वर्ण थाल में कपूर प्रदीप्त कर शनि आरती करें।

16. ॐ पुष्पांजलिं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

पुष्प अंजलि में लेकर मस्तक पर छोड़ें। सात प्रदक्षिणा करें व दण्डवत प्रणाम करें। भगवान को मन ही मन चँवर ढुलावें व स्तुति करें।

(2)

1. ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।

2. ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।

3. ॐ यं वायवात्मकं धूपं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनि! मैं वायुदेव के रूप में आपको धूप प्रदान करता हूँ।

4. ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक प्रदान करता हूँ।

5. ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

प्रभो! मैं अमृत के समान आपको नैवेद्य निवेदन करता हूँ।

6. ॐ शं शक्ति तत्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं पान रूप में शक्ति तत्त्व आपको निवेदन करता हूँ।

क्रमानुसार वैदिक शनि साधना

1. साधना पथ में दृढ़ विश्वास के साथ स्थिरचित्त होकर साधक आगे बढ़े। श्री शनि मूर्ति को उत्तम स्थान (पूजा गृह) में स्थापित कर यथा नियम भक्तिपूर्वक गंध-पुष्पादि द्वारा नाना उपचार (षोडशोपचार) अभीष्ट कामना या साधनानुसार (स्तोत्र या अष्टोत्तरशत नाम, सहस्त्रनाम व बीज मंत्र जप) करें। आरम्भ में दैहिक क्लेश, संताप, मानसिक चांचल्य उत्पन्न होगा। वैषयिक (घरेलू चिंता) आदि उत्पात होंगे, इनसे न घबराकर नियम की रक्षा करें। श्री शनिदेव का मन ही मन जप करते हुए मूर्ति चिंतन एकाग्रता के साथ करते जाएं, उन्हें अपना शरण्य माने। चरण से लेकर शीश तक, फिर शीश से लेकर चरण तक ध्यान करें। निरंतर अभ्यास करें, कुछ काल अभ्यास के बाद इसमें परिपक्वता आ जाएगी।

2. इसके बाद शनि के पूर्णांग स्वरूप का चिंतन करें। सर्वावस्था में जप ध्यान करें, दृढ़ता आने पर नाद अभिव्यक्ति होगी, उसकी ओर उन्मुख हों, एकाग्रता के साथ दाहिने कान से उसका श्रवण करें (शंख, घंटा, वंशीरव, काँसर के बजने का शब्द तथा दिन-रात्रि में एक-दो बार पटाखा फटने का शब्द सुने)। श्री शनिदेव का पूर्णांग स्वरूप मानस पटल पर स्थायीभाव से रखें। आँसू, शारीरिक अंगों में कम्पन, देह पुलकित होना, हल्का महसूस होना व मन में आनन्द प्राप्त होना।

3. अब जप करते-करते श्री शनिदेव महाराज के पूर्णांग चिंतन को प्रश्रय देकर देह उन्हें ही समर्पित करें। देह को उनकी इच्छा मात्र से चलायें। अंतर में सर्वदा शनि दर्शन करें, इससे नेगेटिव शक्ति सर्वदा के लिए लुप्त हो जायेगी। काम, क्रोध, लोभ, मोह, भीषणता से घटेंगे। मन शांत होकर प्रसन्नता लाभ करेगा, सांसारिक भावों का उदय कम होगा, श्री शनि पर श्रद्धा विश्वास दृढ़ होगा। सिद्धियाँ सहजता से प्राप्त होंगी, फिर शनिदेव की चिन्मयता-दिव्यता आपके अंदर प्रकट हो जायेगी। सकल देह, मन,

बुद्धि उनके अनुरूप चलने लगेंगे। चित्त का उनसे तादातम्य लाभ होगा। अभेद खत्म होगा। एकत्व स्थापित होगा। अपने समस्त दायित्व शनि में न्यस्त करके फिर निरपेक्ष भाव से विचरण होगा। यह शनि की दुर्लभ भक्ति है।

इतनी उन्नति पाकर ध्यान करते हुए अखण्डता से जप करते जाएं। अभिमान चला जाएगा। फिर शनिदेव महाराज आपके द्वारा अनेक अलौकिक कार्य सम्पन्न करायेंगे। (परंतु सावधान अपना अभिमान लगाने से सब गल जाएगा और उसकी कृपा समझने से बढ़ता जाएगा।)

4. इसके बाद भजन उन्हीं की शक्ति द्वारा सम्पन्न होगा। फिर साधन संस्कार बाकी नहीं रहेगा। चित्त में भाव प्रकाश होगा। अखण्ड जप व ध्यान के बाद साधक के चित्त में इष्ट शनि स्वरूप की अभिव्यक्ति होगी।

मनु हृदय शनिदेव का, प्रेम अजब संजोग।
हँसते जग के लोग सब, कैसा पाला रोग।।
शनैश्चर सुरवन्द्य मन्द, घन स्वरूप विधिरूप।
ये छाया के लाल हैं, विद्या अविद्या स्वरूप।।

योगियों में श्रेष्ठ श्री शनिदेव भगवान जिनकी दृष्टि के सामने परम ज्योति स्वरूप परब्रह्म विराजित है। जिसके प्रभाव से यह दृश्यमान जगत सीधी दृष्टि से देखने में नहीं आता। इससे पृथ्वी के न्याय-देवता अधोदृष्टि, वक्रदृष्टि किये रहते हैं, जिससे कि पृथ्वीवासियों तथा अन्यान्य निम्न लोकों का कार्य सक्षमता से कर सकें।

विशिष्ट शक्ति शनि साधना

ॐ शं शनैश्चराय नमः

ॐ शं सौरये नमः

प्रातः, सायं, रात्रि में सबके सो जाने पर एकान्त में बैठो। स्थान या तो बस्ती से बाहर नदी तटया शिवाला या अपने ही मकान में स्थित पूजा गृह हो, उसमें पूजा सामान के अतिरिक्त कुछ न हो। अगरबत्ती की खुशबू फैली हो, दरवाजा बंद हो। आसन पर बैठकर आधे घंटे से एक घंटे तक ऐसा ध्यान बाँधो कि उपरोक्त मंत्र तुम्हारे हृदय में सुनहले प्रकाश से लिखा हुआ है, जी चाहे तो मन ही मन उसका उच्चारण भी करते जाओ, अगर ना चाहो तो खाली उसे ही देखते रहो। दृष्टि लक्ष्य को न छोड़ने पावे, मन उसे छोड़ के बाहर विचरने ना जाने पावे। ऐसा लगातार त्रिकाल करते जाओ, एक माह पश्चात् जान पड़ेगा मंत्र के अक्षर मिटते जा रहे हैं। एक दिव्य प्रकाश आ रहा है, जिसे मंत्र चैतन्य कहते हैं। मन्त्राक्षर बिल्कुल लोप हो जायेंगे। हृदय आनन्दमय तेज से भर जाएगा। तेज के अन्दर एक मूर्ति झलक पड़ेगी, जो स्वयं शनि भगवान हैं। करते-करते दृश्य साफ होता जाएगा। वह तुम्हारे सम्मुख होंगे, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देंगे। सहायता माँगने पर तुम्हें सहायता देंगे। अनुष्ठान पूरा हुआ, मंत्र पूरा हुआ, अभीष्ट मिल गया। यह ध्यान व उपासना की क्रिया है। जो बड़ी जल्द सफलता प्रदान करती है और शनिदेव पीड़ा हर कर कृपा प्रदान करते हैं, साधक को शक्तिपात कराते हैं। इसमें भय नहीं रहता। आवेश इसमें भी कभी-कभी आ जाता है। मगर यह पागल नहीं करता। उल्टे मनोवांछित फल प्रदान करता है।

शनि-तीर्थ कोकिला वन की महिमा

कोकिला वन वह परम पावन स्थान है, जहाँ शनिदेव को भी कृष्ण कृपा प्राप्त हुई थी। जैसा कि सब जानते हैं, शनिदेव भगवान कृष्ण के परम-भक्त हैं और कृष्णानन्द में मग्न रहने के कारण ही इन्हें अपनी पत्नी के शाप का भाजन बनना पड़ा था और इनकी आँखें सदा के लिए अधोदृष्ट हो गईं। पत्नी ने समझा कि शनिदेव जानबूझ कर मेरी सुंदरता की उपेक्षा कर मेरी ओर नहीं देख रहे हैं। अतः उसने उन्हें सदा नीची दृष्टि रखने के साथ यह भी शाप दे डाला कि जिसे वे देखेंगे, उसका शिरश्च्छेद हो जायेगा।

पत्नी के शाप की वजह से वह अपने प्रियजनों को भी देखने में असमर्थ हो गये। अतः भगवान कृष्ण के अवतार लेने पर सभी देवता तो उनकी लीलाओं को देखने का आनंद लेने लगे, परंतु शनिदेव उससे वंचित होने की वजह से बड़े दुःखी हो गये थे। कहते हैं, इसी कोकिला वन में शनिदेव की इष्टदर्शन की मनोकामना भगवान कृष्ण की कृपा से पूरी हुई थी।

यही वजह है कि आज भी लोग पूर्णमनोरथ होने के लिए कोकिला वन की यात्रा करते हैं, जहाँ शनिदेव की सिद्ध प्रतिमा स्थापित है और इस स्थान की बहुत महिमा है। हजारों लोग इस प्रतिमा के दर्शन कर शनिदेव पर तेल चढ़ाते हैं, दीपक जलाते हैं और शनिदेव का स्मरण करते हुए कोकिला वन की परिक्रमा करते हैं। इस पर शनि महाराज प्रसन्न होकर जातकों को पीड़ा से मुक्ति प्रदान करते हैं। इस वन में शनिदेव की प्रतिमा स्थापित होने के पीछे यह कथा है कि शनिदेव द्वापरयुग की समाप्ति काल से बैठे हुए हैं।

कथा है कि शनिदेव जो कि कृष्ण भगवान के अनन्य उपासक हैं, एक बार द्वापर में भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का आनंद लेने के लिए

ब्रजधाम में मानव रूप धारण कर पधारे। नन्द गाँव में उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा था। शनिदेव भी वहाँ उपस्थित थे। माता यशोदा को यह बात किसी देवता ने बता दी कि शनिदेव तेरे पुत्र के दर्शन के लिए महल में आ गये हैं। उस देवता ने यशोदा जी को शनिदेव की पहचान यही बताई कि उनका रंग श्याम और नेत्र विशाल हैं। वे शुष्कोदर हैं तथा सदैव नीची दृष्टि किये रहते हैं। उन लक्षणों के आधार पर माता यशोदा ने उन्हें पहचान लिया और विनती की कि आप महल से बाहर रहकर ही श्रीकृष्ण की बाल- लीलाओं का आनंद लें, क्योंकि ब्रजवासी आपको देखकर डर जाएंगे।

माँ यशोदा की विनती सुन शनिदेव तत्काल महल से बाहर जाकर रूदन करते हुए अपने आराध्य देव कृष्ण से मन ही मन प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु! आपकी लीलाओं का आनंद लेने के लिए ऋषि मण्डल, देव मण्डल, सभी लता-पुष्प आदि के रूप में प्रकट हो गये हैं। वे सब गोप-गोपियाँ बनकर आपकी लीलाओं का आनंद ले रहे हैं। किंतु मुझे अकारण ही इस लाभ से वंचित होना पड़ रहा है। आपको तो यह भली-भांति मालूम है कि मैं अपनी ओर से किसी को कोई कष्ट नहीं देता। सभी अपने कर्मों का ही फल भोगते हैं। किंतु जीवों के निज कृत कर्मों का फल भोगवाने की वजह से मेरे माथे पर ऐसा कलंक लग गया है कि लोग मुझे देखना भी पसंद नहीं करते। उसी का फल है कि आज माता यशोदा ने मुझे महल से बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। के करुणानिधान! मैं आपकी आज्ञा से ही जीवों को उनके कर्मानुसार भयानक दंड देता हूँ। लेकिन ये लोग अपने आपको बुरा न कहकर, उल्टे मुझे ही बुरा कहते हैं। मेरा क्या होगा, प्रभु मुझ पर कृपा करें। मैं आपका आज्ञाकारी पुत्र हूँ, मुझ पर दया करें।

ऐसी विनती करते हुए शनिदेव करुण-क्रंदन करने लगे। उनके करुण-क्रंदन को सुन कृष्ण भगवान प्रकट हुए और बोले- शनिदेव, मैं

तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मेरी आज्ञा के अनुसार कोकिला वन में निवास करो। वहीं रहकर तुम मेरी सभी लीलाओं का आनन्द उठाओ। मैं स्वयं तुम्हें आनन्दित करने कोकिला वन आऊँगा। वहीं पर तुम्हें मेरी आह्लादिनी शक्ति श्री राधिका जी के साक्षात दर्शन होंगे। कलियुग आने पर लोग उस कोकिला वन की परिक्रमा व पूजा करेंगे और मेरी कृपा से वे शनि ग्रह पीड़ा से मुक्त हो जायेंगे।

तभी से कोकिला वन में सैकड़ों किलोमीटर से लोग शनि दर्शन के लिए आते हैं और सिद्ध मनोरथ हो अपने घर वापस लौटते हैं।

वहाँ शनिदेव के बीज मंत्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' का पाठ करते हुए 24 परिक्रमा करनी चाहिए। फिर शनि की प्रतिमा पर श्रद्धापूर्वक तेल व फल-फूल आदि चढ़ाना चाहिए। वहाँ छाया-पात्र का दान भी अवश्य करना चाहिए। साथ ही, काले कपड़े में काले तिल व उड़द बाँधकर डकौत को दान देना चाहिए। सवा पाँच किलो चने शुक्रवार को भिगोयें व शनिवार को तेल, नमक, मिर्च का छौंक लगाकर लोगों में हलवा मिलाकर बाँट देने से भी शनिदेव प्रसन्न होते हैं व कष्टों से मुक्ति दिलाते हैं।

ॐ

दीनन को रोटी खिला, रोगी की कर सेव।
नाना भाँति भोग सभी, देंगे तुझे शनिदेव॥

शनि यंत्र धारण करो, उत्तम दिन शनिवार।
मिट जाये पीड़ा सभी, होवे बेड़ा पार॥

शनि शिंगणापुर

महाराष्ट्र में शनिदेव के अनेक मंदिर व सिद्ध स्थान हैं, जहाँ जाकर लोग शनि की कृपा से विविध विघ्न बाधाओं से छुटकारा पाते हैं। लेकिन शिंगणापुर का सिद्ध शनि पीठ सबसे अद्‌भुत व चमत्कारी है। वहाँ शनिदेव की स्वयंभू शिला प्रतिष्ठित है, जिसके दर्शनों व पूजा अर्चना से लोग विगत डेढ़ शतक से लाभान्वित होते आ रहे हैं। उससे पहले लोगों को इस स्वयंभू शनि शिला की जानकारी नहीं थी।

कहते हैं करीब 150 वर्ष पहले शिंगणापुर गाँव के पूर्व में स्थित एक नाले में भयंकर बाढ़ आई थी, जिसमें एक बहुत बड़ा काला पत्थर कहीं से बहकर आया और एक बेर के पेड़ के सहारे रूक गया। नाले को स्थानीय भाषा में वहाँ पनशाला कहते हैं। बाढ़ समाप्त होने पर तत्कालीन लोगों ने पानस नाले के किनारे एक बेर के पेड़ के पास एक काली शिला को देखा तो बड़े चकित हुए। कुछ चरवाहों ने उत्सुकतावश उस शिला पर डंडे से प्रहार किया तो उससे खून निकल गया। पत्थर से खून बहता देख चरवाहे दौड़ कर गाँव में गये और यह खबर बिजली की तरह पूरे इलाके में फैल गई। लोग दिन भर तर्क-वितर्क करते रहे कि यह अद्‌भुत शिला क्या है? इसमें ऐसी कौन-सी दैवी-शक्ति है जिसकी वजह से इस शिला में भी सजीव प्राणियों की तरह रक्त का संचार हो रहा है। अब इस शिला का क्या किया जाये? कहीं इसे उपेक्षित छोड़ देने से इस इलाके को किसी दैवी-प्रकोप का सामना न करना पड़ जाये। लेकिन लोग किसी निर्णय पर पहुँच नहीं पाये।

रात में शनिदेव ने एक भक्त को स्वप्न में आदेश दिया कि वह शिला जिसे तुमने पनशाले में देखा है, वह कोई सामान्य शिला नहीं, बल्कि मुझ शनिदेव की स्वयंभू शिला है। तुमको मेरा आदेश है कि उस शिला की विधिवत स्थापना कर पूजा-अर्चना करो, जिससे तुम्हारे कल्याण के साथ-साथ असंख्य लोगों का भी कल्याण होगा।

दूसरे दिन भक्त के कहने पर लोग बड़ी तत्परता से वहाँ बैलगाड़ी

लेकर पहुँचे ताकि एक नियत स्थान पर ले जाकर उस अद्भुत शिला की स्थापना की जा सके। किंतु पचासों व्यक्तियों ने मिलकर उसे उठाने की कोशिश की, किंतु शिला टस से मस नहीं हुई। दूसरी रात में अपने भक्त को स्वप्न में शनिदेव ने अपनी शिला को उठाकर ले जाने की युक्ति बताते हुए कहा– यदि शिला को मामा-भांजा मिलकर उठायें और काले बैलों वाली गाड़ी में रखें तो बड़ी आसानी से उस शिला को पानस नाले से निकालकर उपयुक्त स्थान पर ले जाया जा सकता है। दूसरे दिन ऐसा ही किया गया। लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा, केवल दो व्यक्तियों (मामा-भांजे) ने शनि शिला को उठाकर बैलगाड़ी पर रख दिया। इस घटना से इस स्वयंभू शनि शिला की महिमा चारों तरफ फैल गई।

कहते हैं, शनिदेव की स्वयंभू शिला से लदी गाड़ी अचानक एक स्थान पर रूक गई और लाख कोशिश करने पर भी आगे नहीं बढ़ी। यानि शनिदेव ने अपने लिए वही स्थान पसंद किया। अत: उसी स्थान पर उस स्वयंभू शिला की विधिवत स्थापना कर शनिदेव की पूजा-अर्चना प्रारंभ कर दी गई, जो अब तक जारी है। शनिदेव अपने इस स्वयंभू शिला पर कोई मंदिर या छत्र रखना पसंद नहीं करते। अत: स्वयंभू शनि शिला खुले आसमान के नीचे मौजूद है। शनि कृपा से पूरे शिंगणापुर में किसी भी व्यक्ति के घर में किवाड़ नहीं लगाया जाता और न उस गांव में कोई चोरी ही करता है। शनिदेव की कृपा से सब आनन्द से है। जो भक्त श्रद्धा से यहाँ शनिदेव का पूजन करता है, उसकी सारी कामनाएँ पूरी होती हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों की भीड़ बराबर लगी रहती है।

शिंगणापुर में विराजमान स्वयंभू शनि शिला के दर्शनों के लिए जाते समय निम्नांकित नियमों का पालन जरूरी है–

1. दर्शनार्थी अपने सिर पर टोपी या पगड़ी न रखें।
2. जो स्त्रियाँ रजस्वला हों अथवा जिन व्यक्तियों के घर में सूतक हो, वे

दर्शनों के लिए न जायें।

3. बिना स्नान किये दर्शन करना मना है।

4. शिला के दर्शन-पूजन के लिए स्त्रियों का चबूतरे पर जाना मना है।

5. पुरुष भी शनि शिला के दर्शन-पूजन के लिए शनि वाले चबूतरे पर स्नानोपरांत गीले वस्त्रों में ही जायें।

शिंगणापुर में शनि पूजन के लिए निम्नलिखित सामग्रियाँ साथ ले जानी चाहिएं-

1. काला वस्त्र, 2. सरसों का तेल, 3. प्रसाद, 4. आक पुष्प माला, 5. नारियल, 6. लोहे की नाल।

उक्त सामग्रियाँ साथ लेकर गये दर्शनार्थी शनिदेव को तेल चढ़ाते हैं और काला वस्त्र अर्पण करने के उपरांत माला व प्रसाद चढ़ाते हैं। फिर नारियल व घोड़े की नाल शनिदेव के चरणों से स्पर्श कराकर अपने कल्याण की कामना करते हुए चबूतरे से नीचे आ नारियल फोड़ते हैं और अपने हाथों में नाल लिए हुए शनि परिसर की परिक्रमा करते हैं। नाल को घर ले जाकर उसकी पूजा करते हैं और उसे पूजा वाले स्थान पर रख उसे नित्यप्रति धूप-बत्ती दिखाते हैं। ऐसा करने वाले भक्तों के सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों का तांता बराबर ही लगा रहता है।

पत्थर की काली शिला, घर में रखो धाय।
प्रभु रूप दरसन करो, सभी कष्ट कट जाय।।

जो जीमावें चीटियाँ, आटा देय खिलाय।
मन से भी सुमिरण करे, सुख सम्पत्ति मिल जाय।।

लेकर पहुँचे ताकि एक नियत स्थान पर ले जाकर उस अद्भुत शिला की स्थापना की जा सके। किंतु पचासों व्यक्तियों ने मिलकर उसे उठाने की कोशिश की, किंतु शिला टस से मस नहीं हुई। दूसरी रात में अपने भक्त को स्वप्न में शनिदेव ने अपनी शिला को उठाकर ले जाने की युक्ति बताते हुए कहा– यदि शिला को मामा-भांजा मिलकर उठायें और काले बैलों वाली गाड़ी में रखें तो बड़ी आसानी से उस शिला को पानस नाले से निकालकर उपयुक्त स्थान पर ले जाया जा सकता है। दूसरे दिन ऐसा ही किया गया। लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा, केवल दो व्यक्तियों (मामा-भांजे) ने शनि शिला को उठाकर बैलगाड़ी पर रख दिया। इस घटना से इस स्वयंभू शनि शिला की महिमा चारों तरफ फैल गई।

कहते हैं, शनिदेव की स्वयंभू शिला से लदी गाड़ी अचानक एक स्थान पर रुक गई और लाख कोशिश करने पर भी आगे नहीं बढ़ी। यानि शनिदेव ने अपने लिए वही स्थान पसंद किया। अत: उसी स्थान पर उस स्वयंभू शिला की विधिवत स्थापना कर शनिदेव की पूजा-अर्चना प्रारंभ कर दी गई, जो अब तक जारी है। शनिदेव अपने इस स्वयंभू शिला पर कोई मंदिर या छत्र रखना पसंद नहीं करते। अत: स्वयंभू शनि शिला खुले आसमान के नीचे मौजूद है। शनि कृपा से पूरे शिंगणापुर में किसी भी व्यक्ति के घर में किवाड़ नहीं लगाया जाता और न उस गांव में कोई चोरी ही करता है। शनिदेव की कृपा से सब आनन्द से है। जो भक्त श्रद्धा से यहाँ शनिदेव का पूजन करता है, उसकी सारी कामनाएँ पूरी होती हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों की भीड़ बराबर लगी रहती है।

शिंगणापुर में विराजमान स्वयंभू शनि शिला के दर्शनों के लिए जाते समय निम्नांकित नियमों का पालन जरूरी है–

1. दर्शनार्थी अपने सिर पर टोपी या पगड़ी न रखें।
2. जो स्त्रियाँ रजस्वला हों अथवा जिन व्यक्तियों के घर में सूतक हो, वे

दर्शनों के लिए न जायें।

3. बिना स्नान किये दर्शन करना मना है।

4. शिला के दर्शन-पूजन के लिए स्त्रियों का चबूतरे पर जाना मना है।

5. पुरुष भी शनि शिला के दर्शन-पूजन के लिए शनि वाले चबूतरे पर स्नानोपरांत गीले वस्त्रों में ही जायें।

शिंगणापुर में शनि पूजन के लिए निम्नलिखित सामग्रियाँ साथ ले जानी चाहिएं—

1. काला वस्त्र, 2. सरसों का तेल, 3. प्रसाद, 4. आक पुष्प माला, 5. नारियल, 6. लोहे की नाल।

उक्त सामग्रियाँ साथ लेकर गये दर्शनार्थी शनिदेव को तेल चढ़ाते हैं और काला वस्त्र अर्पण करने के उपरांत माला व प्रसाद चढ़ाते हैं। फिर नारियल व घोड़े की नाल शनिदेव के चरणों से स्पर्श कराकर अपने कल्याण की कामना करते हुए चबूतरे से नीचे आ नारियल फोड़ते हैं और अपने हाथों में नाल लिए हुए शनि परिसर की परिक्रमा करते हैं। नाल को घर ले जाकर उसकी पूजा करते हैं और उसे पूजा वाले स्थान पर रख उसे नित्यप्रति धूप-बत्ती दिखाते हैं। ऐसा करने वाले भक्तों के सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों का तांता बराबर ही लगा रहता है।

पत्थर की काली शिला, घर में रखो धाय।
प्रभु रूप दरसन करो, सभी कष्ट कट जाय॥
जो जीमावें चीटियाँ, आटा देय खिलाय।
मन से भी सुमिरण करे, सुख सम्पत्ति मिल जाय॥

पूजा से पहले

विनियोग

अपसर्पन्त्विति मन्त्रस्य वाम देव ऋषिः, शिवो देवता अनुष्टुप छन्दः, भूतादिविघ्नोत्सादने विनियोगः।

भूतोत्सादन मंत्र

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतलेस्थिताः
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

देव ध्यान (गणपति व गुरू ध्यान करें)।

आसन पवित्र करने का विनियोग एवं मंत्र

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसन पवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।

जपादि में सहायक नियम

1. सदा पूर्वाभिमुख व उत्तराभिमुख होकर जप करना चाहिये।
2. सामने ईष्ट मूर्ति व तस्वीर होनी चाहिए।
3. आसन ऊनी हो और केवल बैठकर जप करने के लिये हो।
4. माला स्वच्छ हो, सभी दाने समान हों।
5. धूप, अगरबत्ती व घी का तेल का दीपक जप समय जलायें रखें।
6. ईष्ट चिन्तन चरण से शीश तक करते रहें।
7. मन्त्रार्थ चिन्तन हो (न्यास विधि ठीक से करें)।
8. मन्त्र के दोनों ओर प्रणव रहने से मंत्र काल और बाह्य वायु से प्रभावित नहीं होता।
9. हितकारी, श्रद्धावान, माता-पिता व गुरूजन से आशीर्वाद लेना चाहिए।

10. सदैव उपांशु और मानस जप करना चाहिए।
11. श्रद्धा व विश्वास की तीव्रता सफलता प्रदान करती है। दीर्घकालीन फल अल्पकाल में फल प्रदान करता है।
12. अन्य देवों में भेदबुद्धि न हो, ईष्ट कृपा लाभ में बाधक है। सभी देवों को नमन कर अपने ईष्ट चिंतन में संलग्न रहें, सब देवों में ईष्ट दर्शन करें।
13. ध्यान रखें, जो दृढ़विश्वासी हैं, उनके मन में ऐसा संकल्प आते ही कि मूर्ति या तस्वीर चेतन है, उसका आधार निर्मल होने लगता है और अदृष्ट चेतन प्रकट हो जाता है। तब वह चेतन का व्यवहार करने लगता है। चलना, बोलना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। (यह बात सर्वप्रसिद्ध है कि रामकृष्ण परमहंस माँ काली की मूर्ति से बात किया करते थे।) जो सत्य व विश्वासी हैं भक्त, योगी, दानी उनके लिए असम्भव कुछ भी नहीं है।
14. जब शिष्य गुरूमुख से मंत्र सुनते हैं तब यह शिष्य के कानों में प्रविष्ट होकर हृदयक्षेत्र में चला जाता है। मन्त्र बीजस्वरूप होने पर चित्त शक्ति से अनुप्राणित है। जो शिष्य द्वारा किये गये जप से पालित व अंकुरित होकर शिष्य की मनोभूमि का आश्रय लेता है। दीर्घजपोपरान्त सिद्धि प्रदान करता है। क्षण (समय) मात्रा का ख्याल रखते हुए नियमित जप करना चाहिए।
15. मंत्र, जप, ध्यान व ईष्ट सिद्धि श्रद्धा व विश्वास का विषय है। तीव्र संवेग व वैराग्य ईष्ट चिंतन आदि तत्व प्राप्ति का अत्युत्तम साधन है। यह सब सूक्ष्म विषय है। मेरे ईष्ट रवि व छाया के सुपुत्र तथा यमाग्रज शनिदेव भगवान हैं। (यम ने नचिकेता को आत्मज्ञान प्रदान किया- कठोपनिषद्) शनिदेव नियमाधीन हैं, उनकी क्षमता अतुल्य है, वे कर्मफल प्रदान करने वाले हैं। भक्तों को पुरुषार्थ के सभी साधन प्रदान करने वाले हैं। उनकी कृपा अहंकारहीन होने से ही प्राप्त होती है।

शनि आरती

आरती शनि बलकारी की कीजै, श्री नीलाम्बर धारी की कीजै।
मुक्तन माला जाके गल सोहे, शीश मुकुट सब जन मन मोहे॥
वलय कंकण शोभित प्रभु तोहे, जयति जय दुःख परिहारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

एक कर गदा, एक कर भाला, नववाहन है एक एक आला।
तिस पर रंग प्रभु जी काला, अधोदृष्ट असुरारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

विक्रम राजा अति ही दुःख पाया, तेली के घर कोल्हू चलाया।
स्वपन में दर्शन प्रभु दिखलाया, करमन फल दातारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

ना भेदूँ रोहिणी ये माना, अवधपति को दिया वरदाना।
करवाया जग में सम्माना, दशरथ नृप भयहारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

शिंगणापुर में वास है तेरा, जग में बड़ा इतिहास है तेरा।
लगता मेला खास है तेरा, कलियुग के पतवारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

ब्रज पहुँचे रवि छाया जाये, दरश श्याम का ना कर पाये।
कोकिलावन में जाय पधराय, कृष्ण छवि बलिहारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

'मनु' गुण तेरे सदा ही गाऊँ, शीश चरण से तेरे लगाऊँ।
हर पल दाता तुम्हें ही ध्याऊँ, भगत लज्जा रखवारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

सब संकट के टारी की कीजै, अपा काल रखवारी की कीजै।
दुष्टन पे भए भारी की कीजै, भक्तन पे दिल वारी की कीजै॥
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

श्री शनिदेवजी की आरती

जय जय श्री शनिदेव, भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु, छाया महतारी। जय.....
श्याम अंक, वक्र दृष्टि, चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी। जय.....
क्रीट मुकुट शीश सजत दीपत है लिलारी।
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी। जय.....
मोदक मिष्ठान पान चढ़त है सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी। जय.....
देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण है तुम्हारी। जय......

न्यायधीश बड़े सख्त शनि, भगतन को सुखकार।
ज्यों गन्ने की डाँड है, पौर पौर रसदार॥
सकल जगत जाति सभी, जाने शनि प्रभाव।
बिन शनि पूजन के रहे, सुख सम्पत्ति अभाव॥

नीलद्युति आभा तेरी, शंकर सदृश रूप।
नमन तुम्हें शनिदेव है, हे कालाग्नि स्वरूप॥
रक्षक हों शनिदेव जी, संकट कटे समूल।
शनि संकीर्तन कीजिये, जीवन हो अनुकूल॥

शनि छन्द

पत्थर की काली शिला, घर में रखो धाय।
प्रभु रूप दरसन करो, सभी कष्ट कट जाय।।

जो जींमावें चींटियाँ, आटा देय खिलाय।
मन से भी सुमिरण करे, सुख सम्पत्ति मिल जाय।।

शनिवार उपवास करे, पूजे शिव भगवान।
शत्रु पर विजय पाये वो, हर विधि हो कल्याण।।

वस्त्र काले रंग का, या फिर काली गाय।
शनि दिवस को दान करें, ग्रह दशा का उपाय।।

पीपल में प्रभु वास है, जो जल दे शनिवार।
उस पर देव दया करें, नाव लगावे पार।।

नाव की लौह कील से, ले छल्ला बनवाय।
अंगुली में धारण करे, यह भी परम उपाय।।

दीनन और अपंग को, भोजन देवे कराय।
शनी दया उस पर पड़े, सुख सम्पत्ति मिल जाय।।

दान करे मन चित्त से, और लगावे ध्यान।
शनि दया से भक्त वो, पावे मुक्ती ज्ञान।।

शनि स्तोत्र का जाप करे, सुबह दोपहरी शाम।
और सुने चित्त लाय के, प्राप्ति विजया काम।।

दीनन को रोटी खिला, रोगी की कर सेव।
नाना भाँति भोग सभी, देंगे तुझे शनिदेव।।

शनि यंत्र धारण करो, उत्तम दिन शनिवार।
मिट जाये पीड़ा सभी, होवे बेड़ा पार।।

भजन

बेखौफ हो जा, शनि शरण में आकर के बेखौफ हो जा।
बेखौफ हो जा, शनि चरण अपनाकर के बेखौफ हो जा।।
पतित को भी शनि पावन कर दे, जीवन को मन भावन कर दे।
नक्षत्र भार तेरे मिटा दे सारे, पाप कर्म तेरे जला दे सारे।
तुझको कुंदन बना कर के।। बेखौफ हो जा.......
मुक्ति पथ की राह तू पावे, भवसागर से पार लगा वे।
स्वर्ग लगे तुझे दुनिया सारी, काट दे देवा हर बीमारी।।
प्रेम का चंदन लगा कर के।। बेखौफ हो जा.......
नाम शनि का प्यारे सुमर के, चरणों की रज मस्तक धर के।
शुद्ध तेल से उन्हें नहलाकर, गल फूलों का हार चढ़ाकर।।
खुश कर वन्दन गाकर के।। बेखौफ हो जा.......

भजन

रस्ता पाप का जो ले, तेरी दाल ना गले।
तेरी दाल ना गले, तेरी एक ना चले।।
पाप पुण्य की ना जुगती भाई, लम्बी सही पुण्य की राही।
पलड़ा जिसका भारी भइया, मिलती वैसी कर्म कमाई।।
पुण्य कहलाते भले, तेरी एक ना चले।।
पीछे संचित पाप किए थे, आशीष कम थे श्राप लिये थे।
रोते-रोते जिसको भोगे, दोष सभी किस्मत को दिए थे।।
नैया डगमग होए हिले, तेरी एक ना चले।।
शनि शरण में आ जा भाई, हो जावे तेरी मनचाही।
पुण्य होए उजागर तेरे, लूटे जग में रह वाहवाही।।
न्याय कर्म का करे इकले, तेरी एक ना चले।।

गजब कर डाला

गजब कर डाला अजब कर डाला।
हे छाया के लाला पिला के प्रेम प्याला।।

खामोश हो गया हूँ, मदहोश हो गया हूँ।
बेहोश हो गया हूँ, सब जोश खो गया हूँ।
लीला तेरी निराली, तेरा रूप है निराला।।

तेरे नाम का दीवाना, मैं हो गया हूँ माना।
क्या तूने नहीं जाना, जग से हुआ बेगाना।
अब बन गया फसाना, सुन ले हे दीनदयाला।।

सूरज में नूर तेरा, चंदा में नूर तेरा।
हर शै मैं तुझको देखूँ, क्या है कसूर मेरा।
मेरा राम भी तू ही है, तू ही है बंशी वाला।।

हस्ती मेरी है तुझसे, बस्ती मेरी है तुझसे।
भव पार हो रहेगी, कश्ती मेरी ये तुझसे।
माशूक तू मेरा है, आशिक मैं भोला-भाला।।

आदत मेरी निराली, खिदमत मेरी निराली।
उल्फत मेरी निराली, तेरे दर का 'मनु' सवाली।
तूने ही प्राण बख्शा, तूने ही मुझको पाला।।

तज विषय शनिदेव का, पूजन करे त्रिकाल।
शनिदेव दाता करें, जीवन जीव निहाल।।
शनि अनन्त महिमा अनन्त, अनन्त कलि का काल।
सर्व जन उद्धार हित, जाग्रत शनि तत्काल।।

शनि भजन गा ले

शनि भजन गा ले जो कालों के भी काल हैं।
शनि कृपा पा ले कर देते मालामाल हैं।।
साधु संत गावें दिन राती, दुःख में सुख में भए शनि साथी।
पीड़ पड़े दौड़े आ जावें, दुष्टों की ना पार बसाती।
मिट जावें सब नाले, छूटें सभी जंजाल हैं।।
भव सागर के बन के खिवैया, पार करेंगे तेरी नैया।
मोह माया का काट दे फंदा, जन्म सफल हो तेरा भैया।
जो जपते संकट टालें, तारे पापी चण्डाल हैं।।
मात-पिता संग दुनिया सारी, कहें तुम्हें उत्तम संसारी।
शरण शनि पा बन जाये कंचन, हस्ती तेरी होवे न्यारी।
'मनु' नाम शनि गा ले, सदा बने भक्त की ढाल हैं।

तू ही माता पिता मेरा बहन तू भैया है।
मैं सुदामा हूँ तेरा तू मेरा कन्हैया है।
तू ही भगतों की लाज का शनि रखैया है।
तू ही गरीबों के भण्डार का भरैया है।
बड़े-बड़े पापियों के पाप का छुड़ैया है।
'मनु' मन रात दिन लेता तेरी बलैया है।।

शनि से मन भय उपजे, सुन प्राणी नादान।
शनी देव दाता करें, करमन फल प्रदान।।
सब देवों में हैं बड़े, कृष्ण वर्ण शनिराज।
जो नर ध्यावे नित्य ही, पूरण करते काज।।

प्रेम जिसने शनि का कमाया

प्रेम जिसने शनि का कमाया,
बीच दुनिया के सब कुछ है पाया।
शीश चरणों में जिसने झुकाया,
भर के झोली वो दर से है लाया।
ख्वाहिशें पूरी हो तेरे मन की,
बदली छँट जाये वृथा भ्रम की।
शरण आ जा शनि की तू प्यारे,
उसने लाखों का संकट मिटाया।
हैं बड़े ही गजब कलि के देवा,
पाया उसने है जिसने की सेवा।
जिसने रो-रो के दुखड़ा सुनाया,
काम उसका तुरत ही बनाया।
यूँ ना नाहक ही जीवन लुटाना,
नाम जग में है तूने कमाना।
नाथ अपना के 'मनु' ने पुकारा,
उसकी नैया को पार लगाया।

तुम्हीं विश्व रूप मैंने देव जी ये पाया है।
तुम्हीं में कृष्ण शिव सूर्य समाया है।
सभी दुष्टों को तुमने काल बन डराया है।
'मनु' भक्तों की तुमने लाज को बचाया है।

शनि प्रेम का जो दीवाना

शनि प्रेम का जो दीवाना हुआ है।
चर्चा-ए-आम उसका फसाना हुआ है।
व्यर्थ लगती उसको ये दुनियादारी।
मोह लोभ से मन बेगाना हुआ है।
शनि शनि बोल, शनि शनि बोल।
शनि नाम है बड़ा अनमोल, बोल शनि बोल बोल शनि बोल।
अपने हृदय के पट खोल, बोल शनि बोल बोल शनि बोल।।
शनि नाम है सबसे निराला।
खोले किस्मत का तेरी ताला।
क्या लागे है तेरा मोल, अपने हृदय के पट खोल।
तुझ पर सौ जुल्मों सितम हो जायें।
पाप तेरे बढ़ जायें, पुण्य कम हो जायें।
नाम लेने से मिले शरण शनिदेव की।
मिटे जीवन का तम तेरे गम खत्म हो जायें।
अपने मन को वीणा बना ले।
शनि नाम स्वर तार चढ़ा ले।
ना इस जग जंगल में डोल, अपने हृदय के पट खोल।
दुर्लभ मानुष तन मिला पारस सम अनमोल।
शनि नाम पावन करें, स्वांस स्वांस पे बोल।
नर तन का श्रृंगार यही है।
रवि सुत को स्वीकार यही है।
ये तुझको संजीवन घोल, अपने हृदय के पट खोल।

शनि देव के द्वार

शनिदेव के द्वार लागी भक्तों भीड़ अपार मुझे भी जाना है।
मन में भर शनि प्यार जग के नाते सभी बिसार,
शनि गुण गाना है।।
अधोदृष्ट वाले हैं, रंग के ये काले हैं,
भैंसे की सवारी है।
धीमी-धीमी चाल है, घुंघराले बाल हैं,
अखियाँ अनारी हैं।
मिलकर पूजे नर-नार, डाले गल फूलों का हार।
नवाते जो माथ हैं, हर पल साथ हैं।
शनि देव प्यारे जी।
हजारों हाथ हैं, दुष्टों को रात हैं।
भक्त को उजारे जी।
नहीं लाते हैं वार, हर लेते हैं सारा भार।
कहता जमाना है।
विक्रम पे किरपा कर, देके दशरथ को वर,
किया कल्याण है।
मदन महाराज का, बजरंग की लाज का तूने रखा मान है।
तेरी 'मनु' शरण न्यौछार, दे दो दाता थोड़ा प्यार।
दर्शन पाना है।।

ले चल रे प्यारे

ले चल रे प्यारे बालमा, मंदिर में कोकिला।
शनि दर्शन से, उनके भजन से, हमको है सब कुछ मिला।
ले चल री सजनी ओ मेरी, मंदिर में कोकिला।
तेल चढ़ाकर भोग लगाकर, जीवन का ले गुल खिला।
मंदिर में चल के रवि कुंड में नहायेंगे।
जोत जला के प्यारी मस्ती में गायेंगे।
शीश झुकाकर आशीष पाकर मिट जाये सारा गिला।
अहसां ये मुझपे तेरा होगा ओ प्यारी।
शनि अनुराग की जो जावे चढ़ खुमारी।
दुनियादारी झूठी सारी, गम का दे जहर पिला।
झोलियाँ भर दी उनकी, जो भी दर आये हैं।
बन के दयालु शनि ने कष्ट उठाये हैं।
दर है निराला सबसे ही आला हो सबका फैंसला।

शनिदेव बलकारी, गिद्ध तेरी है सवारी।
रूप चतुर्भुज धारी, अति ही विशाल है।
सूर्यदेव पिता तेरे छाया तेरी महतारी।
महिमा देवों में न्यारी, करते निहाल हैं।
तेल अभिषेक करें, लौह प्रतिमा पे थारी।
मोदक चढ़ावें, चढ़ें उड़द की दाल है।
भगतन हितकारी, सुमिरत नर-नारी।
नीलाम्बर धारी 'मनु', कालों के भी काल हैं।

शनि नाम तेरा

शनि नाम तेरा परम धाम का द्वारा।
जपता हूँ प्रभु आठों याम, मैं सगरा काम बिसारा।

सुना सदा से जो भी तेरा भजन हैं गाते।
तेरे नाम की मस्ती में ही वो मदमाते।
छोड़ दुरंगी तेरे ही रंग में रँगराते।
तेरे भिन्न-भिन्न रूपों का शनि दर्शन पाते।

तेरा पूजन सकल विपद को टार देवे।
काम क्रोध और लोभ को दाता मार देवे।
अपने भक्त को लगा हिय से प्यार देवे।
थाम के अंगुली नैया कर भव पार देवे।

काम लिया है केवल तुमको ही रिझाना।
धरूँ ध्यान चरणों का तेरे गाऊँ गाना।
जग में तेरे भक्त 'मनु' का शुमार होवे।
तेरे सहारे भव से नैया पार होवे।

ॐ

करते मंगल कामना, साधक तेरे द्वार।
भर झोली ले जाते हैं, मिलकर के नर नार॥
दास भावना मन रखे, सेव करे दिन रात।
सब साधन जग में मिले, मिले शनी का साथ॥

शनि के चरणों में

शनि के चरणों में झुकता है संसार।
नाथ मेरे कलियुग में सबको हैं सुखकार।।

शनि जयकारे लगा प्रेम से शनि मस्ती में झूमें।
हनुमत दर्शन कर के भाई परिकरमा में घूमें।
दर्शन करने आये दूर से पंडित साहूकार।।

भीड़ भई भक्तन की भारी, शनि अमावस आई।
संग में लेकर उड़द तेल तिल, दीपक ज्योति लाई।
कोकिला वन की शोभा न्यारी, जलते दीप हजार।।

शनि पताका हाथ में लेकर, साधु जन गुण गावें।
शनि कृपा मिल जाती सबको, अष्ट सिद्धियाँ पावें।
शनि देव-सा ना कोई जग में, दूजा परम उदार।।

कोकिला वन में आये शनि ने कान्हा दर्शन पाये।
जान के उनको परम तपस्वी बनखण्डी हरषाये।
'मनु' शनि गुण गाकर प्यारे, उतरो भव से पार।।

महिमा बड़ी शनिदेव की, सब सुख क्षण में देत।
रक्षक बन शनिदेव जी, संकट सब हर लेत।।
विनती जो शनि से करे, कातर सम सुग्रीव।
आँधी तूफाँ में कभी, उखड़ ना पावै नींव।।

शनि प्रेम को मन में

शनि प्रेम को मन में बसाकर, दरबार शनि के आकर।
बन जा तू शनि का चाकर, प्यारे शनि कृपा को पाकर।
तेरे कारज संवारे भरकर भण्डारे, बैठे बन में कोकिला।
करेंगे तुझपे दया बना के अपना सदा।
गफलत की भारी नींद में, मन मूढ़ था जो सो रहा।
मानव तन अनमोल है, इसे बाँवरे क्यों खो रहा।
माया बड़ा तूफान है, दज्जाल भारी है बड़ा।
शरण ले शनिराज की गलफंद ले अभी छुड़ा।
तेरे करे वारे-न्यारे दे के साधन, सहारे बैठे बन में कोकिला।
करेंगे तुझपे दया, बनाके अपना सदा।
परिकरमा शनि धाम की, नर-नारी करते रोज हैं।
मल-मल नहलाते देव को, देते उड़द का भोज हैं।
लौह पात्र कर में धार के, सरसों का तेल डाल के।
दीप जला पूजन करें, तेल चढ़ा शनि भाल पे।
जो भी शरणा सिधारे, शनि दुःख से उबारे।
बैठे बन में कोकिला, करेंगे तुझपे दया, बना के अपना सदा।
मत सोच आजा द्वार पे नहीं झूठ सत्य है यहाँ।
शनि चरण हिरदय धार ले बेकार फिरता है कहाँ।
फैली शनि की कीर्ति, योगी बड़े निराले हैं।
जाग्रत कलि के देव हैं, रंग के शनि जी काले हैं।
जीवन से जो हारे उन्हें भवपार तारे।
बैठे बन में कोकिला, करेंगे तुझपे दया, बना के अपना सदा।

बेखबर मुझसे शनि क्यों

बेखबर मुझसे शनि क्यों बेखबर।

द्वार पे तेरे कब से पड़ा हूँ डालो दया की नजर।
वेदन हृदय बस गया मेरे, छाए तन पर कष्ट घनेरे।
चारों तरफ से शत्रु घेरे, ठगते मुझको साँझ सवेरे।
जन्मों का भटका शरण में आया, दिखला दो मुझको डगर।
राह निहार के अखियाँ हारी, लगे प्रतिक्षा विषम कटारी।
महिमा तेरी सुनी है भारी, छाया सुत अब कर उजियारी।
लाखों शरण में तेरी आकर, तर गए भवसागर।
अधम दीन के तुम हो सहारे, सब भक्तन के तुम रखवारे।
रोम-रोम 'मनु' ये ही पुकारे, पाऊँ शनि मैं दरस तुम्हारे।
दीन जान मुझे अपना बना लो शनि मेरे बनकर।

सब दुख भगतों के, पल में हरण करे।
छायासुत शनिदेव, प्रभु जी निराले हैं।
खाली लेके झोलियाँ जो, तेरे दर आए प्रभु।
अन्न-धन-पुत्र सब पाते मतवाले हैं।
तेल अभिषेक करें, लौह प्रतिमा पे तेरी।
दीनन को दान करें, काटे दुख जाले हैं।
करता जो कीरतन, चौरासी का फंद काटे।
'मनु' घट उजाला करे, शनिदेव काले हैं।

तेरा व्रत करूँ शनिवार

तेरा व्रत करूँ शनिवार कोकिला वन वाले।
धारे चतुर्भुज रूप निराला, भैंसे पे हो गये सवार।

जो भी आते दर पे तेरे।
मिट जाते हैं कष्ट घनेरे।
देवें पदार्थ चार..... कोकिला वन वाले।।

कोकिला वन के देव निराले।
करें भक्तों के घर में उजाले।
शरणा दें करे उपकार..... कोकिला वन वाले।।

कुंड में नहाकर तेल चढ़ाऊँ।
तिल उड़द का भोग लगाऊँ।
डालूँ गल फूलों का हार..... कोकिला वन वाले।।

पेट पलनिया परिक्रमा कर।
नाम तेरा जिभ्या से गाकर।
चरणों में करूँ पुकार..... कोकिला वन वाले।।

'मनु' भरता झोलियाँ तू सबकी।
बारी मेरी आई अबकी।
पुत्र का दे दे अधिकार..... कोकिला वन वाले।।

रखे टेक शनिदेव जी, तारे भव से पार।
चौरासी के फेर से, कर देवे उद्धार।।
कर्म किए जाए मना, सकल ग्रह फल देत।
शुभ कर्मी सुख पावे हैं, शनि पूजन से चेत।।

कोकिला वन में

कोकिला वन में लगा है मेला, शनिदेव जी के द्वारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥
भीड़ भई भगतन की भारी, मुख से ये ही उचारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥
करें लाखों शनि सेवा, भरे भण्डार देवा।
शनि जी भेद न जाने, सभी को अपना माने।
यहाँ की बात निराली, न खाली जाये सवाली।
शनि गुणगान गाकर, शनि की कृपा पाली।
पूजन करते बड़े मजे से, गाते भजन तुम्हारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥
यहाँ आनन्द निराला, पहुँचे किस्मत वाला।
सभी ग्रंथों में लिखा, रहे यहाँ ग्वाल गोपाला।
रवि का कुंड यहाँ पर, मिटेंगे कष्ट नहाकर।
तेल शनि को चढ़ाओ, शनि की आरती गाकर।
डाल के सब पे कृपा दृष्टि, कर देंगे उजियारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥
गुनाह जो रोज करते, समझते मौज करते।
दशा जब आये शनि की, पाप के भोग भरते।
सम्भल आखिर में जाते, शनि की कृपा पाते।
फिर नंगे पैरों चल के, शनि के दर पे आते।
लाल बना गोदी में बैठा ले, बन करके हितकारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥
हुनर ये है शनि का, असर ये है शनि का।
कोकिला वन अनोखा, घर ये है शनि का।

यहाँ हर ओर मस्ती, यहाँ संतों की बस्ती।
यहाँ पर मुक्ति मिलती, यहाँ कृपा बरसती।
'मनु' पाप को भुगता करके, जीवन शनि सुधारे।
बोलो जयकारे सब बोलो जयकारे॥

बुला लो शनि दाता

बुला लो शनि दाता दर पे बुला लो।
चरणों का अपने मुझको सेवक बना लो।
लाखों हैं अरमां दिल में कैसे निकालूँ।
मंजिल मेरी तू, तुझको कैसे मैं पालूँ।
हृदय में मेरे सुन्दर मंदिर बना लो॥
फीकी लगे ये दुनिया कुछ भी न भावे।
पूजे ये मन तुझको और को न ध्यावे।
शरण में अपनी लेके बन्धन छुड़ा लो॥
मैं हूँ विकारी शनि जी तुम अविकारे।
रसना मेरी ये केवल तुमको पुकारे।
अवगुण सभी मेरे तन से निकालो॥
हृदय में तेरा दर्शन जिस पल पाऊँ।
होकर के तन्मय अपनी सुध बिसराऊँ।
कृपा की दृष्टि ऐसी 'मनु' पर भी डालो॥

शनि जिसने भी तुमको

शनि जिसने भी तुमको पुकारा।
उसके जीवन को तुमने सँवारा।
जिसने हृदय में तुमको निहारा।
तेरे दर्शन का पाया इजारा।
जय शनि देव शनिदेव जय जय देव।।

उल्फत के तेरी दीवाने, तुमको सदा से वो जाने।
भगतों के तुमने ओ दाता, कर डाले जीवन सुहाने।
जिसने तुमको बनाया सहारा,
हुआ चरणों का तेरे दुलारा।।

संकट से तुम हो बचाते, पावन शनि जी बनाते।
कर्मों का फल तुम दिलाते, कृपा की हाला पिलाते।
दर पे बहती दया की है धारा।
ना ही तुम-सा कलि में उदारा।।

दशरथ के कारज सँवारे, भय से वो तुमने उबारे।
जन-जन को सुख पहुँचाया, कोकिला वन में जब से पधारे।
किया विकरम का ऊँचा सितारा।
'मनु' दे दो हमें सुख अपारा।।

लीला श्री शनिदेव की, अद्‌भुत और विचित्र।
कलियुग में कल्याण करे, बनकर 'मनु' के मित्र।।
मंगल जो शनि पूजते, धार हिय विश्वास।
शनी सकल भय हर करें, पूरण मन की आश।।

शनिदेव जी का द्वारा

शनिदेव जी का द्वारा, झुके जाके जग सारा।
जयकार लगे शनि नाम की, बड़ी धूम मची शनिधाम की।

अमीर गरीब आये आये हैं भिखारी।
जोर से जय बोल रहे देव जी तुम्हारी।
कर दे मालामाल, चंगा होवे तेरा हाल।
कुछ ना होवे फिकर अंजाम की॥

पापियों के पाप सारे पल में निवार दे।
बन पतवार तुझे कर भव पार दे।
जादू है निराला, शनिदेव मतवाला।
बैठा शोभा बढ़ाये ब्रजधाम की॥

नाम की महिमा तेरी गूँजे संसार में।
दीपक जलावें सभी घर शनिवार में।
जिसे जग ने ठुकराया, उसे देते हैं सहारा।
लगा सेज देवे आराम की॥

चरण तुम्हारे प्रभु अधम का शीश हैं।
तू ही मेरा संसार, तू ही मेरा ईश है।
नहीं देर लगाओ, चाहे जैसे भी निवाहो।
सेवा सफल करो 'मनु' चाम की।

तेरा चर्चा बड़ा

तेरा चर्चा बड़ा, मैंने सबसे सुना।
तेरे दर आ गया, मेरी बिगड़ी बना।।

तेल संग मैं ले आया हूँ, मल के तुझको नहलाऊँगा।
कील लोहे की मैं दाता, तेरे पैरों चढ़ाऊँगा।
तिल के लड्डू बने मीठे, तुझे भोग लगाऊँगा।
दाल उड़द की साबुत शनि, धूप-दीप जलाऊँगा।।

आक पुष्पों की माला बनी, गल तेरे पहनाऊँगा।
देव दरबार तेरा सदा, फूलों से सजाऊँगा।
भैंसे की सवारी है, भगतों का भयहारी है।
तू शिव अवतारी है, कोकिला वन विहारी हैं।।

कलियुग पतवारी हैं, शनि न्यायाधिकारी हैं।
अधमों का उद्धारी हैं, तेरी लट घुँघराली है।
मस्तक बड़ा भारी है, नीलाम्बर धारी है।
'मनु' भजन करे तेरा, मिलकर संसारी हैं।।

फरियाद मेरी सुनकर, नावाजिश वो डाल दें।
तो मेरे दीवाने दिल को, करार आ जाये।
बहते हैं नजरों से जो अश्क तेरा नाम लेकर।
उन अश्कों में हीरों-सा निखार आ जाये।।

जग हरषे तेरे दर

जग हरषे तेरे दर आकर के जग हरषे।
शनि जी के दर का नजारा अनोखा।
खाली जाये नहीं नर-नार शनि दर से।। जग हरषे.....।।
देते हैं दौलत शनि जी निराली।
भर जाये घर-संसार धन बरसे।। जग हरषे.....।।
दीनों की आके करेगा जो सेवा।
बढ़े शनि का प्यार उस नर से।। जग हरषे.....।।
उल्फत में शनि की मजा है निराला।
मिट जावे सारी रार तेरे सर से।। जग हरषे.....।।

ऐसी लागी प्रीत तोसे छाया सुत शनिदेव।
जिधर भी देखूँ, तेरा रूप नजर आवे है।
सूझे नाहीं कुछ और तेरा एक नाम प्रभु।
सारा संसार मुझको पागल बतावे है।
नैन मेरे नीर भरे, सबकी तू पीर हरे।
मेरी बारी आई शनि, देरी क्यों लावे है।
भगती का दान देओ, कृपा कर नाथ जी।
हर क्षण 'मनु' प्रभु, तुमको ही ध्यावे है।।

रवि छाया ने लाल का, नाम रखा शनिदेव।
करमन फल को देत हैं, कष्टों के हर लेव।।
रूप चतुर्भुज धारे हैं, निराकार साकार।
उनका बेड़ा पार है, जिन्हें शनि से प्यार।।

मन को शनि में

मन को शनि में रमाते चलो। जीवन कलिका खिलाते चलो।।
मानुष जीवन सफल होवे। पुण्य कर्म तुम कमाते चलो।।

जाति-पाति का भेद न जाने, कर दें सभी को निर्मल।
मन हो जाये काबू तेरे, मिट जाये सब हलचल।।
दुखड़े शनि को सुनाते चलो।।

मुरझाये मन पुष्पों के गुलशन, खिल जाते शनि दर पे।
नूर प्रेम का दिल में भर दें, हाथ रखें तेरे सर पे।
भेद सभी से मिटाते चलो।।

दिल हो फिदा दिलदार शनि पर, मुक्ति लाभ मिल जाये।
मानुष जन्म सफल हो जाये, कश्ती साहिल पाये।
प्यार की मंजिल पाते चलो।।

नेक निगाहों नेक हो लक्ष्य, आदर दर शनि तेरा।
'मनु' मिट जाये तेरा प्राणी, चौरासी का फेरा।
शनि के प्रेमी कहाते चलो।।

शनिदेव नर, हर पल सुमिर, कलिकाल बड़ दुखदाइ है।
मिटता अविद्या जाल जिन, शनि चरनन्हि लौ लाइ है।।
मंदिर शनि के जाय जो, शनि अमृत वाणी गावते।
हो पूर्ण 'मनु' मन कामना, अरू मुक्ति पद को पावतै।।

मुद्दत से आते हैं

मुद्दत से आते हैं, दर पे दीवाने। लेके फसाने उनके बहाने।
नाचने गाने और सुनने सुनाने। लेके फसाने उनके बहाने॥

सबकी निराली कहानियाँ, सुनते देवा हैं,
भय हर लेवा हैं, त्रिशूलधारी।

मुश्किल में जो जिंदगानियाँ, पाते मेवा हैं,
करते जो सेवा हैं, बड़े न्यायकारी।
विश्वास पूरे हो जो मन में ठाने॥

फल देते सबको किए का, अभय वर देते हैं,
भय हर लेते हैं, छाया के लाला।

नाम तू शनि का लिए जा, जो भी नर लेते हैं,
दुःख हर लेते हैं, संकट के टाला।
देंगे शनि तुझको भक्ति खजाने।

तेरी दया का भिखारी, न विद्या न बल हो,
दीन हो पागल हो, तेरा सदा है।

कहलाता तेरा पुजारी, सुरतिया अचल हो,
उसका तू कायल हो, तेरी अदा है।
'मनु' भक्त उनका, वो तेरे मस्ताने।

मन ये बोलेगा

मन ये बोलेगा, दिल ये बोलेगा।
नाम सुमिर ले, शनि का पा ले, सोये भाग जगा ले।
बड़ी है महिमा भारी, दुविधा मिटती सारी।
दर्शन पाके हरषे, मिलकर के नर-नारी।
रीति पूजा कुछ ना जाने, स्वाँस-स्वाँस पे गा ले।
स्वाँस गंग में सब पापों को खुद ही धो लेगा।।
अर्ज तेरी सुन लेगा, वो योगी है ज्ञानी।
झोलियाँ भर देता है, बड़ा ही है दानी।
सुखमय कर ले सारा जीवन, शनि शरण में आ।
शनि कृपा से मन ये तेरा फिर ना डोलेगा।
है करूणा सागर ऐसा, दुख नदिया पी लेगा।
रार हर खत्म होगी, तू दो दिन जी लेगा।
अंत समय में शनि सुमिरण से, धाम शनि के जा।
नाम जपन से तेरा मुक्ति द्वार खोलेगा।

लगन लगी शनिदेव से, मिटे द्वैत अज्ञान।
अभय रहे जीवन सदा, मूरख बीच सुजान।।
करिये शनि संकीर्तन, पाइये कृपा खास।
स्वाति बूँद चातक लिये, मिट जाती है प्यास।।

शनि धाम में भगतों

शनि धाम में भगतों चलो चलें।
शनि धाम में भगतों चलें।

नहीं लगते ज्यादा दाम दाम, कल्याण करे शनि नाम धाम।
बिगड़े बन जाते काम काम, नक्षत्र भार सब ढले-ढले॥
ये छाया के हैं लाल-लाल, घुँघर वाले हैं बाल-बाल।
बन जाते दुख में ढाल-ढाल, जग न्याय करें ये ही इकले॥
श्याम रंग है रवि के प्यारे, सब भक्तों का कष्ट निवारें।
करते भव से हैं पार-पार, हर लेते हैं सब भार-भार।
मिट जाती सारी रार-रार, पथ कंटक सारे टलें-टलें॥
अजब अनोखे हैं शनि देवा, दशरथ नृप के भय हर लेवा।
राखा जग में था मान-मान, बख्शे नर-नारी प्राण-प्राण॥
कलियुग में ऊँची शान-शान, कर देते कारज भले-भले।
राजा विक्रम अति दुख पाया, तेली के घर कोल्हू चलाया॥
अंत आया तेरी शरण-शरण, धरे ध्यान तेरे प्रभु चरण-चरण।
छूटा दुनिया से जन्म मरण, सब पाप कर्म थे जले-जले॥
जिसने पूजा उसने पाया, भरी है झोली जो दर पे आया।
दिन दुःख के जाते बदल-बदल, खुशियाँ आती हैं मचल-मचल।
ये धाम बड़ा है अटल-अटल, 'मनु' भक्त जगत में फूले-फले।

हैं जब से मेरे शनिदेव

हैं जब से मेरे शनिदेव दिल में समाने लगे।
तमन्नाएँ जागी नींदें हैं भागी, हम गुनगुनाने लगे।
दिल में समाने लगे.....
मन मंदिर हुआ मेरा, रसना भी करे सुमिरण।
हर धड़कन शनि बोले, काया भी हुई कंचन।
रह रह के लेता हूँ सिसकी, रह रह के लेता हूँ सिसकी।
आँसू इन आँखों के ढल ढल जाने लगे।
तेरा नाम लेकर, ये पैगाम देकर, मुझको सताने लगे।
दिल में समाने लगे.....
उलझन है बढ़ जाती, बन प्राणों की घाती।
बेचैनी और सदाएँ, मिलके हैं गम खाती।
वादे पे अपने अटल हूँ, वादे पे अपने अटल हूँ।
दीदार पाने में क्यों मुझको जमाने लगे।
हो गम भी तराना मिट जाये दीवाना, तुमको ही ध्याने लगे।
दिल में समाने लगे.....
तेरे विरह की अग्नि, मेरे दिल में जलती जाती।
दिल में तो तुम रहते, क्यों तुमको ना जलाती।
हैरां हूँ इस बात से भी, हैरां हूँ इस बात से भी।
जलते हुए शोले 'मनु' दिल को जलाने लगे।
हैं साँसें भी रूकतीं, पलकें भी झुकतीं।
कदम डगमगाने लगे, दिल में समाने लगे।

और इस जग में किसको पूजूँ

और इस जग में किसको पूजूँ, तू ही मेरा दातार शनि जी।
तेरी शरण में हो गया आके सपन मेरा साकार शनि जी॥

अधम की नैया को, बचा के तूफाँ से।
खिवैया बनकर के, किनारा दिखलाया।

जगत ये धोखा है, लुटेरों का घर है।
ये मैली चादर है, ये तूने समझाया, ये तूने समझाया।
जब से मुख से शनि कहा, मन हो गया है पावन।
पावन मन से बना के तेरे डालूँ गले में हार शनि जी।

भरा था पापों से, जो गट्ठर मेरा था।
करी कृपा मुझपे, वो तूने भुगताया।
छूटे साथी संगी जो मेरे अपने थे,
भ्रम थे सपने थे, ये तूने दिखलाया।

जीवन का मेरे तुम पर है भार शनि देवा, भार शनिदेवा।
भार वो तुमने उठा के मेरा, कर दिया बेड़ा पार शनि जी।
अजब पतवारी है, महिमा भारी है, कर्मफल भुगताये, भगत उद्धारी है।
भजन तेरा सबको सहारा देता है, दुख हर लेता है, दुष्ट संहारी है।
'मनु' नाम रस पीने से ही ताप हरे देवा, ताप हरे देवा।
ताप पाप से तुझको उबारे, कलियुग के अवतार शनि जी।

चले जो शनि जी के दर

चले जो शनि जी के दर, होगा वो ही बेखबर।
तू जप ले तू जप ले, शनिदेव अगर॥
नाम लेगा शनि जो जहाँ में, होगा निर्भय वो इस आशियाँ में।
पंछियों की तरह तू उड़ेगा, पर्वतों की डगर तू चलेगा।
कर्ज तेरा उतर जाये सारा, लक्ष्य तेरा हो देवा का द्वारा।
ख्वाहिशें पूरी हो तेरे दिल की, ना हो तुझको तड़फ साहिल की।
दीन हो चाहें कोई भिखारी, ज्ञानवान हो चाहे पुजारी।
प्रेम भक्ति से उसको पुकारे, दूर हो जायेंगे दुख सारे।
मन लगा ले शनि के भजन में, साथ देंगे तेरा जीवन में।
'मनु' हो जायेगा जो दीवाना, फिर सदा गायेगा तू तराना॥

पल पल देऊँ दिलासा

पल पल देऊँ दिलासा हिय को। पल पल देऊँ दिलासा।
उम्र गुजारी सोवत सोवत। जागे जब हुए पचासा।
मन काला ज्यों रजनी कारी। काम क्रोध का निवासा।
संत वचन तब प्यारे लागे। हो गयो पूरन नासा।
आया दुख पा शनि शरण में। बन दासन को दासा।
फिर भी चित्त चंचल माया में। क्यों कर हो प्रकाशा।
देव बड़े तुम सब देवन ते। करो पूरण अभिलाषा।
पूजा जप तप नेम न जानूँ। चरण तेरे की आशा॥

मन भजे दिन रैन

मन भजे दिन रैन, शनि जय शनि जय

शनि जय जय जय जय।

इससे मिले मुझको चैन, शनि जय शनि जय

शनि जय जय जय जय॥

पल पल छिन छिन, भज के तेरा नाम मुझे मालूम हुआ।
कितना खोया मैंने जीवन, अब तक क्यों महरूम रहा।

तू मेरा था सदा, क्यों रहा मैं जुदा।

अब बोले ये रसना शनि जय जय जय॥

ना जानूँ मैं कौन-सा पुण्य इतने दिनों के बाद मिला।
जग उपवन में डोल रहा था, डगर सत्य की पे ना चला।

तेरे धाम आ गया, सत्य पथ पा गया।

सदा आनन्द मनाऊँ शनि जय जय जय॥

श्रद्धा से शनि जय का जप मैं, जीवन में करता रहूँ।
पुण्य सदा इस तन से होवे, पापों से डरता रहूँ।

मस्ती में तेरी, आदत हो मेरी,

'मनु' स्वाँसों पे गाऊँ शनि जय जय जय॥

तिल उड़द लौह तेल चढ़ाऊँ, मन रंजन गाथा तव गाऊँ।
बुद्धि मन प्राणों से सेवा, करूँ सदैव नियम से देवा।
जोरी जुगल कर शनि मनाऊँ, विकरम सम किरपा पा जाऊँ।
हो अति प्रसन्न कष्ट मिटाओ, किरपा भक्तों पर बरसाओ।

शनिदेव तुम्हारी जय

शनिदेव तुम्हारी जय होवे, हे देव तुम्हारी जय होवे।
तुम पल भर में भर देते हो, प्रभु खाली झोली भक्तों की।
हो रोज दीवाली भक्तों की, निर्मल हो सुख निदियाँ सोवे।
महापातक और पापकर्म, प्रभु देवें मिटा केवल क्षण में।
रहे राग प्रेम तन और मन में, लालच की रोटी ना पोवें।।
चल सत्य कर्म की डगर सदा, हो निर्भय ना रह खौफजदा।
तू कर नर तन का हक अदा, कर शनि भजन तेरा दुख धोवे।।
जो आ जाये दरबार तेरे, 'मनु' भर जाये भण्डार उसके।
करे तुझको सुखी सरकार शनि, फिर पाना हो कुछ ना खोवे।।

ब्रह्मा ऋषि तारागण डोले सभी वन वन।
दृष्टि जब भी श्री शनिदेव ने उठाई है।
पर्वत को तृण कर तृणहु को पर्वत।
करत राजा को रंक, सकल बिकाई है।
अभिमानियों का मान चूर हुआ पल-पल।
भगतन को प्रभु जी सदा ही सहाई है।
जब धारे राशि पर पग शनिदेव प्रभु।
अंग भंग भए 'मनु' मृत्यु तक आई है।।

शनिदेव मेरे शनिदेव

शनिदेव मेरे शनिदेव मेरे।
मैंने दर पे तेरे डेरा डाला, मुझे शरण में ले लो।
हे रवि के लाला।।

सन्त सभा देखी मैंने नाम तेरा गाती।
तेरा नाम ही था उनको जीवन की थाती।
मिलकर के सारे साथी प्रिये प्रेम की हाला।।

दौड़ते जाते भक्त तेरे परिक्रमा की छोर।
ॐ शं शनैश्चराय नमः गाते सभी किशोर।
हो सन्ध्या चाहे भोर दिखता है उजाला।।

कृष्ण कुंड और राधा कुंड के सभी दीवाने।
प्रेम अग्न में घूम रहे बनकर परवाने।
तेरी मस्ती के मस्तानों का तूने संकट टाला।।

कृष्ण वरन और नील वरन शनिदेव।
कालाग्नि स्वरूप दाता, तुम्हें नमस्कार है।।
दुर्भिक्ष कारक प्रभु अति रुद्र रूप तेरा।
मन्दगते सूर्यसुत, तुम्हें नमस्कार है।।
अग्नि समान शनि, योग में मग्न भए।
पल माँही प्रलय करें, तुम्हें नमस्कार है।।
स्थूल बाल वाले शनि, भैंसे पे सवार भए।
दण्डवत 'मनु' करे, तुम्हें नमस्कार है।।

काला है काला होये

काला है काला होये काला देव निराला।
जग का भला करें, भक्तों का भय हर डाला।।
जग का भला करें।।
गौर वर्ण हैं पिता तेरे और माता छाया काली।
काले तेरे चेहरे पर लट लटकी घुँघर वाली।
तुझको प्यारी लगती काली रात बड़ी मतवाली।
मैं पूजूँ काले को, रवि के लाले को।
भगतों के करे उजाला, जग का भला करें।
भक्त बने जिनके शनिदेव वो हैं काले कन्हैया।
काली दह पर कालिया के बने जो नाथ नथैया।
क्यों कर ना लूँ उस काले की बार-बार मैं बलईयाँ।
मैं पूजूँ काले को, रवि के लाले को।
जो लेकर कर में भाला, जग का भला करें।
उजले मन के रंग के काले, पूजे जो शनिदेवा।
जाति-पाति का भेद न जाने संकट के हर लेवा।
घर भर देते हैं उसका ही जो करते हैं सेवा।
मैं पूजूँ काले को, रवि के लाले को।
'मनु' पिला प्रेम की हाला, जग का भला करें।

शनि देव दरबार से, खाली जाय न कोय।
झोली भर दें सुख सभी, जो भगतन के होय।
शनि की कृपा का कभी, नहीं होता है अंत।
भजन करो शनिदेव का, मिल नर नारी संत।।

चल रे मेरे सजना

चल रे मेरे सजना शनिदेव के दरबार में।
शनिदेव के दर पे सैंया भीड़ लगी है भारी।
माँगे मनौती दर पे जाके दुखी हैं जो नर-नारी।
मंशा पूरण करते थणु गण सहस्त्र बाण के धारी।
सबक सिखाते उन दुष्टों को जो हैं अत्याचारी, जो हैं अत्याचारी।
फिर मैं क्या करूँ।।

सूरज कुंड में मैं भी नहाऊँ, मन का मैल छुड़ाऊँ।
प्यारी छवि श्री शनिदेव की, हृदय उसे बसाऊँ।
तेरी कसम मैं मेरे सैंया और ना कुछ भी चाहूँ।
इतना पाके मग्न प्रेम में नाचूँ तुझे नचाऊँ।।
फिर मैं क्या करूँ।।

दीन बन्धु हैं नाथ शनि जी कलियुग के उद्धारी।
बैठे संग बनखण्डी बाबा महापुरुष अवतारी।
रास रचाने कोकिलावन में आ गये कृष्ण मुरारी।
आ पहुँची सखियों के संग में श्री राधिका प्यारी।।
फिर मैं क्या करूँ।।

तेरी इस प्यारी जिद से हाँ गौरी मैं तो हारा।
शनिदेव का नाम जपूँगा मन में मैंने धारा।
दर्शन करने कोकिलावन ले चलूँगा तुझको तारा।
दिल में 'मनु' शनिदेव बसे अब समझा तेरा इशारा।।
चल मैं भी चलूँ।।

तरसूँ शनि तोरे दर्शन को

तरसूँ शनि तोरे दर्शन को।
प्यासी भू जो नभ के घन को॥
मनवा रोवे पल पल मेरा।
लाड़ली ज्यों ससुराल चलन को॥
भटकत भटकत चैन न पाऊँ।
नापूँ पग से बन उपवन को॥
रैन दिवस में नाहीं अन्तर।
जुग बीते मोहे हरसन को॥
ढह गया काजर अखियाँ कोरी।
अश्रु नहीं आवे बरसन को॥
'मनु' किए सब खोटे करमा।
नाव नहीं भव पार करन को॥

शनि मुख लखूँ दिवस अरू राति।
कोई नहीं तुम बिन या जग में दाता मेरा साथी।
शनि मुख लखूँ दिवस अरू राति॥
नेह निभावे जग के बन्दे। रख लालच की पाती।
तुम दीपक मैं बाती देवा। नाम तेल तेरा खाती।
खोई उमरिया माया मौज में। अब तक फिरूँ पछताती।
सेवा समर्पण चरण में तोरे। बनूँ शनिधाम की बराती।
हुआ अनोखा प्रेम नाम ते। नाम प्राण अरू थाती॥

शनिदेव मैं शरण तुम्हारी

शनिदेव मैं शरण तुम्हारी, बेड़ा पार करो उद्धारी।
सकल जगत है माया फंदा, गल फाँस छुड़ाओ विरद विचारी।
काम क्रोध मद लोभ सतावे, मार गिराओ बारी बारी।
बहु-कष्ट तन उपर छाए, इन्हें भगाओ बन उपकारी।
श्वाँस-श्वाँस तेरा गुण गाऊँ, 'मनु' कहाऊँ नाम प्रचारी।

चढ़ गई नाम खुमारी साधो, चढ़ गई नाम खुमारी रे।
बीच बजरिया शब्द सुने ना, खो गई मति हमारी रे।
जिभ्या गावे शनि शनि बस, हँसती दुनिया सारी रे।
का सो प्रेम किया रे भाई, नख सिख काया कारी रे।
सभी जनन को दुख पहुँचावे, बारह राशि भारी रे।
कलियुग माँही डंका बाजे, भए कलि अधिकारी रे।
कहाँ गया भय तुम्हरे चित्त से, रह गयो निपट अनारी रे।

रस्ता पाप को जो ले, तेरी दाल ना गले।

तेरी दाल ना गले, तेरी एक ना चले।
पाप पुण्य की ना जुगती भाई, लम्बी सही पुण्य की राही।
पलड़ा जिसका भारी भैया, मिलती वैसी कर्म कमाई।

पुण्य कहलाते भले॥
पीछे संचय पाप किए थे, अशिश कम थे शाप लिये थे।
रोते-रोते जिसको भोगे, दोष सभी किस्मत को दिए थे।

नैया डगमग होय हिले॥
शनि शरण में आ जा भाई, हो जावे तेरी मनचाही।
पुण्य होये उजागर तेरे, लूटे जग में रह वाहवाही।

न्याय कर्म का करें इकले॥

नर तन पाया जतन कर

नर तन पाया जतन कर, ऐसे जिससे तुझे भगवान मिलें।
ऐसी उत्तम योनि प्राणी, बुद्धि ज्ञान का भान मिले।।
या तो करम तू कर ले निराले, नेह राह चल पुण्य कमा ले।
हर शै में वो है करूणाकर, हर शै में ही वो जलवागर।
हो जा प्रेम दीवाना तू उसका, प्रेमी दया निधान मिले।।
काम क्रोध अज्ञान लोभ मद, मिलने ना दे ये मुक्ति पद।
ये माला का जाल निराला, ये विष प्याला हलाहल वाला।
श्वाँस रत्न को साध ले भाई, इस तन के दरम्यान मिले।।
यज्ञ जप तप साधन ये सारे, लेकर जाते हरि के द्वारे।
पतन नहीं उद्धार यही है, वेद पुराण का सार यही है।
'मनु' घट में आनन्द समाये, मन रंजन निर्माण मिले।।

ॐ

रोम रोम मेरा शनिदेव का भजन करे।
ऐसा वरदान मोहे दीजै हनुमान जी।।
काम क्रोध मद लोभ दूर से नमन करें।
ऐसा कल्याण मेरा कीजै हनुमान जी।।
मन क्रम वचन से रूह ये तपन करे।
ऐसा ज्ञान दान मोहे दीजो हनुमान जी।।
तज संसार चित्त शनि चिंतन करे।
ऐसा अवसान मेरा कीजै हनुमान जी।।

सुबह दोपहरी शाम

सुबह दोपहरी शाम। मुख से लूँ शनि नाम शनि नाम।।
सीताराम राधेश्याम सीताराम। मुख से लूँ तेरा नाम तेरा नाम।।

करूँ ऐसी कशिश पैदा, तड़फ हो जाये जो मुझको।
बहाना ना चले तेरा, दीदार हो जाये मुझको।
शनि नाम शनि नाम शनि नाम।।

बन फैय्याज करता राज मेरे दिल में मेरे हरदम।
ना कोई रंज सीने में, ना कोई पास रहा गम।
शनि नाम शनि नाम शनि नाम।।

हजार दिल में रहा तू ना किसी दिल में ऐसी मौज थी।
लाख गम में भी रहूँ खुश 'मनु' ये मेरी खोज थी।
शनि नाम शनि नाम शनि नाम।।

जब आता नहीं कुछ करना, तो अब क्या करना।
जब मरने तूने नहीं दिया, तो अब मरना क्या।।
ये तो गनीमत है तेरे नाम से रोशन है जहाँ।
जिऊँ उस रोशनी हर तौर, भव पार तरना क्या।।

खबर क्यों न लेंगे शनिदेव

खबर क्यों न लेंगे शनिदेव अब हमारी।
उन्हीं के लिए सारी दुनिया बिसारी॥

मैं सागर की धारा हूँ, वो है किनारा।
मिलता है चैन मुझको पाके सहारा।
चरणों के उनके हम भी होंगे निसारी॥

मैं चातक हूँ घन वो बारिश भरे हैं।
बरखा सदा सुख की वो करे हैं।
उन्हीं की दया से प्यास मिटेगी हमारी॥

पातकी हूँ मैं शनिदेव गंगा।
डुबकी लगा के अब होना है चंगा।
उजड़ा चमन मेरा होगा गुलजारी॥

माता-पिता हो तुम्हीं और हो सहोदर।
तुम ही हो प्राण मेरे तुम ही हो दिलबर।
ब्रह्मा शिवा और विष्णु तुम ही मुरारी॥

अब मुझमें ना बाकी किसी तौर कसर है।
ए मेरे दाता ये सब मेरे ख्याल का असर है।
होकर के फना तुझमें अस्तित्व मिटे मेरा।
तुझमें ही गुजर है मेरी, तुझमें ही बसर है॥

इस कदर शनैश्चर

इस कदर शनैश्चर मुझ पर कृपा करो।
भवसागर में नैया को किनारा मिले।।
छोड़ जग के सभी काज आया हूँ मैं।
तेरे चरणों का मुझको सहारा मिले।।
सुन सुयश जग में दाता धाम आ गया।
तेरे हाथों में दामन हमारा मिले।।
देना मुझको वो साधन हे दीनों के दिल।
जिसके होने से तुम में घर हमारा मिले।।
मुक्ति बहुतों को तुमने दिलाई चलो।
जन्म सेवा को तेरी दोबारा मिले।।

जब ढूँढ़ने लगा तो कोई फर्क ना पाया।
तू दीवाना है काले श्याम का मुझ पर काले का सरमाया।
तू दीनों का है दाता, मैं दीनों का जाया।
हाँ ये मेरे गुनाहों का वजूद है सारा।
जिसके कारण तू जमाने में न्यायकारी कहलाया।।

करते मंगल कामना, साधक तेरे द्वार।
भर झोली ले जाते हैं, मिलकर के नर नार।।
दास भावना मन रखे, सेव करे दिन रात।
सब साधन जग में मिले, मिले शनी का साथ।।

धार लेवे मन में शनि

धार लेवे मन में शनि, सुमिरे आठों याम।
शत्रु पर विजय पाये वो, पूर्ण हो सब काम॥
पूर्ण हो सब काम, मोक्ष भी मिल जाता है।
जब यह हृदय केवल, शनि शनि शनि गाता है॥
कर्म जग के करता ना छोड़े नाम जपन को।
भौंरे की गुंजार गुंजाए, ज्यों पुहुपन को॥
दे तज माया जाल, किए जा जय जय जयकार।
मुक्ति ज्ञान मिल जाए 'मनु', शनि ले मन में धार॥

जय जय श्री शनिदेव, प्रभु घट कीजौ प्रकाश।
गुण गाऊँ तेरे सदा, मिटे जन्म की त्राश॥
मिटे जन्म की त्राश, जय जय शनिदेव बोलो।
नाम शक्ति को जगत मुदित माया से तोलो॥
जीवन होय सफल जय शनिदेव रटन से।
तर गये कितने 'मनु' पापी शनि शनि जपन से॥
मुमक्ष मिल जाये मोक्ष, भयभीत होये निरभय।
जब जिभ्या से बोला, जय शनि जय शनि शनि जय॥

पल पल देऊँ दिलासा

पल पल देऊँ दिलासा हिय को। पल पल देऊँ दिलासा।
उम्र गुजारी सोवत सोवत। जागे जब हुए पचासा।
मन काला ज्यों रजनी कारी। काम क्रोध का निवासा।
संत वचन तब प्यारे लागे। हो गयो पूरन नासा।
आया दुख पा शनि शरण में। बन दासन को दासा।
फिर भी चित्त चंचल माया में। क्यों कर हो प्रकाशा।
देव बड़े तुम सब देवन ते। करो पूरण अभिलाषा।
पूजा जप तप नेम न जानूँ। चरण तेरे की आशा।।

शनिदेव मैं सिमरूँ तोहे, भव से पार उतारो मोहे।
रोम रोम शनिदेव समाये, मिटे कभी ना मल मल धोए।
नैन गिराए नीर घनेरे, सकल सुशोभित वस्त्र भिगोए।
मन भौंरा तोरे कमल नयन से, कृपा रस किंह भाँति चुरोए।
'मनु' का चित्त किया है चोरी, तेरे चरणों में रहूँ छुपोए।

कृष्णा गऊँ प्रिय शनि देवा, कोकिल वन में करते सेवा।
तिल तेल अरू शनि अमावस, नाम प्रिय अति हैं शनि को दस।
शनी ग्रह के तुम हो स्वामी, जय शनिदेवा अन्तरयामी।
पावें कृपा सुमार्ग गामी, पार उतारे कलि के कामी।

दर्शन पा ले शनि का

दर्शन पा ले शनि का दर्शन पा ले।
कर ले तू सपने साकार प्यारे।
आ आ भी जा शनि द्वार प्यारे॥

झूठ पाप कपट से तुमने जीवन को बर्बाद किया है।
सुख खो डाला अपना सारा, भर तुमने अवसाद लिया है।
बोझ गमों का ले उतार प्यारे॥

संचय कर्मों के फल को भी, भुगत रहा है तू भाई।
साढ़े साती ढैय्या से तुझपे, भारी आफत है आई।
मन में शनि को ले धार प्यारे॥

वेदन ध्वनि हृदय गूँजे, पल-पल जीवन कलपावें।
शनि नाम औषध है भाई, तेरे हृदय घाव भरावे॥
कर लेंगे तुझको स्वीकार प्यारे॥

लालच मन के त्याग दे भाई, शनि शरण जो आते हैं।
नहला के देवा को तेल में, कृपा उनकी पाते हैं।
'मनु' कर देवें उद्धार प्यारे॥

तिल अन्न दान तिल जो करते, शनि संतुष्ट हो संकट हरते।
पीर तेल तिल दीपक हरता, तुष्टि शनी सम्मुख जबजरता।
ओमकार भज शिव को ध्यावे, शनि प्रसन्नता नर वह पावे।
मूर्ति मंदिर शनि प्रकाशा, पीपल ऊपर करें निवासा।

चलो संग मेरे हे

चलो संग मेरे हे प्यारी सखी।
जपो संग मेरे शनि जय शनि।।
कदम से कदम संग में मेरे मिला।
चले जा मिटा दे तू ये फासला।।
पहुँचे जो जल्दी हम वन कोकिला।
जिन्होंने जपे उनकी बिगड़ी बनी।।
परिक्रमा करती तू शनि को सुमर।
नहा ले पहुँचकर रवि कुंड पर।।
दे देंगे दाता तुझे लाखों वर।
तुझसे बड़ा ना हो कोई धनी।।
दीदार पाले तू मंदिर में चल।
चढ़ा तेल जीवन को कर ले सफल।।
वादे पे मेरे तू हो आ अटल।
पूरी तमन्ना हो तेरी जनी।।
दिल में तेरे होगा उनका जो घर।
लक्ष्य तेरा होगा शनि जी का डर।
देवें तुझे प्यारी मुक्ति का वर।
शनि नाम रस में 'मनु' रसना सनी।।

इन आँखों में बसाया

इन आँखों में बसाया तुमको।
बंद पलके की कैद कर डाला।
जलवा नुमायी तेरी मिल जाये उनको।
जो पी जायें तेरी दीदार-ए-हाला।
नैनों में तुझे कैद कर मैं पलके बंद कर लूँ।
कलियुग में दाता मेरा तुझसा नहीं है साथी।
रसना तुझे पुकारे हो भोर चाहे राती।
हो सामने तू मेरे शनि बातें चंद कर लूँ।
स्वभाव से हो योगी पर ईश हो निराले।
हे श्याम रंग वाले करते सदा उजाले।
उल्फत में तेरी जोश से बाँहों में तुझे भर लूँ।
करुणानिधान है तू हे नील वस्त्रधारी।
तेरी पुकार सुनकर चले आए थे मुरारी।
शनि धाम है निराला इस धाम में विचर लूँ।
दो०- दरस दिखाने साँवरे, आये कोकिला धाम।
छवि बसाकर नैन में, किया शनि ने प्रणाम।
श्रृंगार 'मनु' मेरा है प्रेम धन हमारा।
मिल जाये प्रेम तेरा हो जायेगा गुजारा।
मेरा आइना तुम्हीं हो, तुम्हें देख के सँवर लूँ।।

चलो संग मेरे हे

चलो संग मेरे हे प्यारी सखी।
जपो संग मेरे शनि जय शनि।।
कदम से कदम संग में मेरे मिला।
चले जा मिटा दे तू ये फासला।।
पहुँचे जो जल्दी हम वन कोकिला।
जिन्होंने जपे उनकी बिगड़ी बनी।।
परिक्रमा करती तू शनि को सुमर।
नहा ले पहुँचकर रवि कुंड पर।।
दे देंगे दाता तुझे लाखों वर।
तुझसे बड़ा ना हो कोई धनी।।
दीदार पाले तू मंदिर में चल।
चढ़ा तेल जीवन को कर ले सफल।।
वादे पे मेरे तू हो आ अटल।
पूरी तमन्ना हो तेरी जनी।।
दिल में तेरे होगा उनका जो घर।
लक्ष्य तेरा होगा शनि जी का डर।
देवें तुझे प्यारी मुक्ति का वर।
शनि नाम रस में 'मनु' रसना सनी।।

इन आँखों में बसाया

इन आँखों में बसाया तुमको।
बंद पलके की कैद कर डाला।
जलवा नुमायी तेरी मिल जाये उनको।
जो पी जायें तेरी दीदार-ए-हाला।
नैनों में तुझे कैद कर मैं पलके बंद कर लूँ।
कलियुग में दाता मेरा तुझसा नहीं है साथी।
रसना तुझे पुकारे हो भोर चाहे राती।
हो सामने तू मेरे शनि बातें चंद कर लूँ।
स्वभाव से हो योगी पर ईश हो निराले।
हे श्याम रंग वाले करते सदा उजाले।
उल्फत में तेरी जोश से बाँहों में तुझे भर लूँ।
करुणानिधान है तू हे नील वस्त्रधारी।
तेरी पुकार सुनकर चले आए थे मुरारी।
शनि धाम है निराला इस धाम में विचर लूँ।
दो०- दरस दिखाने साँवरे, आये कोकिला धाम।
छवि बसाकर नैन में, किया शनि ने प्रणाम।
श्रृंगार 'मनु' मेरा है प्रेम धन हमारा।
मिल जाये प्रेम तेरा हो जायेगा गुजारा।
मेरा आइना तुम्हीं हो, तुम्हें देख के सँवर लूँ।।

चलो संग मेरे हे

चलो संग मेरे हे प्यारी सखी।
जपो संग मेरे शनि जय शनि॥
कदम से कदम संग में मेरे मिला।
चले जा मिटा दे तू ये फासला॥
पहुँचे जो जल्दी हम वन कोकिला।
जिन्होंने जपे उनकी बिगड़ी बनी॥
परिक्रमा करती तू शनि को सुमर।
नहा ले पहुँचकर रवि कुंड पर॥
दे देंगे दाता तुझे लाखों वर।
तुझसे बड़ा ना हो कोई धनी॥
दीदार पाले तू मंदिर में चल।
चढ़ा तेल जीवन को कर ले सफल॥
वादे पे मेरे तू हो आ अटल।
पूरी तमन्ना हो तेरी जनी॥
दिल में तेरे होगा उनका जो घर।
लक्ष्य तेरा होगा शनि जी का डर।
देवें तुझे प्यारी मुक्ति का वर।
शनि नाम रस में 'मनु' रसना सनी॥

इन आँखों में बसाया

इन आँखों में बसाया तुमको।
बंद पलके की कैद कर डाला।
जलवा नुमायी तेरी मिल जाये उनको।
जो पी जायें तेरी दीदार-ए-हाला।
नैनों में तुझे कैद कर मैं पलके बंद कर लूँ।
कलियुग में दाता मेरा तुझसा नहीं है साथी।
रसना तुझे पुकारे हो भोर चाहे राती।
हो सामने तू मेरे शनि बातें चंद कर लूँ।
स्वभाव से हो योगी पर ईश हो निराले।
हे श्याम रंग वाले करते सदा उजाले।
उल्फत में तेरी जोश से बाँहों में तुझे भर लूँ।
करुणानिधान है तू हे नील वस्त्रधारी।
तेरी पुकार सुनकर चले आए थे मुरारी।
शनि धाम है निराला इस धाम में विचर लूँ।
दो०- दरस दिखाने साँवरे, आये कोकिला धाम।
छवि बसाकर नैन में, किया शनि ने प्रणाम।
श्रृंगार 'मनु' मेरा है प्रेम धन हमारा।
मिल जाये प्रेम तेरा हो जायेगा गुजारा।
मेरा आइना तुम्हीं हो, तुम्हें देख के सँवर लूँ॥

करूँ खिदमत शनि

करूँ खिदमत शनि सदा तेरी। ऐसी तकदीर अब बना मेरी।।
ना ही मोहताज कर जमाने का, लेती दुनियाँ मजा फसाने का।
जुबाँ पे मेरी हो तराना तेरा, तेरी रजा में हो रजा मेरी।।
मैं तो जाहिल हूँ मलाल इसका है, तू बता मुझे ख्याल किसका है।
तड़पूँ दिन रात सूरते माँही। इससे बढ़ के है क्या सजा मेरी।।
ना हूँ होशियार ना सोहबत वैसी, ना ही मीरा ना मोहब्बत वैसी।
तेरे दर पे सदा जबीसां हूँ। है कयामत से ये अदा मेरी।।
जमीं पे हर तरफ हैं पत्थर काले, तुझें उल्फत दिल में बो डाले।
हर घड़ी मेरी मौज में गुजरे। जिन्दगी हो 'मनु' जुदा मेरी।।

अब राखो मेरी लाज शनि

अब राखो मेरी लाज शनि।
दीनहीन अति मलिन कुमति मैं तुम दातार धनी।
जा दृष्टि से दुष्ट संहारे, भक्तों पे क्यों तनी।
बिगड़ी बनाते जो दर आते, मेरी क्यों ना बनी।
तुम दाता माता-पितु सजना, मैं प्रेमी भक्त सजनी।
सबकी व्यथा उन मुख सुन ले ओ, मेरी कहे रजनी।
जग में रहते जग के होकर, ज्यों हीरे की कणी।
हृदय विराजे एक सिंहासन उस पर आप शनि।।

पता:

'शनि धाम मनु भैया जी'
गुरुग्राम-फरूखनगर रोड,
सुल्तानपुर नेशनल पार्क
के सामने,
गुरुग्राम-122006
(हरियाणा)

लैंडमार्क:
साधराना मोड़ बस स्टैंड,
तिरुपति फार्म

शनि धाम में स्थित शनिदेव प्रतिमा

मनु भैया और उनकी सहभागिनी नीतू त्यागी

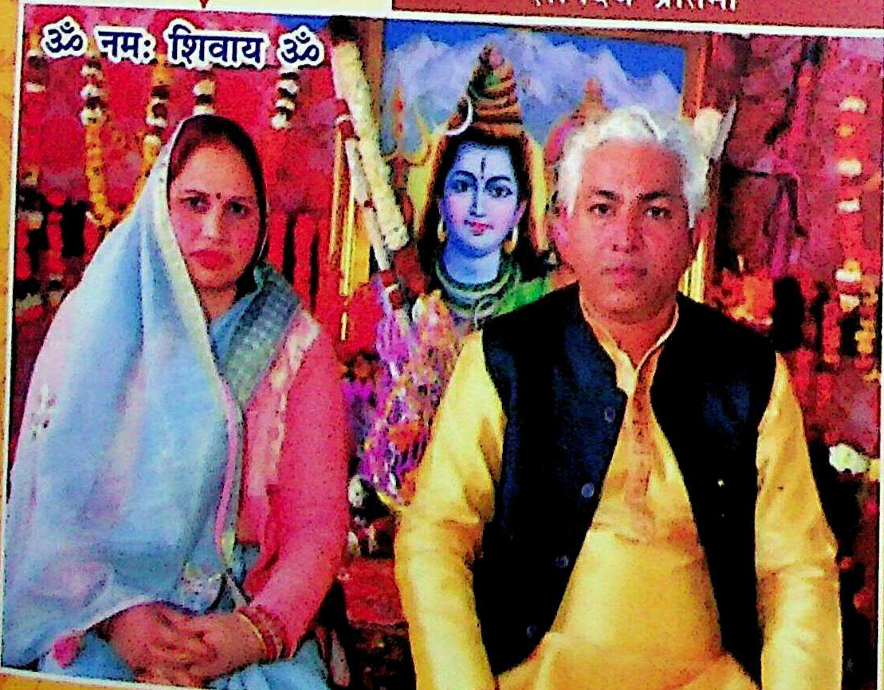

अतिसिद्ध स्तुति एवं स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह

पतंगा एक बार प्रकाश देखने पर फिर अंधकार में नहीं जाता। चींटी गुड़ में प्राण तक दे देती हैं परन्तु वहाँ से लौटती नहीं। इसी प्रकार भक्त एक बार प्रभु दर्शन का रसास्वादन कर लेते हैं, फिर उनके लिए प्राणों की आहुति तक दे देते हैं, लेकिन पीछे लौटकर नहीं देखते।

प्रथम बार निरन्तर कई महीनों की साधना के बाद 20-4-20[illegible] को (कोकिलावन वाले ब्रजक्षेत्र में शनि तीर्थ) शनि भगवान की तस्वीर की आँखों से दो किरणें मस्तिष्क में प्रविष्ट होकर काफी लम्बे समय तक कृपावृष्टि करती रहीं, उसके बाद निरंतर स्तुति लिखने का दौर आया, जिसमें शनि चालीसा, शनि शर, शनि शिंगणापुर साठिका, शनि प्रसन्नाष्टक, शनि रक्षा कवच, शनि अमृतवाणी व शनि व्रतवार कथा, शनि आरती, असंख्य भजन हिन्दी तथा संस्कृत में शनि भगवान की स्तुतियाँ रची गईं। साथ ही, अगस्त 2008 से शनि-कृपा से 'दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र' नामक मासिक राष्ट्रीय पत्रिका का सम्पादन मेरे द्वारा निरन्तर हो रहा है। उसी समय से शनिदेव की सतत कृपा प्राप्त हो रही है।

अगर मेरे इन हाथों ने उनके चरणों का स्पर्श किया है और इन स्थूल व सूक्ष्म नेत्रों ने शनैश्चर देव के दिव्य स्वरूप का रस पान किया है, कर्णों ने उनकी वाणी सुनी है तथा अगर वे मेरे हृदयासीन हैं तो वे रवि-छाया के सुपुत्र इन दिव्य स्तोत्रों के पाठ से आपको पूर्ण लाभ व कृपा प्रदान करें।

तंत्र मंत्र ज्योतिष शास्त्रादि बहुविध स्तोत्रविद् शनैश्चरानुचर शनैश्चर चरणामृतपिपासु, शनैश्चर चरण रज शिरोधारी, शनैश्चरांश, शनि भक्त 'मनु' भारद्वाज गोत्रोत्पन्नः त्यागी पण्डित प्रवरः गुरुवर्यः जन्म स्थान शिकारपुर ग्रामः नजफगढ़ नई दिल्ली दक्षिण पश्चिम क्षेत्रे।

— शनिभक्त मनु भैया

पताः 'शनि धाम मनु भैया जी' गुरुग्राम-फरूखनगर रोड,
सुल्तानपुर नेशनल पार्क के सामने, गुरुग्राम-122006 (हरियाणा)
लैंडमार्कः साधराना मोड़ बस स्टैंड, तिरुपति फार्म

RAMA PUBLICATIONS # ramapublications@gmail.com # 9313 55 3434